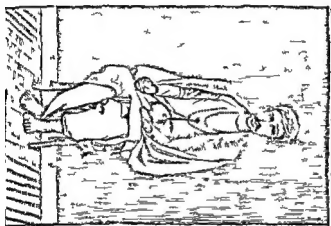


अथ-अन्त्येष्टि श्राद्ध प्रकाशः

(भाषाटीका सहितः)

मृचना.

महाशय. यद्यपि विवाह पद्धति भाषाटीकासहित अनेक जगह छपीहै परंतु किसीमें पाठ अधिकहै किसीमें न्यून और कोई देशभाषासे विरुद्धहै इस वास्ते हमने हमारे प्रियवर प. कृष्णलालजीके कहनेसे सरल हिंदी भाषामें यह चतुर्थी लाली नाम-टीकावनाईहै आर इसके छापनेका अधिकार प. कृष्णलालजीको दियाहै और यह ग्रथ परमोत्तम विद्यार्थियोंके पढ़नेमें आशा विद्वानोंके विवाह करणके योग्यहै इसमें कोईभीपाठ निरर्थक नहींहै शास्त्रीय रीतिसं तथा लौकिकरीतिसं सुशोभितहै सो जि-



पंडित चतुर्थीलालजी वैद्य

महाशयोंको लेना होवेवे. प श्रीधरशिवलालजीके पुस्तकालयसे मंगालेवे आर इसी तरह श्राद्धप्रकाश. ग्रथ. श्रीवेकटेश्वर प्रेसमें यत्रस्थहै. यह विस्तारपूर्वक अति उत्तमताके साथ अनेक प्रथोमें से सार लेके पूर्णकियाहै जिन महाशयोंके पासरहेगा उनको अति उपयोगी होगा. वहभी मने अति श्रमसे बनाया है विद्वद्वरोंने अवलोकन करके इसकी बहुत प्रसंसा की है सो यह ग्रथ छपरहा है सो ६ मासमें अर्थात् काती शुक्ल १५ स १९५५ तकछपके तैयार हो जायगा.

पं० चतुर्थीलाल वैद्य रतनगढ

विज्ञापनम् । (अवश्यदेखिये)

महाशय यह "अन्त्येष्टिकर्म" इसी यंत्रालयमें प्रथम छपा था. सो सब स्वप गया, फिर द्वितीयावृत्ति छापनेके विचारसे पंडित श्रीधर शिवलालात्मज श्रीकृष्णलालजीने हमको अति शुद्धतापूर्वक भापाटीका बनानेके अर्थ भेजी सो हमने प्रसन्नतासे अंगीकार करके मनोहर देश भाषा युक्त करी है । परंतु प्रथमावृत्तिमें मैथिल रुद्रघर कृत श्राद्धविवेकी पद्धतियां रक्खी गईथी सो गौड संप्रदायके योग्य नहीं होनेसे हमने अब प्राचीन पद्धति रक्खी है और श्राद्धविवेककी पद्धतियोंमें संप्रदाय तथा महानिबंधोंसे विरुद्धता है सो देखिये

१ प्रथमतो (शव) मुर्देको उलटा नीचेको मुख करके जलाना लिखा है सो क्या आपकी संप्रदाय है

२ दूसरे. मरण समयमें मृत्यु स्थान आदिका पंच पिंड देना नाहि लिखा सो क्या योग्य है .

३ तीसरे. दाहके अनंतर जलांजली मोटक रूप दर्भासे लिखा सो प्रमाण शून्य है (उक्तंच हेमाद्रि विष्णु वायुपुराण कारिका गारुडेयु सर्पिंडीकरण यावदृष्टुदर्भः पितृक्रिया सर्पिंडी करणादूर्ध्वं द्विगुणर्विधिवद्भवेदिति)

४ चौथे. अस्यसंचयनमित्तैकोद्दिष्टसमंत्रक लिखना (उक्तंच हेमाद्रि आदित्यपुराण गारुडेयु । तिलमिश्रेषुदर्भेषु कर्त्तव्येदक्षिणामखः । नामगोत्रप्रमाणेनदद्यात्पिंडं त्वमंत्रकं १ तूष्णीं धूपं प्रसेकंच दीपं पुष्पं तथैवच । अशुद्धस्त्रिषु वर्षेषु

इदं दद्यान्नसंशयः २)

५ पांचवें. प्रेतश्राद्धोंमें अस्मत्पितुः इत्यादि स्वसंबंध और पुरुषसूक्तादिजप, पृथिवीते इत्यादिपात्रालंभः, अंगुष्ठनिवेशन, उल्मुकभ्रामण, रेखाकरण, अग्निदग्धा इत्यादि बहुतसे कर्म लिखे हैं; परंतु शास्त्र विरुद्ध है (उक्तंच हेमाद्रि चिष्णु वायुपुराण निर्णयसिंधु गारुडेयु. आशिषोद्धिगुणादर्भाजपाशीः स्वस्तिवाचनं । पितृशब्दः स्वसंबंधः शर्मशब्दस्तथैव च १ आवाहः पात्रालंभश्च उल्मुको लेखनादिकं । वृषिप्रश्रश्चविकिरः शोषप्रश्रस्तथैव च २ प्रदक्षिणविसर्गश्च सीमांतगमनं तथा । अष्टादश पदार्थास्तु प्रेत श्राद्धेषुवर्जयेत् ३ इति)

६ छठे. वृषोत्सर्गमें वृषांक न कियासो क्या आपकी संप्रदायका है

७ सातवें. सर्पिडीकरण श्राद्धमें अर्घ्यपात्रमेलन किया सो रीति क्या कोई ग्रंथके प्रमाणसे है

८ आठवें. पिंडमेलनके अनंतर दक्षिणादान आदिमें प्रेत शब्द उच्चारण करना लिखा सो क्या योग्य है

इत्यादि बहुतसीवातें स्मृति, पुराण, सूत्र, हेमाद्रिप्रभृति महा निबंध और संप्रदाय विरुद्ध हैं अतएव हमने प्राचीन पद्धति “श्राद्धप्रकाश” नाम गौडनिबंधकी रक्ती है सो आपलोग देखके कृतार्थ करेंगे अलम्

आपका कृपाभिलाषी

पंडित वैद्य श्रीचतुर्थीलाल गौड रत्नगढ निवासी

राजश्री वीकानेर

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथ भाषाभाषार्थं लिख्यते ॥ प्रथम पुत्रपौत्र भाई आदि अपने पिता माता भाई दादे आदिका रोगआदिद्वारा मृत्युके बगहूया जाणके (पडब्डादि) अर्थात् छ वर्ष ६ या ३ या १॥वर्ष आदिके १८०।९०।४५। प्राजापत्यव्रतनिमित्त १०००० गायत्रीजप। या १००० गायत्री मंत्र करके तिलहोमः । धेनुदान । तीर्थयात्रा । अथवा एक २ व्रत-

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ श्राद्धप्रकाशान्तर्गतं प्रेततृप्तिकरपद्धतिकल्पमुच्यते । तत्रतावत् पुत्रादिरासन्नमृत्युपित्रादिकं ज्ञात्वापडब्डादिप्रायश्चित्तप्रत्याग्नाय गायत्र्यानुतजपं वा गायत्र्या तिलहोमसहस्रं धेनुदानं तीर्थयात्रा वा द्वादशब्राह्मणभोजनं सुवर्णरूप्ययोर्निष्कं तदर्द्धं वा गोवृषमूल्यं यथाशक्त्यनुरूपं प्रायश्चित्तं तद्वारा कारयेत् । तदऽशक्तौ स्वयं वा कुर्व्यात् । तद्यथा । गंगादितीर्थं गत्वा तत्र यथाविधि स्नात्वा शुद्धे शुक्रवाससी परिधाय बद्धशिल्बः

निमित्त १२ व्रतप्रण भोजन ॥ या ४०।२०।१०। मासासुवर्णं । रजत । या गौ वृषभरामोल अपनी शक्तिके मुजब संकल्प करके पिता आदिके हाथसे प्रायश्चित्त करावे अथवा आपकर देवै-(करणकी विधि लिखते हैं) प्रथम गंगा आदि तीर्थसे जाके स्नान करे और धोया हुआ श्वेत वस्त्र पहरेके चोटीके गांठ देवे और भस्म चंदन दर्भ पवित्र धारण करके पूर्वकी मुख

किया हुआ तीन घेर आचमन करे और प्राणायाम करके देश काल आदिक उच्चारण पूर्वक प्रायश्चित्त सकल्प लेके पुरुषमूक्तसे अगन्यास और विष्णु पूजन षोडशोपचारसे करे। फिर सकल्प लेवे और कहे की मैंने जन्मसे लेके आज दिनतक जो जानके या अनजाने किया। कामसे या बेकामसे। एकघेर या भोतवेर। काया (शरीर) जवान मन। स-

कृततिलकः सपवित्रकरः पूर्वाभिमुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य । अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य । मम सकलपातकनिवृत्तिकामो विष्णुपूजनपूर्वकं देहशुद्धयर्थं प्रायश्चित्तमहं करिष्ये । इतिसंकल्प्य । सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिना देहन्यासं कृत्वा पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः श्रीविष्णुं संपूज्य विप्रपूजां कुर्यात् । पुनः देशकालाद्युच्चार्य ओं अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताऽज्ञात कामाऽकाम सकृदऽसकृत् कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक स्पृष्टाऽस्पृष्ट श्रुक्ताऽश्रुक्त पीताऽपीत महापातकोपपातकसंकली

गत करके । स्पर्शसे या अस्पर्शसे । खाने योग्यसे या निषेधसे पीने योग्यसे या नहि पीने योग्यसे । और (महापातक) अर्थात् ब्रह्महत्या मदिरापान सुवर्णकी चोरी । गुरुकी स्त्रिसे भोग । इन पाप करनेवालोंकी संगत । यह पाच महा इत्या है ।

(उपपातक) गोवध । द्विज होंके यज्ञोपवीत नहि लेना । चोरी करना । करजा नहि देना । अग्निहोत्र वैश्वदेवादि नहि करना इत्यादि उपपातकहे । (सकलीकरण, स्वर, अश्व, ऊंट, हिरण, हाथी, बकरा, भेड, मछि, भैंसा आदिका मारणा, (मलिनीकरण, कृमी, कीडे, पक्षी आदिका मारणा. (अपात्री करण) नीचोंको धन देणा, वणिज, शूद्रसेवा आदि. (जातिभ्रश)

करण मलिनीकरणाऽपात्रीकरण जातिभ्रंशीकरण प्रकीर्णानां संकलपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरमीत्यर्थममुकप्रायश्चित्तं अमुकप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्ति यथाकालं करिष्ये इति संकल्प्य । षडब्दादिप्रत्याम्नायं पूर्वोक्तं प्रायश्चित्तं कुर्यात् । अस्मिन्दिने उपवासः । अशक्तस्य हविष्यान्नेन नक्तव्रतं । अथ दशदानानि । गोभृतिलिहिरण्याज्यवासो धान्य गुडानि च । रौप्यं लवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात् ॥ १ ॥ एतानि दशदानानि विप्रैभ्यो दद्यात् ।

ढगाई पुरुषसे सग मदिराकी गध आदि सपूर्ण पापोंके दूर होनेके अर्थ पूर्वोक्त अमुक प्रायश्चित्त कंरताह । फिर उपवास व्रत या नक्त व्रत करके गौ १ पृथिव २ तिल ३ सुवर्ण ४ घृत ५ वस्त्र ६ अन्न ७ गुड ८ चादी ९ लवण १०

यह दश दान करें। यह दश दान ब्राह्मणोंको देवे। यदि दरिद्री होवे तो तीर्थयात्रा, जप, पाठ आदि करे। फिर (वैतरणी धेनु दान करें) सोलह १६ सेर रुद्ररा पर्वत करके उससे ताम्रके पात्रमें सुवर्णकी यम प्रतिमा (मूर्ति) रखे, और गधादिको करके पूजन करे। फिर इसकी नाव बणाके रसमसे बाधे, और एक पानीसे भरे होये गढमें रख देवे। फिर उससे काली निर्वनश्रेतीर्थयात्रादि कुर्यात्। ततोवैतरणीधेनुदानम्। अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य मम यमद्वारस्थिताया वैतरणीनद्याः सुखोत्तारणार्थं वैतरणी धेनुदानं करिष्ये इति संकल्प्य। द्रोणप्रमाणकार्पासशिखरोपरि ताम्रपात्रे हैमं यमं स्थाप्य। सम्पूज्य। तत्रेक्षुदण्डमयीं नौकां पटसूत्रेण बन्धा। तत्रस्थां कृष्णां धेनुं सवत्सां संपूज्य। ब्राह्मणं वृत्वा। संपूज्य। प्राङ्मुखो गोपुच्छं सतिलजलयुतं गृहीत्वा। देशकालौसंकीर्त्य। अमुक गोत्रोऽमुकशर्माहं वैतरणीत रणार्थमिमां गां सवत्सां सुवर्णशृंग रौप्यखुर कांस्य दोहन कृष्णवस्त्रयुग सप्तधान्य छत्रो गौ, बछडा खडा करके चदन, पुष्प, घूप आदिसे पूजा करे; और ब्राह्मणको वर्णन करके, गौका पुच्छ, जल, तिल, दर्भा, दक्षिण हाथमें लेने और देरा काल आदिका उच्चारण पूर्वक सकल्पसे वैतरणी नदीके तिरणके अर्थसुवर्णशृंग, चादीके खुर,

चांसिका रुद्ररा, इहणेका पात्र, कालावल्ल, सप्तधान, छाता, जुता इत्यादि सामग्री; और बछडे सहित ब्राह्मणको देतेवे
 (स्वनि) ऐसे ब्राह्मणसे कुहा लेवे। पश्चात् (ओं यमदारे० विष्णुरूप०) यह २ मंत्र पढके प्रार्थना करे; और दान प्रतिष्ठाके
 पानहाद्युपस्करयुतां अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । इत्युक्त्वा वि
 प्रहरते जलं क्षिप्त्वा । मंत्रो पठेत् । ॐ यमदारे महावारे कष्टां वैतरणीं नदीं । तसुकामो
 ददाम्येतां तुभ्यं वैतरणीं च गां ॥ १ ॥ विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ भूदेव पंक्तिपावन । सदक्षिणा
 मया तुभ्यं दत्ता वैतरणी च गौः ॥ इति प्रार्थ्ये । ॐ अद्य कृतैतच्छ्रेनुदानप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं
 हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । इति सुवर्णदक्षिणां
 यमं च सर्वं निवेद्य नमस्कृत्य प्रदक्षिणां कुर्यात् । ततः-ॐ धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमदारे महा
 भये । उत्तितीप्सुरहं देवि वैतरण्यै नमोनमः । इत्यनुगत्वा विसृजेत् । स्वयमशक्तौ पुत्रादि

अर्थ पुराण दक्षिणा देके, यमकी मूर्ति, रुई आदि संपूर्ण ब्राह्मणको अपर्ण कर देवे। और परिक्रमा देके (ॐ धेनुकेत्वं)
 इस मंत्रके ब्राह्मणके लेर दश १० या ५ पर मेलके विसर्जन करे। यदि आपसे नहि होवे, तो पुत्र, पौत्र, भाई आदिके

द्वारा यहै वैतरणी धेनुदान करावै. इति वैतरणी धेनु दानम् । (अथ महादानं) तिल १ लोह २ सुवर्ण ३ रुई ४ लूण ५ अन्नं ६ पृथ्वी ७ मी ८ येंहें आठ महादान है । सो शक्तिके मुजब आपणे अगाडी रखके, उपर लिखे

द्वारा वा कारयेत् । इति वैतरणी धेनुदानम् ॥ अथ महाष्टौ दानाति ॥ तिला लोहं हिरण्यं च कार्पासं लवणं तथा । संधान्यं क्षितिर्गोवो महादानानि चाष्टवै ॥ १ ॥ तत्रविधिः । देशकालौ संकीर्त्य । अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं इमानि तिलादीन्यष्टौ महादानानि सोमादि देवतानि सदक्षिणाकानि तत्तत्प्रदानं फलाप्तये श्रीविष्णोः प्रीतये नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽहं संप्रददे । इति संकल्प्य दद्यात् । ततः शक्तौसत्यां तिलपूर्णताम्रपात्रं मोक्षधेनुं ऋणधेनुं पापधेनुं उरुक्रांतधेनुं च दद्यात् । हुर्मरणमृते तन्निमित्तकं प्रायश्चित्तं संकल्प्य सूतका

होये संकल्पसे ब्राह्मणोंको दे-देवे । यदि सामर्थ्य होवे तो-तिलोसे भरा हुआ तायेका कलश १ मोक्षधेनु २ ऋणधेनु ३ पापधेनु ४ उरुक्रांतधेनु ५ इत्यादि दान करे । और यदि हुर्मरण. अर्थात् अग्नि, जल, विप,

फांसी आदिसे मरा होवे' तो प्रायश्चित्त संकल्प करके सूतकके अंतमें 'कर देवे । (अथ दाहादिकर्म) प्रथम तो मरणके पहलेही गोमयका लेपा देवे । और तहां तिल, कुशा, ऊनके वस्त्र आदि विछाके उसमें बैठे; अथवा सोवे. और विष्णुका स्मरण. (ईशावास्यं) सहिताके अंत्यकी १ अध्याय (पुरुषसूक्त) सहस्रशीर्षा. उपनिषद्, श्रीम-

न्ते कुर्यात् ॥ ॥ अथ दाहादिकर्म ॥ तावत् आसन्नमरणे गोमयोपलिप्तभूमौ तिलकुश
ऊर्णावस्त्रादियुतायां उपविष्टो दक्षिणशिरः शायितो वा श्रीविष्णुं स्मरन् । ईशावास्यं ।
पुरुषसूक्त-उपनीषद्भागवतानि । ॐ मित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहृन्मामनुस्मरन् नित्यादि गीता. वि
ष्णुसहस्रनामादीनि पुण्यस्तोत्राणि च पठेत् शृणुयाद्वा । श्रीरामकृष्णभक्तकोदिनामंत्रपं स्म
रणं च कुर्यात् ॥ ततः प्राणोत्क्रमणसमये पुत्राद्यधिकारी गंद्वादितीर्थसर्मापे अथवा स्व

द्भागवत, गीता, विष्णुसहस्रनाम आदि पुण्य स्तोत्रोंका पाठ करे. और श्रीराम, कृष्ण, माधव, गोविंद इत्यादि हारिकं
नाम जपे, तंयां उच्चारण करे, या सुजे । फिर प्राणनिकलनेके वक्त पुत्र, पौत्र आदि गंगा, पुष्कर, काशी आदि तीर्थपे

अथवा अपने घरमेंही तुलसी, शालिग्रामके समीप ले जाके गोमय, जलसे लिपी होई भूमिपे । गंगा जलसे या तर्जनी कूपके जलसे स्नान करावे । और नवीन घोया हुआ सुपेद वस्त्र अगोछा पहारके यज्ञोपवीत, पुष्पमाला, रुद्राक्ष, आवला, तुलसीपत्र आदिसे सुशोभित करे । और चन्दन, गंगा, मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिका लेपन कर देवे । पश्चात्

गृहे तुलसी शालिग्राम समीपे गोमयोपलिप्तायां भूमौ गङ्गोदकादि शुद्धजलेन संस्नाप्य
अहत शुक्ल धौत वाससी परिधाय्य यज्ञोपवीत पुष्पमाला स्त्राक्ष धात्री तुलसीपत्राद्यैरल
ङ्कृत्य चन्दन गंगामृत्तिकादिनाऽनुलेपयेत् । ततः पुत्रादिस्वोत्संगस्थापितशिरसः अपगं
तप्राणस्य मुखे नासिकाद्वये चक्षुद्वये श्रोत्रद्वये च पंचरत्नानि । तदभावेधृतविन्दून् वाक्षि
प्त्वा । दर्भवत्यां भूमौ तिलान् विकीर्ये । तत्र उदक् शिरसं स्वापयेत् ॥ अथ प्राणोत्क्रमणा

पुत्र अपनी गोदीमें शिर स्थापन करके प्राण जानेके बाद मुख दोनों नाकोमें तथा २ नेत्र २ कानों में पंचरत्न अथवा सुगर्ग या घृतके टपके गेरे और तिल दर्भा बिछाई हुई भूमिपे उचरकों मस्तक करके सुवादेवे । पश्चात् प्राण जानेके

अनंतर उयेत्र पुत्र तथा कनिष्ठ पुत्र, भाई आदि अधिकारी सर्वहि दक्षिणको मुल करके अपने नख, काख, लिंग त्यागके संपूर्ण लोम कटादेवे. अर्थात् मुंडन होजावे । अथवा कर्ताकेबिंजर कनिष्ठ पुत्र आदि दत्रामें दिन मुंडन होवे पात्र देना कुलव्याहारको न छोडे । फिर मुंडन होनेकेवाद संपूर्णहि ताजा शुद्धजलसे स्नानकरे. और नयीन घोयाहु

नन्तरं कर्ताऽन्येच कनिष्ठपुत्रादयो दक्षिणमुखाः स्वनखकक्षोपस्थ वर्ज्ज लोमानि वापयेयुः
 (कर्तुव्यतिरिक्तानां दशमदिने वा वपनम्) । ततो वपनाऽनन्तरं सर्वे स्नात्वा अहते वाससी
 परिधाय गताऽसुं धृतेनाभ्यज्य । मयादीनिच तीर्थानि येच पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रंच
 गंगाच यमुनांच सरिद्धराम् ॥ कौशिकीं चंद्रभागांच सर्वे पापप्रणाशिनीम् । मद्रावकाशां श
 रयूं गण्डकीं चमसां तथा ॥ वेणवं च वराहं च तीर्थं पिण्डारकं तथा । पृथिव्यां यानि ती
 र्थानि चतुरः सागरांस्तथा । एतानि मनसा ध्यायन् । जले सर्वतीर्थान्यावाह्य ॥ तेन जले

बावन्न धारणकरके मृतकको पृतसे चिक्णकरे । और (गयादीनिच तीर्थानि) इत्यादि मंत्रों करके तामे आदिपात्रमें जलको अभिमंत्रण करके उसी जलसे मूर्दको अछि तरे स्नान करादेवे । फिर शुद्ध वस्त्र पहारके गंगाजलसे मिलेहोये

चंदनका तिलक करे । और संपूर्ण अङ्गमें प्रोक्षण करे । पश्चात् पुष्पादिकों करके सुशोभित शवकों शुद्ध स्थानमें बणाई होई उत्तम चितामें कुशाके ऊपर सूषा स्थापन कर देवे । और पिंड दानकरे । पुत्र, पौत्रादि मृतकके दक्षिण तरफ दक्षिणको मुख करके बेटे । और अपसव्य होके कुशत्रय, जल, तिल दाहणे हाथमें लेवे । फिर मृतकका गोत्र, नाम उच्चारण न शवं संस्नाप्य अहत वस्त्रपरिधानं गंगोदकमिश्रितचन्दनादिनां सर्वांगप्रोक्षणम् पुष्परत्नं करणं च कृत्वा । शुचिदेशे विहित काष्ठरचितंचितायामास्तीर्णं कुशायामुत्तानं शवं स्थापयेत् ॥ अथ पिंडप्रयोगः । पुत्रादिमृतदक्षिणपार्श्वे दक्षिणाभिमुख उपविश्य । अपसव्येन (देशका लौ संकीर्त्ये) अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्या उत्तमलोकप्राप्त्यर्थमौर्ध्वदैहिकं करिष्ये । इत्युक्त्वा । दक्षिणायं कुशत्रयमास्तीर्य्य । अद्यामुकगोत्रामुकप्रेताऽन्नावने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यवनेज्य पिंडमादाय । अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत मृतिस्थाने करके संकल्प छोडे । और दक्षिणको अग्रभाग करके कुशत्रय रसे । फिर उसपे अवनेजन देके प्रेतका गोत्र, नाम लेके दर्भापर मृतिस्थान निमित्तक प्रथम पिंड दे देवे । और प्रत्यवनेजन अर्थात् पिंडपे जल छोडके पिंडको प्रेतके वस्त्रमें रसे ।

फिर प्रेतकों द्वारपर लियावे और वहांभी पहलेंकी तरह कुशत्रय अबनेजन देके एक पिंड द्वारनिमित्तक दे देंवे । पश्चात्
संपूर्ण पुत्र, भाई आदि अपसव्य होके केशसुखा होया बालकोंको अगाडी करके मद्यी आदि स्थालीमें कुलपरंपराविहित

शवनिमित्त (ब्रह्मदेवतोवा) एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठता इत्येकं पिंडं प्रत्यवने
जनं च दत्त्वा प्रेतवस्त्रे पिंडं बंध्वा गृहद्वारानयेत् । तत्र पूर्ववत्कुशास्तरणमवनेजनं च दत्त्वा ।
अद्यासुकगोत्र असुकप्रेत द्वारदेशं पांथनिमित्त (विष्णुदेवतोवा) एष ते पिंडो मया दीयते
तवोपतिष्ठतामिति पिंडं दद्यात् ॥ अथानंतरं सर्वे पुत्राऽनुजादयश्च कृतापसव्या मुक्तकेशा
बालपुरःसराः मृन्मथ्यादिस्थालीस्थं यथाचारं लौकिकाग्निं यवचूर्णकृतपिंडादिकं च गृहीत्वा
यमगाथां गायंती यमसूक्तं वा जपंतः शवं प्रच्छादितमुखं प्राक्शिरसमूर्ध्वमुखमरण्ये स्मशा

अग्नि तथा यवचूर्णकृत पिंड आदि लेके यम गाथाको गते होयें, वस्त्रसे ढके हुवे, मृतकको अगाडी शिर करके, ग्राम या
नगरके बाहर जंगलमें श्मशान भूमिके प्रति ले जावे । पश्चात् चत्वार (चोहरावेमें) सेचर निमित्त पिंडदान करके, ग्राम

और श्मशानके बीच विश्राम पिंड तीगसा-भूत नाम करके दे दें। फिर संपूर्ण बांधव व त्ररहित होयें हुने अर्थात् उनके
 त्र भारके बुड़े आदि प्रेनके रेर गमन करे। और मरे होये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यको द्विजके सडे हुये शूद्र नहि उठाये।
 नदेशी प्रतिनेयुः। (अथ चत्वरे खेचरनिमित्तपिंडदानं। तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणभवने
 जनं च कृत्वा। अमुकगोत्र अमुकप्रेन चत्वरे खेचरनिमित्त एत ते पिंडो मया दीयते तवोप
 निप्रतामिनि पिंडं प्रत्ययनेजनं च दद्यात्) एवमेव ग्रामश्मशानयोर्मध्ये। विश्रामे। अमुक
 गोत्र अमुकप्रेत विश्रांतो भूतनाम्ना (रुद्रदेवतोवा) एतेते पिंडो मया दीयते० इति विश्राम
 पिंडदद्यात्। ततः सर्वे बांधवा अप्रावरणा वृद्धादयश्च प्रेतमनुगच्छेयुः॥ मृतं द्विजं सजा
 तीयेषु निष्ठसु न शूद्रानयेयुः। न मृतं शूद्रं द्विजाश्च। द्विज संस्कारोपयुक्त अश्रितृणकाष्ठ
 घृतादि शूद्रादिभिर्नयनं निषिद्धम्॥ द्विजशवं शूद्रो न स्पृशेत् (स्वगृहे मृते ब्राह्मणो नगरप
 तथा मरे होये शूद्रको द्विज नही उठाये। ब्राह्मणादिकोंके अग्नि, नृण, काष्ठ, घृत आदि वस्त्वं शूद्रादिक नहि लेवे। और शबकों

१ पर गमनपरिशूरोऽग्निं शूद्रात्तत्तत्तद्वह्योरेण। प्रेत्स्वर्हिमदानस्यपचा भ्रंणस्त्रिप्यनइनियमस्वरणान्-

शूद्र कदापि स्पर्श नहि करे । ब्राह्मणको नगरके पश्चिम द्वारसे । क्षत्रियको उत्तरसे । वैश्यकी पूर्वसे । शूद्रको दक्षिण द्वार
 करके बाहर ले जावे । पश्चात् इमशान देशमें जाके शुद्ध जगे शनैसे दक्षिणको शिर करके स्थापन कर देवे; ओर चिता
 श्रिमद्वारेण । क्षत्रियः उत्तरेण । वैश्यः पूर्वेण । शूद्रो दक्षिणेन द्वारेण नेयः ॥ अथ इमशानदेशं
 प्राप्य शुचिदेशे शनैर्दक्षिणशिरसं शवं स्थापयेत् । ततश्चितास्थाने वायुनाम्ना पिंडदानम्
 तत्रादौ कुशत्रयं हत्वा । अवनेज्या पिंडमादाय । अमुकगोत्र अमुकप्रेतं चितास्थाने वायु
 निमित्तं (यमदैवतोवा) एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति पिंडं दत्वां प्रत्यवने
 जनं च दद्यात् । ततः खननसंहावनादिभिः शोधनोपायैर्भूमिं संशोध्य । गोमयोदकेन
 प्रोक्ष्य तत्र (अयोध्या मथुरा मांया काशीकांचीअवंतिका । पुरीद्वारावती चेति संज्ञेता मो
 क्षदायका इति दर्भैर्लिखित्वा वा मनसा ध्यात्वा संपूज्य तदुपरि कुशतिलानास्तीर्थं । तत्र
 स्थानमें वायु नाम करके चोथा पिंडदर्शन करे । पश्चात् भूमिको खोदके जलसे तरकरे । ओर शुद्धि संपादन करके गौबर तथा
 जलका लेप देवे । फिर तहां अयोध्या १ मथुरा २ मांया ३ काशी ४ अवंतिका ५ द्वारका ६ कांची ७ यहि सात पुरी—दर्भा

करके शिमे; और मंत्र, पुण्य आदिसे पूजनके कर्मा, तेल विवर्णन करे। पश्चात् उरुमें चंदन अगर देवद्वार, शमी आदि गन्ध काष्ठमें और नारेल, चिन्त आदि फलसिद्धि वादके योग्य दक्षिण उचर लंबा संचय करके; जल, करसे प्रोक्षण करे। फिर दक्षिणको शिर और उजरको पैर रखके मूया रखरहित मृतरुको चितापे स्थापन कर देवे। और थोडा बल फाडके चंदनादियत्तीयकाष्ठेः श्रीफलादिभिश्च दहनपर्याप्तं दक्षिणोत्तरायतं दारुचयं कारयेत् । तत अत्रिताकाष्ठं जलेन प्रोक्ष्य । तत्र दक्षिणशिरसं सवस्त्रमुत्तानमुलं शवं चित्ती निदध्यात् । किं चिद्रुद्रं अगानवासिने दद्यात् । ततः शिरःप्रदेशे गुद्धभूमौ स्थंडिलं कृत्वा । पंच भूसंस्कारान् संस्थाप्य । तत्र कव्याद संज्ञकमग्निं प्रज्वाल्य । कव्यादायनम इति गंधमाल्यादिभिः संस्कारान् प्रोक्ष्य देवे । प्रयाग अलग बोर्ड दरसन आदिपैर रख देवे। पश्चात् मृतकके गिरंयी तरफ स्थंडिलं शुद्ध जलमें प्रोक्षण करके (पंचभूमिस्कार) अर्पित् दूर्धसिंभारे गोरामें लेपन करे और बीचमें काष्ठ करके तीन रेखा करे। फिर कव्यादायनम अग्निपे स्थापन कर देवे। और (कव्यादायनम) इस मंत्रसे गंध, पुण्यादिकोसे पूजन

1 नमोऽस्तुते त्रैलोक्ये त्रिभिर्देवैर्निर्दिष्टे त्रिभिर्देवैर्निर्दिष्टे त्रिभिर्देवैर्निर्दिष्टे त्रिभिर्देवैर्निर्दिष्टे । शारदीयदेशेऽप्यशानवास्पर्षयेत्यपरित्यजेद्विष्मयं ।

करके प्रदक्षिणा करे। और (त्वंभूतभृत्) इस मंत्रसे प्रार्थना करे। (मंत्रार्थ) हे अग्ने (त्वं) आप (भूतभृत्) जीव प्रा-
 णियोंको धारण करते हो (त्वंजगद्योनिः) -आपहि जगतका योनि (उत्पत्ति) स्थान हो (त्वंभूतपरिपालकः) आपहि
 पूज्य। प्रदक्षिणां कृत्वा। त्वं भूतभृज्जगद्योनिस्त्वं भूतपरिपालकः। मृतः संसारिकस्तस्मादेनं
 त्वं स्वर्गतिं नय इति प्रार्थ्ये। लोमम्य इत्याद्यनुवाक्येन आज्यहोमं कुर्यात्। लोमभ्यः
 स्वाहा १ त्वचेस्वाहा २ लोहिताय० ३ मेदोभ्य० ४ मांसिम्य० ५ स्नायुम्य० ६ अस्थिम्य० ७
 मज्जाभ्य० ८ रेतसे० ९ पायवे० १० आयासाय० ११ प्रायासाय० १२ संयासाय० १३ वियासाय०
 १४ उद्यासाय० १५ शुचे० १६ शोचते० १७ शोचमानाय० १८ शोकाय० १९ तपसे० २०
 तप्यते० २१ तप्यमानाय० २२ तप्ताय० २३ घर्माय० २४ निष्कृत्यै० २५ प्रायश्चित्त्यै० २६
 भेषजाय० २७ यमाय० २८ अंतकाय० २९ मृत्यवे० ३० ब्रह्मणे० ३१ ब्रह्महत्यायै० ३२
 जीवोंकी पालना करते हो. सो (तस्मात्) इसवास्ते (मृतःसंसारिकः) मरा होया यो संसारी जीव (एनं) इसको
 (त्वं) आप (स्वर्गी) स्वर्ग लोकको (नय) प्राप्त करो। पश्चान् धृतसे (लोमम्य) इत्यादि मंत्रों करके ३४ आहुति

देके शानके हाथमें साधक नाम पिंड देवे। और (हे प्रेत. तुमारे हाथमें साधक निमित्त यह पिंड देताहूँ सो आर्पिकों प्राप्त होवो) यह उच्चारण करके संकल्पका जल छोड देवे। फिर पुत्र, पौत्र आदि कुलपरंपराके अनुसार बहोतसा तृण, दर्भा विधेभ्योदेवेभ्यः० ३३ द्यावापृथिवीभ्यां० ३४ इत्याज्याहुतीहुत्वा) शवहस्ते साधकनाम्ना पिंड दद्यात् ॥ तद्यथा । अद्यामुक्तागोत्र अमुकप्रेत शवहस्ते साधकनिमित्त (प्रेतदेवतोवां) एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठामिति दद्यात् । ततोऽपसव्येन एव पुत्राः प्रौत्राश्च यथा चारं बहूलतृणान् गृहीत्वा अग्नौ प्रज्वाल्य । प्रदक्षिणं परिक्रम्यं । मंत्रद्वयेन शिरःस्थाने अग्नि दद्यात् । तत्र मंत्रौ । कृत्वातुदुष्कृतं कर्म जानतावाप्यजानता । मृत्युकालवशं प्राप्यनरं पंचत्वि मागतं १ धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतं । दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् संगच्छतु २ (ततोगाढरोदनं करोति) ततः पूर्णे दग्धे वाऽर्धे दग्धे सति शवमस्तं कं काष्टेन भित्वा । आदि अग्निमें जलकं परिक्रमा देता हुवा (कृत्वातुदुष्कृतं कर्म. १ धर्माधर्मसमायुक्त. २) इर्ण दो २ मंत्रोकरके मस्तं कंके पास अग्नि लगा देवे (इस समयमें पुत्रको रुदन करणा चाहिये) फिर संपूर्ण. —या आया दग्ध हुवां प्रेतकी जोणके उत्स-

का मस्तक काष्ठसे भेदन करके (अस्माल्वर्मधि.) इस मंत्रसे फूटे होये मस्तकमें तिल सहित घृतकी आहुति दिये। फिर जलसे भरा हुआ कुंभ लेंके परोसे चारों तरफ तीनवैर भ्रमांकर कुलपरंपरासे पत्थर करके फोडे। और, इमशान की तरफ नहि देखता होया बालकोंको अगाडी करके स्नानके वास्ते नदी, तलाव, कूपआदिपे जावे। और जलके

अस्माल्वमधिजातोसि त्वदयंजायतांपुनः। असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहाज्वलतु पावक॥१॥
 इति तिलमिश्रितामाज्याहुतिंदद्यात् ॥ (ततः सजलं कुंभमादाय पादतोऽप्रदक्षिणं त्रिः प
 रिक्रम्य यथाचारं अश्मना कुंभं भित्वा) अनवेक्षमाणाः कनिष्ठपूर्वाः स्नानार्थं नद्यादिके
 गच्छेयुः। तत्रोदकसमीपं गत्वा परिहितवस्त्रं प्रक्षाल्य तदेव परिधाय समीपस्थं श्यालकं अन्यं
 वा उदकं करिष्यामहे। इत्युदकं याचेत्। कुरुध्वमिति प्रयुक्ते पुत्रादयः सपिंडाः समानो
 दकाश्च यथावृद्धमुदकं प्रविश्य। एकवस्त्राः प्रकीर्णकेशाः प्राचीनावीतिनः वामनामिकया
 समीप जाके गारन किये होये वक्षकी प्रक्षालन करे। फिर उसीको पहरेके समीप सडा हुवा शाला या अन्य
 कोई संबधिको पुठेकी जलदान करताहु (करो) यहे कहणे के बाद पुत्र, पौत्र, भाई, सपिंड, कुलवाले

संपूर्ण दि जलमें प्रवेश होके; एक दमकी धारण किया हुआ, केश खोलके, अपसव्य आदिसें वाम हाथकी धनामितामें (अथनः शोशुचवर्ष) इस्से जलको आलोडन करे और दक्षिणको मुख करके एक बेर जलमें धारकीगाने परंतु अंग नदि मतले पश्चात् घोती, साफा, धारण करके आचमन करे. और जलमें या पत्यरपै शुद्ध

अथनः शोशुचदधमिति जलमालोहय दक्षिणमुखाः सकृन्निमज्जेतुः अंगं च नविधर्षेतुः ।
ततोद्विवासस आचम्य । जले पापाणपृष्ठे वा शुत्रित्तीरदेशे वा दक्षिणाग्रकुशत्रयोपरि ऋच्छु
दर्भपूर्णाञ्जलिना पितृतीर्थेन । प्रेतमुद्रिस्य । अघामुकगोत्र असुकभ्रत एष तिलतोयांज
लिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति सर्वे एकैकमंजलिं तिस्रो दश वा निषिंचेतुः । गोत्र
स्त्रियोपि दद्युः (इयं जलदानक्रिया दशमपुरुषपर्यंतं कर्तव्या । समानग्रामवासे यावद्दासः ।

अंगे दक्षिणको अप्र भाग करके त्रिकुश रस्ते, और तिल, जलसे अंजली भरके सीधी दर्मा करके पितृतीर्थे अर्थात् दाहणे अंगुष्ठेके नीचेसे प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके एक या तीन या दश अंजली दान करे। और स्त्रियांभी अजली देवे। यदि अजली दान दशनिर्दिष्टक करणा चाये। और एक ग्राम एक वासके संबंधवालेभी अंजली देवे। स्वशुर,

मातामह (नाना) मातुल (मामा) यज्ञोपवीत देनेवाला, गुरु, चेला, साहाय्यायि (संगतपढीवाला) मित्र, पुत्री, मेण,
 माणजा, राजा, पुरोहित इत्यादि अपने सबधियोंको मरणसेभी अंजली देणा चाहिये। परंतु नपुंसक भंरसारको मारनेवाली
 रंश गर्भ निकलानेवाली पतित हस्त्यारा, चौर, द्रात्य, नास्तिक, मदिरापिनेवाला इत्यादिकोंको अंजली दान नहि करे।
 संबंधमनुस्मरेयुस्तावत्प्रथयेयुः। श्वशुर मातामह मातुलाचार्य शिष्य सहाध्यायि मित्र इहिते।
 भगिनी भागनेय राजत्विजां तद्धितेषिभिः काम्यमुदकदानं कर्तव्यम्। क्लीबमर्तुगर्भेदुहं।
 स्त्रीपतितैरुदकं न कार्यं। ततः सव्यं कृत्वा। आचम्य। शिखां बध्वा। उदकादुत्तीर्ये स्ना।
 नवस्रं निष्पीड्य। शुचौ देशे शाद्गलवत्सुपविष्टान् सपिंडान् अन्ये सुहृद इतिहासपुराणा-
 दिविधियकथाभिः संसाराऽनित्यतादर्शयन्तोऽवदेयुः॥ मानुष्ये कदलीस्तंभानिःसारे सारमा-

अंगली देनेके अनंतर सपूर्ण सव्य होके आचमन करे, और शिखा (चोटी) के गांठदेने, नदी, तलाव, कूप आदिसे नीचे
 उतरकर पीति नितोवे। फिर अच्छि साफजगे हरे घास या दूर्वापे सपूर्ण बांधव और साथ जानेवाला भाई परसंगी
 अनेक इतिहास पुराण आदिकी कथावसे, संसार अर्थात् जन्मना मरणा झूठा दिखवे। और वैराग्य उत्पन्न करे। अय

इतिहासः । यहें मनुष्य शरीर (कंदली) केलेके स्तम्भेंड जैसा है, और इसमें कोई सारचाँज नाहि है क्युकी (निःसार) केले की तरे काठ रहितहै, और (जलबुद्बुद सन्निभे) पानीके बुदबुदे जैसा है सो जो कोई इसके अंदर (सारसागण) सदाके रहणका सार देखता है सो (मूढः) मूर्ख है ३ पांचमहाभूत पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इनसे यह शरीर बना होया है और अपने पहलेंका किया हुवा कर्म भोगणके बाद (पंचत्व) मरगया अर्थात् पृथिवी आदि पंचमहाभूतों में । यः करोति ससंमूढो जलबुद्बुदसन्निभे १ पंचधासंभृतः कायो यदि पंचत्वमोगतः १ क

मभिः स्वशरीरोत्थैस्तत्र का परिदेवना २ गत्री वसुमतीनाशमुदधिदेवतानि च १ । फेनः प्रल्यः कथं नाशं मर्त्यलोको नयास्यति ३ मा शोकं कुस्तानित्ये सर्वस्मिन् प्राणधारिणि धर्मं कुस्त यत्नेन यो वः सद्भतिमेष्यति ४ इति ततः पश्चादनवलोकयतोऽधोमुखाः कनिष्ठाभूत अपने २ रस्ते लगे तो फिर किसका फिकर करना २ देखिये या पृथिवीभी जानेवालिं है और समुद्र तथा देवता

सूर्य आदिभी नाश होंगें तो फिर पानीके बुदबुदेकी भाँफिके यहें मनुष्य नाश होना कौन बड़ी बात है ३ इसी लिये इस नाश होने वाले और सदेव नाहि रहनेवाले प्राणमात्र संगी शरीरका फिकर मत करो, और यत्नसे धर्म संभय

बरी, सो तुमारे सेग चले ४ इति—इत्यादि वाक्यसे मृतकके पुत्रादिकोका शोक दूर करके लरको नहि देखते होये नीचे
 को मुल करके बालकोको अंगडी रखके यमगाथा और यम सूक्तको गति होये सामलके सामल ग्राम या नगरके
 तरफ आवे, और अपने घरके द्वारपे खडाहोके नीमके पत्ते दातोसे चावे, फिर आचमन करके गोमय, सरसों, घृषभ, जल,

नम्रतः कृत्वा अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं वृषं वैवस्वतो नतृष्यति सुरापश्च दुर्मतिरिति
 यमगाथां गायतो यमसूक्तं च जपतः पक्तिभूतां ग्रामं प्रत्यायाति । ततो गृहद्वार समीपे स्थि
 त्यां निवपत्राणि दत्तेर्विदश्य आचम्य । गोमयसर्षपवृषाबुड्वैभिर्न्यथालाम् स्पृष्ट्वापादने ।
 पापाणमाक्रम्यगृहं प्रविशेयुः । वृद्धाः शोकापनोदनं कुयुः ॥ अथ ज्ञातानां यमानियमाः ।
 ब्रह्मचारिणः । अधःशायिनः अधउपवेशिनः । परस्परं असंस्पृष्टाः । दानाध्ययनवर्जिताः ।

दुर्गा, अग्नि इत्यादिकं जो वस्तु तैयार हवे, तिसको स्वशी करके, पत्थरपे पग रखके धरके अदर प्रवेश होजावे, और तहा
 बुडे २ मंत्रुय शोक कारवे । अब जातवाले भाइयोका तीन रात्रतके नेम लिखते हे—संपूर्ण ब्रह्मचारी रहे अथात्स्त्री संग

नहिं करे। मिला वस्त्र पहरे। उदास रहे। नीचेको मुँस रसे। संपूर्ण भोग आनंद त्याग देवे। अंग बाल आदि साफ नहिं करे। प्रेतक्रिया शिवाय अन्य कोई जरूरत बिना कान नहिं करे। शक्ति होवे तो तीन दिन या एकदिन उपवास करे। अथवा एक सक्त भोजन करे परंतु चावल, मूंग, यव आदि खावे। और उड़द, पुडे, पायस आदि प्रक्षण नहिं करे। पाक एक मलिनाः। दीनाः। अथोमुखाः। सर्वभोगविवर्जिताः। अंगसंवाहनं केशसंमार्जनं चाकुर्वतः।

प्रेतक्रियावर्जयनावश्यकं न किंचित्कर्म कुर्युः। शक्त्यात्रिरात्रमेकरात्रं वा उपवसेयुः। अशक्तौ। एकात्रवीहियवादि अक्षारलवणं माषान्नापूपपायसवर्जितं एकवारं कृत्वा लब्ध्वा वा दिनात्यये दिवैवाल्पमश्नीयुः। न रात्रौ भोजनकाले भोज्यौदनात् शुक्तमुच्छिष्टमादाय प्रेतस्यनाम गोत्रमुच्चार्य प्रेतोद्देशेन भूमौ क्षिपेत्। एते नियमाः त्रिरात्रपर्यंतं सर्पिडानां

वेर करे। या किसी माई परसंगिकों आया हवा अत्र सार्यकाल दिन २ संहि सा लेवे परंतु रात्रौमें भोजन नहिं करे। भोजन करनेके बाद खुटा अत्र लेके प्रेतका नाम गोत्र उच्चारण करके, पृथिवीये थोडा छोड देवे। यह नेम सर्पिडोंको तीन

रात्रिक रक्षणा चाहिये। और पुत्र, पात्र, भाई आदिको माता, पिता, गुरु मरणसे दशरात्रीतक, यहि नेम रक्षणा पढताहै।
 इछा होवे तो दशादिनतक संपूर्ण कुटुंब सहित भोजन करना। और चोहरावे श्मशान घरमें दीपक, चासणा चाहिये-
 फिर घृत अस्तहोनेके बाद रात्रिमें तीन लकड़िये दुग्ध और जलका दो कषापात्र रखके चोहरावे या श्मशानमें दक्षिण
 भवति। पुत्रादीनां तु माता पिता ऽऽचार्यनिपातने दशरात्रमेते नियमा भवति। इच्छ्या
 प्रथमादि दशाहपर्यंतं कुटुंबैः सह भोजनं चतुष्पद श्मशानग्रहेषु दीपदानम्। अथ सूर्यास्त-
 मयादूर्ध्वः रात्रावुन्तरिक्षे श्मशाने वा चतुष्पथे क्षीरोदकदानम्। तत्र। त्रिकाष्टिकायां एक-
 स्मिन्नपक्वे मृन्मये पात्रे उदकं द्वितीये क्षीरं च कृत्वा। अपसव्येन दक्षिणां मुख उपविश्य।
 देशकालौ संकीर्त्य। अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य आप्यायनार्थं तृषोपशमनार्थं चाकाशे मृन्म
 यपात्रद्वये क्षीरोदकयोर्निधानं करिष्य इति संकल्प्य। श्मशानानलदग्धोसे परित्यक्तोसि
 को मुख किया होया अपसव्यसे संकल्प उच्चारण करके प्रेतके निमित्त देवे और यह उच्चारण करे की। हे प्रेत! तुम
 श्मशानकी अग्निसे दग्ध हुवा हो और बांधवा करके त्यागा होया होसो यह जल और यह दुग्ध आपके निमित्त देता हूं

लो रंग पानीसे स्नान करो और रंग शृंगारो पात्रो पूर्ये कहके, निर्दिन करे फिर अपने घरको चला आये। यह जल
 शृंगारका दान एक रोज या तीन रोज या दश रोजक नित्य प्रति परेपरोके अनुसार रात्रिमें करुणा चाहिये। इत दाह
 प्रारणम्। गव प्रथमदिनो लेके दश रोजका कर्म स्थितेहे। प्रथम स्थिसंचय कहतेहे। स्थिसंचय प्रथम या
 बांधवेः। इद नीरभिदं क्षीरमत्र साहि इदं पिव इतिपाठित्वा ॥ अमुकगोत्र अमुकप्रत अनन
 जलेन साहि। अमुकगोत्र अमुकप्रत इदं क्षीरं पिव इति निवेदयेत्। एतव क्षीरोदकनिधा-
 नभेसाह वा दिनत्रयं वा दशाहं यथाचारं प्रत्यहं रात्रौ कर्तव्यम्। ततो गृहांगमनं। इति दाह-
 प्रकरणम् ॥ अथ प्रथमदिनमारम्यं दशाहपर्यंतं कर्मोच्यते ॥ तावदस्थिसंचयनेम् ॥ तच्च प्रथम
 तृतीय चतुर्थं सप्तम नवमेषु। सोमार्क। मंदतीर्थियुग्मेकपादं द्विपादं त्रिपादं कर्तुंनक्षत्र धनि-
 शादि पंचक वंजं दिनेषु कार्यम् (तत्र विप्राणां विशेषतश्चतुर्थेऽग्हिं राज्ञां पंचमे विशां नवमे-
 शीशरे चोपो पांचमे क्षान्ते नोत्रे दिन करुणा चाहिये परंतु मंगल आदित्य शनिश्च वार और बधि होइ तिथि एकपाद,
 शिवादि, त्रिपादरोग कर्तृका जन्म नक्षत्र धनिशां चतुर्था उचरामाद्रपदं स्वती येह पाच नक्षत्र नाहि हो तब

करणा । और आग्रणकों घोबे रोज क्षत्रिकों पांचवे वैश्यकों नोबे शूद्रोंको दशवे देने करणेका लेखहै (परंतु देश कुलपरंपरा विवाह देसके करणा अथवा संपूर्णहि पहल कयेहोये प्रथम तीसरे आदि दिनोंमें करलेवे और तीनरोजका पातक होवे तो दूसरे दिन और एक रोजका होवे तो उसी दिन दाह करणेके वाद अस्थि संचय करे ॥ अस्थिसंचयनिमित्त श्राद्ध लिखतहै ॥

शुद्धाणां दशम दिने कार्थ्यं । असंभवे प्रथमादि दिवसेष्वस्थिसंचयः कर्त्तव्यः । अहाशौचे द्वि तीयेति । सर्वेषां सत्यशौचे दाहानंतरमेव कर्त्तव्यः ॥ अथास्थिसंचयनिमित्तक श्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र श्राद्धदिने सामग्रीं संपाद्य श्मशानदेशे गत्वा शुचि श्रूमौ संस्थाप्य नद्यादिके लात्वा श्राद्धभूमिं प्रकल्प्य गोमयोदकेनोपलिप्य गौरमृत्तिकयाच्छाद्य तिलैरवकिरणं कुर्यात् । ततश्चरुशृपणं कृत्वा सिद्धेऽन्ने दीपं प्रज्वाल्य पवित्रे धत्वा । आचम्य । तृष्णीं प्राणानायम्य

प्रथमतो श्राद्धके दिन सामग्रीतैयार करे । फिर श्मशानमें जाके शुद्ध साफजगे सामग्री स्थापन करै पश्चात् नदी तलाव आदिमें स्नान करके श्राद्धभूमिकी शुद्धी करे । और गोबरका लेपा देवे सुपेद या बालुसेता बिछावे और तिल विकिरण करके (चरु) चाबल धोके अछा पकाये और तेलका दीपक जलाके पवित्र धारण करे और आचमन तथा अमंत्रक प्राणायाम

करे पश्चात् पुरा धारण करके (अपवित्रः पवित्रो वा) इस मंत्रके (पुंडरीकाक्षः पुनात्) इसे सामग्री और अपने शरीर
 को जलसे प्रोक्षण करे फिर अपसव्य होके दक्षिणको मुख और नीचेको वामा गोडा करके दाहणे हाथमें कुशत्रय
 कुशोपग्रहः । अपवित्रः पवित्रो वा० १ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति श्राद्धसामग्रीं स्वात्मानं च
 प्रोक्षयेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजानुः कुशत्रय तिल जलान्यादा
 य देश कालौ संकीर्त्य० । अमुकगोत्रस्य अमुकभ्रतस्य भ्रतत्वविमुक्तये अस्थिसंचयनिमित्त
 कं श्राद्धं करिष्ये- इत्युक्त्वा । कुशबटुं निधाय । इह लोकं परित्यज्य गतोसि परमां गतिं ।
 मनसा वायुरूपेण चटे त्वाहं नियोजये १ इति पठित्वा तिलान् विकिरेत् । ततः कुशत्रय तिल
 जलान्यादाय० । अमुकगोत्र अमुकभ्रत अस्थिसंचयनिमित्तकश्राद्धे इदमासनं ते मया दी
 यते तवोपतिष्ठतामित्यासनं ऋष्टु कुशत्रयरूपमुत्सृजेत् (नभोटकरूपं) । ततस्तूष्णीं तिलान्
 तिल जल लेवे फिर भ्रतका गोत्र नाम उच्चारण करके संकल्प लेवे । पश्चात् कुशाका एक चट रत्नके उससे (इहलोकं)
 इसश्लोकसेभ्रतकाप्रावाहनकरे और तिलविकिरणकरे फिर सीधी त्रिकुशका आसन देके तिल भरे (यहां भोटक नहि

देणा चाहिये) इसके अनंतर एक डोनेमें कुशाका पत्ता रखके जल तिल गंध पुष्प घाले फिर डोना घामें हाथोंमें रखे।
 कुशाका पत्ता अगाड़ी एक पतलपें धरके दाहणे हाथसे उस दर्भाके पते (पवित्रे पर अर्घ्य जल उपरका संकल्प उच्चारण
 विकीर्य्ये । अर्घ्यपात्रे पवित्रमेकं कृत्वा । तत्र जल तिल गंधपुष्याणि प्राक्षिप्य । पात्रं गृहीत्वा
 वामहस्ते कृत्वा । पवित्रे परिवेषणपात्रे दत्त्वा । अर्घ्यपात्रं दक्षिणकरे कृत्वा । अधामुकगोत्र
 अमुकप्रेत एष ते हस्तायो मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यर्थं पवित्रोपरि दद्यात् । अर्घ्यपात्रं
 चासनवामपार्श्वे तूष्णीं स्थापयेत् । ततो गंधादिकं कृत्वा । अमुकगोत्र अमुकप्रेत अस्थिसंच
 यनिमित्तक श्राद्धे एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल वासांसि ते मया दीयंते तवोपतिष्ठ
 तामित्युत्सृजेत् । ततो धृताक्तमन्नमुद्धृत्य । पात्रे परिवेश्य । जलेनाभिषिच्य (न पात्रालंभागा
 हौ । नात्र पात्रालंभो नाशिषः प्रार्थयेदिति प्रचेतसःस्मरणात्) तूष्णीं तिलान् विकीर्य्ये । वाम
 कर करे । अर्घ्यपात्रको आसनके निऋतकोणमें सीषाहि स्थापित कर देवे (प्रेतश्राद्धमें नुब्ज नहि करणा चाहिये)
 पश्चात् आसनपें गय पुष्प धूप दीप तांबूल सुपारी बत्त धरके संकल्प लेवे । और प्रेतके अर्पण करे । फिर एक पत्तमें

प्रासनके अगाड़ीं अन्न घृत व्यंजन सहत दहीं जल आदि न्यारे २ परोसकें वामें हायसें अन्नपात्रको 'स्पृशीकरता' हवा प्रेतका नाम गोन लेकें सकल्प रीतिसें अन्नका त्याग करे। (यहाँ पात्रका आलमन अगुष्ठनिवेशनपितृजप आदि कर्म करेण पात्रं स्पृशन् । दक्षिणकरे कुशादीन्यादाय । अद्यामुक० । प्रेत अस्थिसंचयनिमित्तक श्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् । नात्र पितृको जपः (न पितृको जपः कार्य इति प्रचेतसः स्मरणात्) ततोऽन्नपात्रसमीपे पिंडदानार्थं सिक ताभिर्वेदां निर्माय । गोमयोदकेनोपलिप्य । तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणं कुर्यात् । ततः पुट के जल तिल गंध पुष्पाणि कृत्वा । पुटकं गृहीत्वा । अमुक० प्रेताऽस्थिसंचयनिमित्तक श्रा द्दपिंडस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशत्रयोपरि अवनेजनजलं किं नहि कारना चाहिये) फिर अन्नपात्रसें उत्तर तरफ पिंडदानके लिये (रेत) महीसें एक वेदी बनावे और उसको गोम- पसें लपे । फिर दक्षिणको अग्रभाग करके तीन पचेवाली कुशा एक घरे और तसपर जल तिल चंदन समरे होये डोनेसें

अर्धनेत्रं अर्धं अलं गेरु देवैः अर्धनेत्रं देवैः अर्धनेत्रं देवैः अर्धनेत्रं देवैः अर्धनेत्रं देवैः अर्धनेत्रं देवैः
 पिंडको बायें हायें और कुशत्रय तिल जल दक्षिणहायमें लेके प्रेतका गोत्र नाम उच्चार करे और दोनो हायोंसे कुशाके
 चिह्न द्यात् । ततो घृत मधु तिल युक्तेनान्नेन पिण्डं निर्माय । वामहस्ते कृत्वा । दक्षिणहस्ते
 कुशत्रय तिल जलान्यादाय । अमुकगोत्रामुक्तेप्रतास्थिसचयनिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते
 पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशोपरि वामाऽन्वारब्ध दक्षिणहस्तेन पिण्डं द
 द्यात् । ततः हस्तौ प्रक्षाल्य । अर्धनेत्रपात्रं गृहीत्वा । कुशत्रयादीन्यादाय । अमुक गोत्रासु
 कप्रत अत्र प्रत्यवनेनिध्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामितिप्रत्यवनेजनं दद्यात् । ततः पि
 ण्डोपरिकर्णसूत्रं दत्वा । अमुक गोत्राऽमुकप्रत अत्र पिण्डे एतद्दासो मया दीयते तवोपति
 ष्टतामित्युत्सृजेत् । ततः पिण्डं गन्ध पुष्प धूप दीप पूगीफल दक्षिणादिभिः सम्पूज्य । अमुक
 उरर पिंड देवैः । फिर हात धोके अर्धनेत्र पात्रसे प्रत्यवनेजन पिंडपेदेवै । और पिंडकी ऊनके तार गंध पुष्प धूप दीप
 तांबूल पूगीफल दक्षिणा करके पूजा करे । और गोत्र नाम उच्चार करके गंध पुष्प आदिनिवेदन करदेवै । पिंडपूजनके

अन्तर संकल्प लेके प्रेतको अन्न जल आदि अक्षय्य करे । और पिंडपे दक्षिणको अगाडीका हिस्सा करके त्रिकुश धरे । फिर दुग्ध जल करके दक्षिणाग्रधारा पिंडके उपर देवे । और (अनादिनिघन० १ अतसीपुष्प० २ कृष्णकृष्ण० ३ गोत्रामुक्तप्रेतात्र पिण्डे गन्ध पुष्प धूप दीप पूगीफल दक्षिणादीनि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्तामित्युत्सृजेत् । ततः अमुक० प्रेतस्यास्थिसंचयनिमित्तकश्राद्धे यद्दत्तमन्नपानादिकंतदुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दत्त्वा । पिंडोपरि कुशत्रयं निधाय । सतिल दुग्ध जलेन दक्षिणाग्रां धारां दद्यात् । अनादिनिघनो देवः शंखचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव १ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतं । ये नमस्यंति गोविंदं न तेषां विद्यते भयम् २ कृष्ण कृष्ण कृपालोस्त्वभगतीनां गतिर्भव । संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ३ नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वसप्रद । अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ४ इति पठित्वा । अमुक० प्रेत अत्र पिण्डे जलधारास्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामिति जलधारात्रयं दद्यात् । नारायण० ४ श्लोक पठके । गोत्र नाम उच्चारण करके प्रेतके अर्पण करे

पश्चात् चादी दक्षिणा लेकें संकल्पद्वारा श्राद्धप्रतिष्ठाके अर्थ कोई ब्राह्मणको देदेवै । फिर पिंड उठाकें चट वि-
सर्जन करे । और हाथ पैर प्रक्षालन करके आचमन विष्णुस्मरण करे श्राद्धसामग्री ब्राह्मणके अर्पणकरे या अगाध नदी

ततो दक्षिणाद्रव्यं कुशादीनि चादाय अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य कृतैतदस्थिसंचयनिमित्तकं
श्राद्धप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं रजतादि द्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहसुत्सु
जे इति दद्यात् । ततः पिंडमुत्थाप्य चटं विसृज्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य सव्येनाचम्य विष्णुं
स्मरेत् । श्राद्धवस्तूनि विप्राय प्रतिपादयेत् जले वा क्षिपेत् । इत्यस्थिसंचयनिमित्तकं श्रा-
द्धप्रयोगः ॥ एवमस्थिसंचयनिमित्तकं श्राद्धं विधाय । गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य भक्ष्य भो-
ज्यपूर्णानि अष्टौ पात्राणि गृहीत्वा । श्मशान समीपमागत्य चिताया उत्तरत उपविश्य । ऋ

आदिके जलमें गेरदेवै ॥ इत्यस्थिसंचयनिमित्तश्राद्धप्रयोगः ॥ श्राद्धकरणेके अनंतर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य जल (भक्ष्य)
लहइ आदि (भोज्य) पायस चावल आदिसें आठ पात्र पूरणकरके श्मशानके समीप जावै और उत्तरकी तरफ बैठके

(ऋष्यादमुत्सेभ्यो देवेभ्य नमः) इस मंत्रसे । श्मशानवासिदेवोंकी श्मशानमें गध गुप्प घूप दीप आदिसँ पूजा करै पश्चात् पूर्व करे होथे आठ पात्रोंमेंसे एक पात्र लेके उचरकी तरफ बलिदान देवै । और (येऽस्मिन् श्मशाने०) इण दो श्रोत्रोंको पढ़े । इसी तरेऽश्मशानके पूर्व दक्षिण पश्चिम तरफ तीन बली तीनों दिशाओंमें देवै । और दोनों श्लोक पढता

व्यादमुत्सेभ्यो देवेभ्यो नमः । इति मंत्रेण श्मशानवासिदेवान् गंध माल्य धूप दीपादिभिः
श्मशाने पूजयेत् । ततो बलिदानम् । तत्र मंत्रः ॥ येऽस्मिन् श्मशाने देवाः स्युर्भगवतः स
नातनाः । तेऽस्मत्संकाशागृह्णतु बलिमष्टांगमक्षयं १ प्रेतस्यास्य शुभान् लोकान् प्रयच्छंतु च
शाश्वतान् । अस्माकमायुरारोग्यं सुखं च ददताच्चिरम् २ इति पठित्वा । एषोऽष्टाङ्गबलिः ।
शंकरादिश्मशानवासिदेवताभ्यो नमः इत्येकबलिदत्त्वा । एवंप्रदक्षिणक्रमेणापरबलित्रयं

जौरे (स्नेहकोफा अर्थ) जो देवता सदा रहने वाले इस श्मशानमें हैं वे मेरे सकास्तेति यह अक्षय १ अष्टागबलि ग्रह-
शुक्रते । और इस प्रेतको शुभ स्वर्गादि लोक और हमारेको आयु आरोग्य सुख चिरकालतक प्राप्त करो २ फिर द्विर्दोहरै

बलियोंको मीन धारकर हुगण्डे सिधै और शंकरादि इमशानवासि देवोंको विसर्जन कर देवै । पश्चात् अपसव्य होके
 हुगण्डे करके चिताको प्रोक्षण करे और पलाशकी लकड़ी करके मस्मीको कुर कर कर अंगुष्ठ अर्नाभिकसि । शिर
 छाती हाय पसवाडा पग इत्यादिस्थानोंकी अस्थि (हड्डी) चुगके एक पात्रमें घाले फिर पंचगव्य गंगाजल गुलाब
 पूर्वादित्रिषु द्वारेषु दद्यात् । ततस्तान् बलीन् वाग्यतः क्षीरेणाभ्युक्ष्य । शंकरादि देवताः
 स्वीयं स्वीयं स्थानं गच्छंतु इति देवताः । विसृजेत् ततोऽपसव्यं कृत्वा क्षीरोदकेन चितिं प्रोक्ष्य ।
 पलाशशाखया चित्तैर्मस्मापौह्याहुष्टकनिष्ठाभ्यां शिरसं उरसः पाण्योः पार्श्वयोः पादयोरस्थीन्या
 दाय पंचगव्येन गंगोदकेन सुगंधवारिणा च प्रक्षाल्य । गंधादिभिरभ्यर्च्य पलाशशुटे निक्षिप्य ।
 क्षौमवस्त्रेणाविष्टय । मृन्मये नूतनकुंभे निधाय शरावेण पिधाय तद्ग्रांडं वने वृक्षमूलेपंकशैवाल
 जलसं धीवे और चंदन केशर आदिसं चिरचके पलाशके पत्तमें घाले और रसमानीकपटसे बांधके मट्टिके छोटे कलशमें
 रस देवै । पश्चात् ढकणसे बंदकरके उसकलशको जंगलमें कोई दरसतकी जडके पास अथवा कीचड शिवालियुक्त
 (गढे) साडेमें स्थापन करे ।

फिर चिताकी संपूर्ण भस्म नदिके जलमें डालके चितास्थानमें गोमयका लेपा लगावे और पहलेंकी तरह पूजा बलिदान चारों तरफ करके दुग्धसे सोंच देवे पश्चात् तहां तीन कोणकी वेदी करके तीन श्राद्ध करे वेदियें तीन रेखा

युतगर्तेवानिधापयेत्-ततः चिताभस्मादिसर्वमेव नद्यादितोये निक्षिप्य । चिताभूमिं गोमयेन विलिप्य । तत्र पूर्वांक्तगंधादिपूजां कृत्वा बलिमंत्रेण बलीन् दत्त्वा । पूर्ववत् क्षीरेणाभ्युक्षयेत् । ततश्चितास्थाने त्रिकोणं स्थंडिलं कृत्वा । दक्षिणामुखः श्राद्धत्रयं कुर्यात् । तत्र देशकालौ संकीर्त्य । अमुकगोत्रस्यामुकमेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं चितास्थाने श्राद्धमहं करिष्ये इत्युक्त्वा । स्थंडिले रेखत्रयं कृत्वा । तत्र उत्तरे एकं उदकुमं तत्पश्चिमे द्वितीयं दक्षिणे तृतीयं च कुमं स्थापयेत्-ततः प्रतिकुमसमीपे कुशत्रयं धृत्वा-पिंडत्रयं कृत्वा । एकं पिंडं कुशादीनि चा

क्रूरके-उत्तर पश्चिम दक्षिण की तरफ जलसहित तीन करी (कुम) स्थापन करे, कलश कलशके समीप तीन तीन कुशा धरे । पश्चात् तीन पिंड बणावें और एक पिंडलेके

उत्तर कुंभके समीप श्मशानवासि देवतोंके अर्थ दमकी उपर देदेवे १ इसीतरे दूसरा पिंड पश्चिम कुंभके समीप
प्रेतके अर्थ गोत्र नाम उच्चारण करके दमपिं देवे २ तीसरा पिंड दक्षिण कुंभके समीप प्रेतके सखावोंको देदेवे ३ ।
दाय । असुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थ उत्तरे श्मशानवासिभ्यो देवताभ्यः भोजनार्थ
मयं पिंडः पानार्थं चोदकुंभ उपतिष्ठतामिति कुंभसमीपे दद्यात् १ ततः पश्चिमकुंभ
समीपे असुकगोत्र० प्रेत० एष ते पिंडो जलकुंभश्च भया दीयते तवोपतिष्ठतामिति दद्यात् २
दक्षिणे० असुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थं प्रेतसखिभ्यो भोजनार्थमयंपिंडः पानार्थं चोद
कुंभ उपतिष्ठतामिति दद्यात् । ततः पिंडान् गंध पुष्प धूप दीप पूगीफलादिभिः संपूज्याश्मशा
नवासिनो देवाः शवानांपरिकीर्तिताः तेभ्योन्नमुदकं कुंभमक्षय्यमुपतिष्ठतां प्रेतस्यास्यशुभान्
लोकान् प्रयच्छंतु च शाश्वतान् । अस्माकमायुरारोग्यं सुखंच ददतामिति २ इति प्रार्थयेत् ।
किर पिंडोंकी गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य पूर्णाफलादिकों करके पूजा करे और (श्मशानवासिनो० प्रेतस्यास्य०) इण दो
श्लोकोंसे प्रार्थना करे

पश्चात् कागलोंको तथा कूतोंको बलिकें देवता विसर्जन कर देवे और चिताभूमिके आछादनके अर्थ काठकी तिराटी (और जलका भराहुवा मटिका कुम्भ धर देवे) पश्चात् मुसाफिरोंके अर्थ कोई पोपल आदिका दरखत अथवा पापाण मही काठकामकान करा देवे अनंतर नदी आदिमें स्नान करके घरको जावे और वस्त्रों सहित भाई बायबोंके साथ

ततः कर्केभ्यः श्वभ्यां च बलिं दत्त्वा । देवतां विसृज्य । चिताभूमिराच्छादनार्थं लोकाचारा देव त्रिगंटी जलकुम्भं च दत्त्वा । विश्रामार्थं वृक्षं पाषाणकाष्ठादिभिर्वा स्थानं कारयेत् । ततो नद्यादिके स्नात्वा । गृहमागत्य । सचैलौ बंधुभिः स्नायात् ॥ इत्यस्थिसंचयः ॥ अथगंगाया मरिथक्षेपणप्रकारः । तत्र कदाचित्ताहिने वा पुत्र पौत्र सहोदरादिरस्थिकुम्भं उत्पाटय आदायपूर्व वत् अस्थिक्षेपनिमित्तं श्राद्धं कृत्वा । तीर्थं गत्वा स्नात्वा तान्यस्थीनि पंचगव्येन प्रक्षाल्य । हिरण्य सचैल स्नान करे ॥ इत्यस्थिसंचयः ॥ (अथ गंगाया अस्थिक्षेपणप्रकारः) अस्थिसंचयके दिन अथवा फेर कोई अवकारामिलनेसे पुत्र पौत्र भाई आदि अस्थिकुमल्यावे और पहलेकी तरह श्राद्ध करे फिर गंगामे जाके तिन अस्थियोंको पंचगव्यमे घाँवे और सुवर्ण मोती चादी मृगछाल मुगा सहत घृत तिलआदि मिलाने मटिके

पात्रमें रहै फिर दीक्षिणको देखता होया (नमोस्तु धर्मराजाय) इष्ट मंत्रको उच्चारण करके गंगाजिमें परवा देवे और
 स्नान करके सूर्यको नमस्कार करे फिर ब्राह्मणको सुवर्णदक्षिणा कर्ममूर्तिके अर्थ दान करे पश्चात् अपने घरको आकर
 मुक्ता रूप्य (मृगचरम) प्रवाल सध्वाज्यतिलैः संयोज्यामृत्संपुटे निधाय । दक्षिणां दिशं पश्य
 न्नाओं नमोस्तु धर्म राजाय पितुः प्रेतत्वमुक्तये। समे प्रीतः शुभं दद्यादस्मिन् लोके परत्र च इति
 वदन् जलं प्रविश्य । गंगायां क्षिप्त्वा तत्र स्नात्वा जलान्निष्कम्य। सूथ्याय नम इति सूथ्यं पश्येत्।
 तत आचम्य । विप्रसुख्याय यथाशक्ति हिरण्यदक्षिणां दद्यात् । तद्यथा औ अद्य कृतैतदस्ति
 प्रक्षेपकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतमसुकगोत्रायामुक्तं शर्मणे ब्राह्मणाय दानुमह
 सुत्सुजे इति। ततो गृहमागत्य। यथाचारं श्राद्धतर्पण ब्राह्मणभोजनादि कर्म कुर्व्यात्। एवं कृते
 प्रेतक्रियाकर्त्रोः स्वर्गः स्यात् । एवं च मातृकुलः पितृकुलः वर्ज्यान्यकुलोत्थस्यास्थिनयने धर्म
 कुलपरंपराकी रीतसैः एकोदिष्टश्राद्धः श्राद्धतर्पण ब्राह्मणभोजनः आदि कर्म करे । इस प्रकार श्राद्ध; और गंगाजिमें अस्थि
 डालने आदि कर्म करनेसे प्रिया; करनेवाला पुत्र; और प्रेत स्वर्ग जाता है। और माता पिताके कुलरहित अन्य किसीका भी

अस्य धर्मबुद्धिसं लेजावे तो दोष नहिहे । परंतु ब्रह्मके लोमसें लेजानेमें चांद्रायणव्रतसें शुद्धि होतिहे ॥ इत्यस्थि-
संयनविधिः ॥ अथ दश गात्र विधिः । पुत्रादिक ग्रामके बाहर देवस्थान नदीतीर अन्य कोई तीर्थ या तलाव कुवे
जगलमें या घरके बाहर शुद्धजगे जलके नजदीक जहां परपरासें करातेहे तहा प्रेतके मस्तक आदि दश अंग

शुद्ध्या दोषाऽभावः । द्रव्यादिलोभेन नयतः चांद्रायणाच्छुद्धिः । इत्यस्थिसंचयनविधिः स-
माप्तः ॥ ॥ अथ दश गात्रश्राद्धप्रयोगः ॥ पुत्रादिर्नामाद्बहिर्देवतायतने नदीतीरे अन्यतीर्थेवा
तडागादि तीरे अरण्ये गृहद्वारि वा शुचिदेशे यथाचारं यत्रेच्छा भवति तत्र प्रेतस्य मूर्ध्ना
दिनिष्पत्त्यर्थं पिंडदानं कुर्यात् । तत्रादौ नूतनमृन्मयभांडेन नद्यादिकं जलमानीय स्नात्वा । शु-
द्धवस्त्रे परिधाय । कुशोपग्रहः शुचि भूमौ पिंडदानं स्थानादेशान्यांदिशिसिद्धिप्रज्वाल्य । तत्रतंडु

वत्पत्र होनेके अर्थ पिंडदान करे । प्रथमतो नवीन घटसें जल लाके स्नान करे । फिर शुद्धवस्त्र, स्वाफा, दर्भा, पवित्री
आदियारणकरके शुद्ध साफ जगे ईशानकोणमें पाकके अर्थ अग्नि जलावे और घोयाहुवा साफ सोलह १६ तोला चा-

बल अछितरं पकावे. कागले. कुत्ते. आदिका जाबत रस्ते-पश्चात्, आचमन प्राणायाम मंत्ररहित करके, कुशत्रय, तिल,
 जल दाहणे हाथमें लेवे. संकल्प उच्चारण करे अपसव्य होके दक्षिणको मुख किया हुवा प्रथम श्राद्धके अर्थ स्वत
 मही. बालु रेत. की वेदी १ दक्षिणको नीची बनाके गोमयका लेपा देवे; उस पर दक्षिणाग्र त्रिकुश स्थापन करे ।
 लप्रसृतिद्वयं प्रक्षाल्य सुश्रुतं पचेत्॥ तत आचम्य ।तूष्णीं प्राणानायम्या कुशत्रय तिल जला
 न्यादाय। देश कालौ संकीर्त्या। दक्षिणमुखोपविश्या। अपसव्येन अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्यप्रथमे
 हनि शिरो निष्पत्यर्थं अवयवश्राद्धं करिष्य इति. संकल्प्य । गौरसृत्तिकया पिंडार्थं दक्षिणपुवं
 स्थानं निर्माया। गोमयोदकेनोपलिप्यात्तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणं कुर्यात्। ततः पुटके ज
 ल तिल गंध पुष्पाणि प्रक्षिप्या तत्पुटकं गृहीत्वा । अमुक० प्रेत शिरः पूरक प्रथम पिंडस्था
 नेऽश्रावने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशत्रयोपर्यवनेजनं दद्यात् । ततस्तिल
 फिर एक (दोने) पात्रमें जल, तिल, गंध, पुष्प घालके पात्रको दाहणे हाथमें लेवे। प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके
 थोडासा पानी वेदीपे डाल देवे । अनंतर तिल, घृत, सहत, दुग्ध, शर्करा आदि मिलके चावलके एक पिंड बण-

बावे और पिंड, कुशत्रयादि लेके प्रेतके अर्थ (शिरपूर्वक) अर्थात् मस्तक उत्पन्न करनेवाला पिंड संकल्प उच्चारण करके पितृतीर्थसे दर्माके उपर स्थापनकर देवे और हाथ धोके पहले तसे होये (अवंनेजन) जलपात्रसे पिंडपर प्र-
 घृत मधु दुग्धसिक्तं तक्षमेव पिंडमादाय । कुशत्रयादीनि चादाय । अमुकगोत्र० प्रेतशिरः
 पूरक एवमथमः पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशोपरिपिंडं दद्यात् । ततः प्रत्यवने
 जनदानम् । अमुक० प्रेत शिरः पूरक प्रथमपिंडे अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते मया दीयते तवोप
 तिष्ठतामिति पिंडोपरि पूर्ववद्दद्यात् । ततः प्रेतमुद्दिश्य तूष्णीमेव ऊर्णासूत्रं गंध पुष्प घूप
 दीप नैवेद्य तांबूल पूर्णाफलादिभिः पिंडं संपूज्या कुशादीन्यादाय । अमुक० प्रेत शिरःपूरक
 पिंडे एतानि ऊर्णासूत्रं गंधपुष्प घूप दीप तांबूलादीनि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामित्युत्सु
 जेत । ततः पिंडेष्वर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु इति पठित्वा । ताम्रादिपात्रे जल दुग्ध तिल
 त्यवनेजन, अर्थात् प्राणी डाल देवे । और पिंडकी पूजा करे; फिर प्रेतका निमित्तलेके मंत्ररहित ऊनकेतागे, चंदन,
 भृंगराजआदिके पुष्प, घूस, दीप, तुषारी, नैवेद्य, दक्षिणा आदिसे पिंडकी पूजन करे और संकल्प छोडके, एकपात्रमे

त्रल, दुग्ध, तिल, गंध, पुष्पडालकें कुशालकें प्रेतका गोत्र नाग उच्चारण करता हुआ एक १ या ३ या १० पिंडपै
 अंजली दानकरै । और तिल जलका एक पात्र भरकें पिंडके पास रखै । प्रेतका नाम उच्चारण करकें तिलतोयपात्र
 गंध पुष्पाणि कृत्वा । कुशत्रयमादाय । अमुक० प्रेत दाहजनित तृषोपशमनार्थ एष तिल
 तोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्येकं त्रयं वा दशकं पिंडोपरि दद्यात् । ततस्तिल
 तोयपात्रं पिंडसपीपे धृत्वा । अमुकगोत्र० प्रेत एतत्ते तिलतोयपूर्णपात्रं मया दीयते तवोपतिष्ठता
 मित्येकं तिलतोयपात्रं दद्यात् । ततः शेषजलेन पिंडोपरि जलधारां दद्यात् । अनादिनिधनोदेवः
 शंखचक्रगदाधरः । अक्षयः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव । अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युत
 श्शये नमस्यंति गोविंदं न तेषां विद्यते भयम् २ इति प्रार्थ्याकाकोसि यमदूतोसि गृहाणं बलिमुत्त
 मायमद्वारे गते प्रेते तमाप्यायतुमर्हसि ? इति काकेभ्यो बलिं दत्त्वा पिंडमुदके प्रक्षिप्यागवादिभ्यो
 अर्पण करै फिर वंचहोये अवशेष जल करकें पिंडके ऊपर (अनादिनिधन० अंतसोपुष्प०) इत्यादि श्लोक पठता
 दूता अंजली प्रदानकरै, पश्चात् (काकोसि यमदूतोसि) यह मंत्र पढकें कागलोंको बलिदान देवै और पिंड उठाके

जलमें डाल दें, अथवा गो, बैल, बकरी, कागले आदि जानवरोंको सुलादेवै । पश्चात् नदी आदिमें स्नान करके घरको आये और गोघ्रास देके एक ब्राह्मणको भोजन करावै, इति प्रथमदिन कर्म ॥ इसीतरे दूसरे, तीसरे, आदि दश दिनतक पिंडदान करें; परंतु सकल्प खुदे२ नामोंसे उच्चारण करें. (जैसे) दूसरे दिन—(कर्णाभिनासिकापूरको द्वि-

वा दत्त्वा। पुनः स्नात्वा। गृहमागत्य । गोघ्रासं दत्त्वा । ब्राह्मणमेकं भोजयेत् । इति प्रथमदिन कृत्यम् ॥ एवमेव द्वितीयादि दिवसेषु द्वितीयादि पिंडदानं तत्रायं विशेषः । द्वितीयदिने । अमुक लतोयांजली तेमया दीयते० । अमुक० प्रेत द्वितीयदिने । अमुक दिने । गलांसभुजवक्षः पूरकसृतीयः पिंडस्ते मया० । अमुक० प्रेत द्वि० द्वे तिलतोयपात्रे तेमया दीयते० ॥ तृतीय तीर) अर्थात् कान, नेत्र, नाक उत्पन्न करणेवाला. यहै पिंड में देताहों सो हे प्रेत तुमको प्राप्त होवो ऐसे उच्चारण करें, और दो २ या २० तिलतोय अजली. दो २ तिलतोयपात्र (डोना) प्रदान करें २ ॥ तीसरेदिन (गलांसभुजवक्षः पूरकसृतीयः) अर्थात् गला, खोबा, भुजा, छाति इनके उत्पन्न करणेवाला तीसरा पिंड और तीन या ३०

जलांजली, तथा तीन ३ तिलतोयपात्र (डोना) अर्पण करना चाहिये. ३ ॥) चौथदिन (नाभि लिंग गुद पूरकश्रुत्यः) नाभि, लिंग, गुदाके होनेके अर्थ चोथापिंड देवै, और चार या ४० अंजली, चार ४ जलतिलसे भरा हुआ पात्र (डोना) देवै ४ ॥ पांचवेंदिन, (जानु जंघा पादपूरकः पंचमः) ऐसा उच्चारण करै, अर्थात्

मया दीयते० । अमुक० प्रेत त्रीणितिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति० ३ ॥ चतुर्थ दिने० । अमुक० प्रेत नाभि लिंग गुद पूरकश्रुत्यः पिंडस्ते मया० । अमुक० प्रेत चत्वारस्तिलतोयांजलस्ते मया दीयते० । अमुक० प्रेत चत्वारि तिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तव० ४ ॥ पंचमदिने० । अमुक० प्रेत जानु जंघा पादपूरकः पंचमपिंडस्ते० । अमुक० प्रेत पंचतिलतोयांजलयस्ते मया दीयते० । अमुक० प्रेत पंच तिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तवोपतिष्ठतां० ५ ॥ षष्ठदिने । अमुक० प्रेत सर्व मर्मपूरकः षष्ठः पिंडस्ते मया दीयते० ।

गोडें, जांघ, पैर उत्पन्न करनेवाला पांचवां पिंड, पांच या ५० अंजली और पांच तिलतोयपात्र (डोना) दे देवै ५ ॥ उठे दिन (सर्व मर्मपूरकः षष्ठः) ऐसा वाक्य उच्चारण करै अर्थात् संपूर्ण मर्मस्थानके उत्पन्न करनेवाला यह छटा-

पिंडं, छे ६ या ६० अंजली और ६ तिलतोयपात्र (डोना) देवे ६ ॥ सातवें दिन (सर्व नाडीपूरकः) अर्थात् संपूर्ण नाडियोंको पूरणेवाला सातवा पिंड, और सात ७ या ७० अंजली, सात ७ पात्र दान करे ७ ॥ आठवें दिन असु० प्रेत पदतिलतोयांजलयस्ते० । असु० प्रेत षट्त्तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते० ६ ॥ सप्तम दिने । असुक० प्रेत सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिंडस्ते० । असुक० प्रेत सप्त तिलतोयांजलयस्ते मया दीयन्ते० । असुक० प्रेत सप्त तिलतोयपात्राणिते मया दीयन्ते० ७ ॥ अष्टमदिने । असुक० प्रेत दंतलोमादिपूरकोऽष्टमः पिंडस्ते० । असु० प्रेत अष्टौ तिलतोयांजलयस्ते० असु० । प्रेत अष्टौ तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते० ८ ॥ नवम दिने । असुक० प्रेत वीर्यपूरको नवमः पिंडस्ते मया दीयन्ते० । असुक० प्रेत नव तिलतोयांजलयस्ते मया दीयन्ते० । असुक० प्रेत० नव तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतां० ९ ॥ (दंत लोमादि पूरक) दंत, लोम (बाल) उत्पन्न करनेवाला आठवा पिंड, और ८ या ८० अंजली, आठ तिलतोयपात्र दान देवे ८ ॥ नवेंदिन (वीर्य पूरको नवमः) वीरज पूरणेवाला नोवा पिंड, जो ९ या ९०

अंजली, और नो ९ तिलतोयपात्र देवे ९ ॥ दशवें दिन (शुक्ल पिपासा पूरको दशमः) ऐसा वाक्य उच्चारण करके, मर्यात् भूख, प्यास पूरनेवाला दशवो पिंड, दश १०या १०० अंजली, और दश तिलतोयपात्र (डोना) दानकरे। और संपूर्ण विधि एकतरा जेहि जाणनी चाहिये १० ॥ पाक नहि होवे तो. फल, कंद या शाग, गुड, दुग्ध, चावल या दशमदिने। अमुक० प्रेतशुक्ल पिपासा पूरको दशमः पिंडस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति०। अमुक० प्रेत दशतिलतोयांजलयस्ते मयादीयते०। अमुक० प्रेत. दशतिलतोयांजलयस्ते मया दीयते०। अमुक० प्रेत दशतिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति दद्यात् १० ॥ अन्यत्सर्वसमानम् ॥ पाकामावे फलमूल शाक गुड दुग्ध शालि सक्तुयव पिष्टानामन्यतमेन पिंडा देयाः। येनद्रव्येण प्रथमं पिंडो दत्तस्तत्सजातीयेनैव पिंडान्तरमपि दद्यात् ॥ येनपुत्रादिना प्रथमः पिंडो दत्तः स एव पिंडांतरं दद्यात् ॥ अत्र केचित् नवश्राद्धं शत, जोराकोचून इत्यादि जिन्नसका पिंड देवै. परंतु जिस जिनस द्रव्यसे पहला पिंड दियाहै उसीसे दशरोजक देना चाहिये। और जो पुत्र या पौत्र. पहला पिंड दिया बोही दशपिंड दान करे। अर्थात् दूसरो नहि करे। केचित्

नवश्राद्ध विषमदिने, अर्थात् १३/५/७९ इणदिनोंमें विशेष करतेहैं सो इछावे तो करणा चाहिये करणसे जादा फल
 है नररणसे दोषभी नहिरे इति दशगानविधिः । अब सूतफके अतिम दिनकार्कर्म लिखतहैं । अर्थात्
 दशवें दिन दशया पिंड देकें प्रेतके स्पर्श होया हुवा वस्त्र आदि चाडालोकों, अथवा नाई, चाकर आदि कर्मणोंको दे
 विषमदिनेपु दशाहमध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति अकरणे प्रत्यवायो नास्ति इच्छा चेत्क
 र्त्तव्यम् । विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इति दश गात्रपूरक श्राद्धप्रयोगः ॥ अथाशौचान्त्यदिनकृत्यम् ॥
 आशौचांत्यदिने दशमं पिंडं समाप्य प्रेतस्पृष्टवासांसि अंत्यानामाश्रितानां च दत्त्वाऽमृन्मयपा
 कभांडानिच त्यक्त्वाऽगृहशुद्धिं विधायऽस्नात्वाऽकेशलोमनखान् यथाचारं वापयित्वा । तिल
 गौरसर्पपकलेन शिरश्चोन्मृज्य । शुद्धस्नानंच कृत्वाऽवासोयुगं परिधायऽआचम्यऽवाग्यतो वृ
 द्धे । और महीके घडे आदिपात्र त्यागके नवीन घडा, कलश, हाडी आदि पात्र घाले । और घरका शुद्धि करे । फिर
 केश, बाल नख, आदि परंपराके अनुसार लिवाके तिल, पीलीसरसोंका लेप शिरसे करके मल निकालके अछितर
 स्नान करे । और धौती, अंगोछा, शुद्ध वस्त्र धारके आचमन करे । मीन रत्नके वृषभ, गौ, सुवर्ण, गोलोचन, बहीं, बूर्वा

आदिकों स्पर्श करें। और ब्राह्मण-अभिकों, क्षत्रि-चाहन, शस्त्रको; वैश्य चात्रुक, रस्सीआदि; शूद्र लठी, छंडीको स्पर्श करके शुद्ध होजावे. (अथ एकादशाह दिनकर्म,) प्रातःकाल नदी, तलाव आदिमें स्नान करें। सुपेद धोया हुवा वस्त्र पहरे। आचमन प्राणायाम करें (यत्वगस्थि०) यहें मंत्र पढके. पंचगव्य प्राप्तन करें। और नवीन यज्ञोपवीत, चंदन, भस्म,

पमं गां सुवर्णं गोरोचनं दधिदूर्वांच स्पृष्ट्वा । ब्राह्मणोऽग्निं । क्षत्रियो वाहनायुधं । वैश्यः प्रतोदं
रश्मीन् वा । शूद्रो यष्टिच संस्पृश्य । शुद्धो भवेत् ॥ अथैकादशाहदिनकर्म ॥ तत्र प्रातः नद्या
दौ स्नात्वा । शुक्लधौतवाससी परिधाय । आचमनं प्राणायामं च कृत्वा । ओं यत्वगस्थिगतं
पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निर्वेधनंमिति मंत्रेण पंचगव्यप्राश
नं नूतनयज्ञोपवीतधारणं । भस्मधारणंच कृत्वा । कुशोपग्रहः विधिवत्संध्यावंदनं यथाशक्ति गा
यत्रीजपं विष्णुपूजनं च कुर्यात् ॥ अथ वृषोत्सर्गः ॥ तत्र तावत्-प्रागुदङ्क प्रवणे विविके निर्जने
दर्भाधारण करके विधिपूर्वक संध्या, ब्रह्मयज्ञ, गायत्रीजप, श्रीविष्णु शालिग्रामजीका पूजन करना चाहिये । इति शु-
द्धिप्रकारः ॥ अथ वृषोत्सर्गविधि लिख्यते ॥ प्रथम तो वृषम (सांड) को निराले मनुष्य रहित जंगलमें चार ४ या २

नवश्राद्ध विषमदिने. अर्थात् १३।५।७।९ इणदिनोंमें विशेष करतेहैं सो इछावे तो करणा चाहिये करणसे जादा फल
 है नरुणसे दोपभी नहिंहे इति दशगात्रविधिः। अब मृतकके अतिम दिनकार्कर्म लिखतहैं। अर्थात्
 दशवें दिन दशवां पिंड देके प्रेतके स्पर्श होया हवा वस्त्र आदि चांडालोंको, अथवा नाई, चाकर आदि कर्मियोंको दे
 विषमदिनेषु दशाहमध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति अकरणे प्रत्यवायो नास्ति इच्छा चेत्क
 र्त्तव्यम्। विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इति दश गात्रपूरक श्राद्धप्रयोगः॥॥अथाशौचान्त्यदिनकृत्यम्॥
 आशौचांत्यदिने दशमं पिंडं समाप्य प्रेतस्पृष्टवासांसि अंत्यानामाश्रितानां च दत्त्वा। मृन्मयपा
 कभांडानि च त्यक्त्वा। गृहशुद्धिं विधाया। स्नात्वा। किशलोमनस्वान् यथाचारं वापयित्वा। तिल
 गौरसर्पकल्केन शिरश्चोन्मृज्य। शुद्धस्नानं च कृत्वा। वासोयुगं परिधाया। आचम्या। वाग्यतो वृ
 देवै। और मधीके घडे श्रादिपात्र त्यागके नवीन घडा, कलश, हांडी आदि पात्र घाले। और घरका शुद्धि करे। फिर
 केश, बाल नस्त्र, आदि परंपराके अनुसार लिवाके तिल, पीलीसरसोंका लेप शिरसे करके मल निकालके अछितर
 स्नान करे। और धौती, अंगोछा, रुद्र वस्त्र धारके आचमन करे। मौन रखके वृषभ, गौ, सुवर्ण, गोलोचन, दर्शन, बुरी

आदिकों म्यशं करे। और ब्राह्मण-अग्निकों, क्षत्रि-वाहन, शस्त्रको; वैश्य चानूक, रस्सीआदि; शूद्र लाठी, छंडीकों स्पशं करके शुद्ध होजावे. (अथ एकादशाह दिनकर्म,) प्रातःकाल नदी, तलाव आदिमें स्नान करे। सुपेद धोया हुवा वस्त्र पहरे। आचमन प्राणायाम करे (यत्वगस्थि०) यहै मंत्र पढके. पंचगव्य प्राशन करे। और नवीन यज्ञोपवीत, चंदन, भस्म,

पमं गां सुवर्णं गोरोचनं दधिदूर्वांच स्पृष्ट्वा । ब्राह्मणोऽग्निं । क्षत्रियो वाहनायुधं । वैश्यः प्रतोदं
रश्मीन् वा । शूद्रो यष्टिच संस्पृश्य । शुद्धो भवेत् ॥ अथैकादशाहदिनकर्म ॥ तत्र प्रातः नद्या
दौ स्नात्वा । शुक्लधौतवाससी परिधाय । आचमनं प्राणायामं च कृत्वा । ओं यत्वगस्थिगतं
पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निर्वेधनंमिति मंत्रेण पंचगव्यप्राश
नं नूतनयज्ञोपवीतधारणं । भस्मधारणंच कृत्वा। कुशोपग्रहः विधिवत्संध्यावंदनं यथाशक्ति गा
यत्रीजपं विष्णुपूजनं च कुर्यात् ॥ अथ दृषोत्सर्गः । तत्र तावत्-प्रागुदक्र प्रवणे विवित्केनिर्जने
दर्भाधारण करके विधिपूर्वक संध्या, ब्रह्मयज्ञ, गायत्रीजप, श्रीविष्णु शालिग्रामजीका पूजन करना चाहिये । इति शु-
द्धिप्रकारः ॥ अथ दृषोत्सर्गविधि लिख्यते ॥ प्रथम तो वृषम (सांड) को निराले मनुष्य रहित जंगलमें चार ४ या २

नवश्राद्ध विपमदिने. अर्थात् १।३।५।७।९ इणदिनोंमें विशेष करतेहैं सो इछावे तो करणा चाहिये करणेसे जादा फल हे नरुणसे दोषभी नहिहै इति दशगात्रविधिः । अब मृतकके अतिम दिनकार्कर्म लिखतहै । अर्थात् दशवें दिन दशवां पिंड देकें प्रेतके स्पर्श होया हवा वस्त्र आदि चांडालोंको, अथवा नाई, चाकर आदि कर्मियोंको दे विपमदिनेषु दशाहमध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति अकरणे प्रत्यवायो नास्ति इच्छा चेतक सेव्यम् । विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इति दश गात्रपूरक श्राद्धप्रयोगः॥॥अथाशौचान्त्यदिनकृत्यम् ॥

आशौचांत्यदिने दशमं पिंडं समाप्य प्रेतस्पृष्टवासांसि अंत्यानामाश्रितानां च दत्त्वा।मृन्मयपा कभांडानिच त्यक्त्वा।गृहशुद्धिं विधाया।स्नात्वा।केशलोमनखान् यथाचारं वापयित्वा । तिल गौरसर्पकल्केन शिरश्चोन्मृज्य । शुद्धस्नानंच कृत्वा।वासोयुगं परिधाया।आचम्या।वाग्यतो बृ देवै । और महीके घडे आदिपात्र त्यागके नवीन घडा, कलश, हांडी आदि पात्र घाले । और घरका शुद्धि करे । फिर केश, बाल नख, आदि परपराके अनुसार लिबाके तिल, पीलीसरसोंका लेप शिरसे करके मल निकालके अछितर स्नान करे । और धौती, अगोछा, शुद्ध वस्त्र धारके आचमन करे । मौन रखके चूपम, गौ, सुवर्ण, गोलोचन, दही, दूबी

(ओं सुमुखैकदंतम्) इत्यादि गणपति स्मरण करके श्रीगणेशकी पूजन करे और एक वेदियें बल बिछाके चाव-
 डोंकी कुटी (पुत्र) करके उनके ऊपर वृषमातृकाका आवाहन करे (आवाहन करनेका प्रकार) अक्षत पुष्प
 कलशस्थापनं पूजनंच करिष्ये इति चोक्त्वा । ओं सुमुखश्रैकदंतश्रेत्यादि स्मरण पूर्वक गणेशं
 संपूज्य । तत्रैव स्थंडिले तंडुलपुंजेषु वृषमातरावाहयेत् । तद्यथा । अक्षतानादाय ओं नंदा
 वसुमनाचैव सुशीलाच पयस्विनी । सुरमी पंचमी प्रोक्त्वा पंचैताः वृषमातरः १ नंदामावाह
 यामिः प्रतिष्ठापयामि १ । ओं सुमनामावा० प्रतिष्ठा० २ । ओं सुशीलामावा० प्रतिष्ठा० ३ ।
 ओं पयस्विनीमावा० प्रतिष्ठा० ४ । ओं सुरमीमावाहयामि प्रतिष्ठापयामि ५ इत्यावाह्य । ओं
 मनोज्ञतिष्ठेषतामिति प्रतिष्ठाप्य । ओं नंदार्येनमः १ ओं सुमनार्ये नमः २ ओं सुशीलार्ये
 ३ ओं पयस्विन्यै ० ४ ओं सुरम्येनमः ५ एवं नाम मंत्रेण प्रत्येकं गंधादिभिः संपूज्य ।
 शयै शयै ठेके । नंदा १ सुमना २ सुशीला ३ पयस्विनी ४ सुरमी ५ यद् पंच वृषमातृकाहे ईनको हृदी
 २ । ओं नंदार्येनमः नंदाभावाहयामि प्रतिष्ठापयामि १, ओं सुमनामावाहयामि २, ओं सुशीलामावाहयामि ३, ओं

या १ बछ्ठी करके सहित लेजावे । परंतु वृषभ तीन वर्षका होवे । और मनोहर, देसने योग्य गुणों करके परिपूर्ण होवे । तब बस्त्र, पुष्प माला, झालरी, घंटा, सुवर्णपट्टिका पैजणी आदि आभूषणों करके शोभायमान करे । फिर विधिपूर्वक उ-
त्सर्जन करणा चाहिये (विधि लिखते हैं) कर्ता आसनपै बैठके पूर्वकों मुख किया हुवा दर्मा धारण करके, आचमन

वने । गोमध्ये वत्सतरी चतुष्टयेन द्वाभ्यामेकेन वा सहितं त्रिहायनं मनोज्ञं दर्शनीयं उक्तगुण
विशिष्टं वृषं वस्त्र माल्य किंकणी घंटा हेमपट्टिकादिभिर्वृषोचितभूषणैर्भूषयित्वा तत्रानयेत् ।
ततः स्वासने माङ्गुल्य उपचिश्य । कुशोपग्रहः । आचम्य । प्राणानायम्य । कुशत्रय तिलजला
न्यादाय । देश कालो संकीर्त्य । ॐ अथैकादशेऽह्नि । अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वका
क्षय्यस्वर्मेकामो वृषोत्सर्गंकारिष्ये । इति संकल्प्य । तद्गत्वेन गशेशपूजा वृष मातृपूजा रुद्र

प्राणायाम करे । फिर कुशत्रय, तिल, जल लेके संकल्प उच्चारण करके कहेकी आज मैं अमुकगोत्र अमुकनामके प्रेत-
का प्रेतत्व दूर होने, और अभय्य स्वर्ग प्राप्तिके अर्थ वृषोत्सर्ग करता हूँ । ऐसे कहेके संकल्पका जल त्याग देवे । पश्चात्

उसको करेकी शास्त्रके हेल मुजब काम करना । फिर ब्राह्मण कहेकी कराणा । ऐसा करणके अनंतर । एक बार
 णको (होता) होम करने वाला बरणन करे, और उसीके पासमी पहलेकीतर कुहावे [अथ । अग्निस्थापन प्रकार
 हस्ते पुष्प चंदन तांबूल वासांस्यादाय । देश कालौ संकीर्त्य । ओ अघ कर्तव्यः वृषोत्स
 र्गाङ्गभूत होमकर्मणि कृताकृतावक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मण
 मेभिः पुष्पाक्षतचंदनतांबूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । इति ब्रह्माणं वृणुयात् । ओ वृ
 तोस्मीति प्रतिवचनम् । ओ यथा विहितं कर्म कुरु । इति यजमानो वदेत् । ओ करवाणी
 ति तत्प्रतिवचनम् । पुनः पुष्पादीन्यादाय । ओ अघकर्तव्य वृषोत्सर्गाङ्गभूत होम कर्तुममुक
 गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चंदन तांबूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे । इति हो
 तारं वृणुयात् । ओ वृतोस्मीति प्रतिवचनं । ओ यथा विहितं कर्म कुरु इति वदेत् । ओ क
 रवाणीति तत्प्रतिवचनम् । ततो होता वेदिकायां तुष केश शर्करादि रहितायां हस्तमात्रपरिभि
 स्सितेह] होमकरनेवाला तुष, केश, ककर आदि निषिद्ध वस्तुरहित एक हस्तपरिमाण (हस्तचौविश २४ अंगुल

पयस्विनी, आवाहयामि० ४, ओं, सुरभी, आवाहयामि० ५, इन मंत्रोंसे आवाहन करके स्थापन करे। फिर छंदे नाम मंत्रोंके गण, पुष्प, घृण, दीप आदिसु पूजा करे। पश्चात् वेदिके ईशानकोणमें कलशास्थापन विधिसे कलशा स्थापनकरके उसके ऊपर तामेकी रुद्रप्रतिमा, घण्टे गंध, पुष्प आदि, षोडशोपचारसे पूजे। फिर तत्रैव ईशान्या कलशस्थापनविधिना कलशा संस्थाप्याः तदुपरि ताम्रं छंदं निधाय। षोडशोपचारैः संपूज्य। स्थंडिले पंचभूसंस्कारान् संपाद्य। छंदनामान्मन्त्रिं स्थापयेत्। तद्यथा बाह्योत्तका स्थंडिल (वेदी) वनाके अग्निस्थापनः करदेवैः प्रथमं। तो ब्रह्मा। एकः ब्राह्मणको बनाने और

(कलशास्थापनमंत्रा) ओं मूरति, मूमिरसीति, मूरुपर्शनम्। ओं घान्त्यमसि धिमुहि इति धान्त्यक्षेपणं। ओं आजिञ्च कश्शेति कलशा स्थापनं। ओं अरुणस्योत्तं, इति नलपूरण। ओं असो, पवित्रमसीति वंशवेष्टनं। ओं या, फलिनोरिति, पूगीफलः। ओं परिव्राजप तिरिति पचरत्नानि। ओं हिरण्यगंभेति हिरण्यं। ओं गन्धर्वारामिति गंध। ओं याऽभ्योपधीरिति सर्वोपधि। ओं स्योना पृथिवीनो इति सप्तमृदः। ओं काडालकाडादिति, दूर्वा। ओं अस्त्येवोनिपदनुमिति पचपल्लवान्। ओं पाकेत्रेस्यो इति दर्भमपवित्रं। ओं पूर्णो दर्शति पूर्णपात्रे। ओं श्रीश्च ते रस्पीरिति श्रीफल च स्थापयेत्। ओं मनोऽनूतिरिति प्रविष्टा। ओं तत्वायामीति वरुणामावाह्य संपूज्य सर्वे सशुभ्रा। ओं कलशास्य मुच्छे, इत्याद्यभिपत्रण।

अभ्युक्षण करके (तूष्णीं) मंत्र बिगर अपने अगड़ी कांसीके पात्रमें रखके दूसरे पात्रसे बंदकर वृण, काष्ठ आदिके ऊपर अग्नि स्थापन कर दें। अथ कुशकंडिका लिख्यते। अग्निके दक्षिण भागमें एक १ हाथ भर भूमि छोडके शुद्ध दर्भा आदिका आसन दें। उसपर पूर्वको अगड़ीका हिस्सा किया होई धर्मा विछाके पहलें बरखन क्रिये होये ब्राह्मणको अथवा (पंचाशत् ५०) कुशवृणके ब्रह्माको अग्निके परिक्रमा कराके आसनपे, बैठादेवे, और कर्हकी यदां तुम ब्रह्मा होके स्थित होवो। फिर एक प्रणीतापात्र अपने अगड़ी रखके जलसे भरें उसको ऊपरसे त्रिकुशसे

पर्यन्तं पस्तिरणं कृत्वा। ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्कुशपात्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यं स्थाली चरुस्थाली संमार्जनाय आछादित करके ब्रह्माकी तरफ देखता हुआ अग्निके उत्तर तरफ दर्माके ऊपर प्रणीतापात्र करदेवे (परिस्तरण) बर्हिनाम ६४ कुशाके पत्रोंकाहे सो इसका चोग हिस्सा १६ लेके अग्निकोणसे ईशानपर्यंत ब्रह्मासे अग्निदेवतक नैर्ऋतिकोणसे वायुकोणतक अग्निदेवसे प्रणीतापर्यंत चार ४ चार पत्रोंको अग्निके बाहरकर बिछादेवे। फिर अग्निसे उत्तरकी तरफ पश्चिमसे लेके पवित्र छेदनके अर्थ तीन ३ कुशा पवित्र करणके अर्थ बीचकापचा निकाला हुआ अग्रभागसहित दो २ पत्र स्थापनकरें और प्रोक्षणीपात्र १ (आख्य) घृतके लिये १ थाली (चक) सीर पकानेकी १ थाली हाथमें रख-

वा जानना) चतुरस्र (चार कोणयुक्त) वेदिकों कुशावों करके संमार्जनकरे (वहाँ) इन कुशावोंओ ईशानकोणमें
 त्यागके शुद्ध गोमय और जलसे हीपके उसके बीचमें सुवेसें (प्रागद्य) अर्थात् पूर्वकी तरफ अग्रभाग जिनके ऐसी
 तायां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमुह्यातान् कुशानैशान्यां परित्यज्य । गोमयोदकेनोपलिप्यां
 तन्मध्ये सुवमूलेन प्रागग्रप्रदेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य । उल्लेखन क्रमेणाऽनामिका
 ङ्गुष्ठाम्यां मृदसुधृत्य ऐशान्यां तत् क्षिप्त्वा तं देशं जलेनाभ्युक्ष्यात् तत्र वृष्णीं कांस्यपात्रस्थमग्निं
 स्थापयेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः प्रिस्तरणभूमिं त्यक्त्वा । तत्रासनं दत्त्वा । तदुपरि प्रागग्रान् कु
 शानास्तीर्या ब्रह्माणमग्निं प्रदक्षिण क्रमेणानीयात् । अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव इत्यभिधाय । ब्रह्माणं क
 ल्पितासने उपवेशयेत् । ततः प्रणीतापात्रं पुरत कृत्वा जलेनापूर्य्य । कुशैराच्छाद्य । ब्रह्मणो मुख
 मवलोक्याऽग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदद्यात् । ततः परिस्तरणम् । बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय । प्रागग्रै
 ॥ श्वतुभिर्दग्धैः आम्रेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निं पर्य्यन्तं नैऋत्याद्वायव्यान्तं अग्निः प्रणीता
 (प्रादेशमात्र) दश १० अंगुळ रूकी नीन ३ रैत्ताक्रमसे दक्षिणसेछेकें उत्तर उत्तर छित्ते । पश्चात् उनके ऊपर जलसे

गेरे । फिर पवित्रा प्रोक्षणीपात्रमें रखदेवै और प्रणीताका जल प्रोक्षणीमें घाले, प्रोक्षणीके जल करके, स्थापन करी
 होई । आज्यस्थाली आदि वस्तुवोंको सिंचे और अग्नि, प्रणीताके नीचे प्रोक्षणीपात्रको स्थापन करदेवै । फिर घृतकी थालीमें
 घृत घाले, चरुयालीमें साफ कियाहुवा चावल गेरूके प्रणीताके जलसे घोंत्रे । फिर प्रणीताका जल, दुग्ध डालके (पायस) सीर
 निधाय । प्रोक्षण्युदकं भूमौ त्रिः क्षिप्त्वा । पवित्रे प्रोक्षण्यां निधाय । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्ष
 णं । प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनं । अग्निः प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय । आज्य
 स्थाल्यामाज्यं निरूप्य । चरुस्थाल्यां तंडुलान् निक्षिप्य । प्रणीतोदकेन तांस्त्रिः प्रक्षाल्य । तत्र
 प्रणीतोदकं दुग्धं च प्रक्षिप्य । आज्यं, पायसचरुं च गृहीत्वा । श्रपणार्थं युगपद्भ्रौ निधाय । तृणं
 प्रज्वाल्य । प्रदक्षिणमाज्यचर्व्वोः समंतान् भ्रामयित्वा । वन्हौ तत्प्रक्षिप्य दक्षिणहस्तेन स्रुवमा
 दायाधोमुखमग्नौ तापयित्वा । सव्ये पाणौ कृत्वा । दक्षिणहस्तेन संमार्जनकुशानामग्नैरग्रं मध्यैर्म
 पकनेके अर्धं चरुपाली और घृतयाली दोनों साथहि अग्निपर रखदेवै । फिर एक तृणजलाके घृत, चरुके बाहरकर
 भ्रमाके अग्निमें डालदेवै दाहणे हायसे वाय लेवें । नीचेको पुसकर अग्निमें तपाके संमार्जन कुशाकरके अग्रभागसे

सुवेगा मुख बीच जइसे लेरका माग पुंछे । फिर प्रणीताके जलसे प्रोक्षण करके आपणें दक्षिणभागमें स्थाप-
न करे और आज्य, सीर उगके अपने अगाडी रखे आज्यसे उत्तर पीसाहोया पूषाका चरु रखके आज्यको तीनवेर
ऊपरको पवित्रसे उछाले और अछितर देसे. तृण, बाल, जानवर आदि होबे तो निकाल देवे । फिर प्रोक्षणीके ज-

ह्यं मूलेर्मूलं सुवं संमृज्याप्रणीतोदकेनाग्न्युक्ष्यापुनः प्रतप्य । दक्षिणतो निदध्यात् । ततः स्व
यमाज्यं चरुं च उद्रास्यास्वपुरत आज्यं तदुत्तरतश्चरुं चरोरुत्तरतः सिद्धं पिष्टकचरुं च निधा
या आज्ये प्रोक्षणीविदुत्पूय । अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तद्विरसनं पुनः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायाड
पयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिप्तः
प्रक्षिपेत् । तत उपविश्या सपवित्र प्रोक्षण्युदकेनाग्निं पर्युक्ष्या प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय । सज

लतां तीन बेर चछाले और सडाहोके उपयमनकुशा वामे हाथमें लेवे । प्रजापतिका ध्यान करताहुवा पलाशकी
तीन ३ समिध घृतसे तर करकर मंत्रहित अग्निमें डाल देवे । फिर बैठके पवित्रसहित प्रोक्षणीके जलसे अग्निका
पर्युक्षण करे. और प्रणीताके पात्रमें पवित्रा रखके दाहणा गोडा जांघसहित बीचको करके कुशासे बसाके धन्वा-

रूपकरे । फिर जलतीहोई अग्निके भीतर सुवेसें (आल्य) घृतका होम करे, और अन्नोप सुवेसें रहाहुवा प्रोक्षणमें प्रयोग करता जावे । (स्वाहा) यहे होमके (इदं०) यहे त्याग जानो (इहरति० १ इहरमध्वं० २ इहृति० ३ इहस्वधृति० ४

घनं दक्षिणजानुं निपात्य । कुशाग्नेण ब्रह्मणान्वारब्धः सुसमिद्धेऽग्नी आज्येनष्टुह्ययात् । तद्यथा
 ओं इह धृतिः स्वाहा इदनम्रये० १ ओं इह रमध्वठं० स्वाहा इदमम्रये० २ ओं इह धृतिः स्वाहा
 इदमम्रये० ३ ओं इह स्वधृतिः स्वाहा इदमम्रये० ४ उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन्
 त्स्वाहा इदमम्रये० ५ ओं रायस्योपमस्मासुदीधरत्स्वाहा इदमम्रये० ६ ततअन्वारब्धः ओं प्रजा
 पतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम १ ओं इंद्राय स्वाहा इदं० २ ओं अन्नये स्वाहा इदं० ३
 ओं सोमाय स्वाहा इदं० ४ इत्याधारावाज्यभागौ हृत्वा, पायसचरुमभिवार्ये, आदय, संस्रवांवि-

उपमृज० ५ रायस्योप० ६ यह छआहुतो अग्निदेवके अर्थ होमे । (प्रजापतये०) यहे प्रजापतिके अर्थ । (इंद्राय०) यह इंद्रको (अन्नये०) यह अग्नि० (सोमाय०) यहे सोमके अर्थ होमकरे, इनको आधार आज्यभाग होमकतेहैं । फिर

पायस (स्वीर) लेकें त्यागकेविना । (अग्नये०१ रुद्राय०२ शर्वाय०३ पशुपतये०४ उग्राय०५ अशानये०६ भवाय०७ महादेवाय०८ ईशानाय०९ यहै नो आहुतो अग्निमे देवौ पथात् पिष्टकचरु लेकें घृतसें तर करे और (पूषागान्धेत्न०) ना एव छुहुयात् । ओ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०१ ओ स्त्राय स्वाहा इदं० २ ओ शर्वाय स्वाहा इदं० ३ ओ पशुपतये स्वाहा इदं० ४ ओ उग्राय स्वाहा इदं० ५ ओ अशानये स्वाहा इदमशानये०६ ओ भवाय स्वाहा इदं० ७ ओ महादेवाय स्वाहा इदं०८ ओ ईशानाय स्वाहा इदमीशानाय ९ इति हुत्वा। पिष्टचरुमभिघार्यं छुहुयात् । ओ पूषा गान्धेत्तु नः पूषा रक्षतु सर्वतः । पूषा वाजसनेतु नः स्वाहा इदं पूष्णे न मम ? ॥ ततः पायसपिष्टकास्यां अग्नेरुत्तरतः, पूर्वोद्धै, ओ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते इति छुहुयात् । तत आज्येन ओ भूः स्वाहा इदमग्नये०१ ओ भुवः स्वाहा इदं वायवे०२ ओ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०३ इत्त मत्रसे होमके (इदपूष्णे०) यहै त्याग करदेवे । फिर पायस, पिष्टक, दोनोमिलके अग्निके उत्तर पूर्व भागमे (अग्नयेस्विष्टकृते०) यह स्विष्टहोम करे और घृतकारके (ओभूः ओभुवः ओस्वः) यह महाव्याहृतिहोम अग्नि वायु

मूर्धे इन्देवोके अर्थ होमके (स्वप्नोऽअग्ने० ओंसत्वन्नो० ओं अयाशान्ने अयितेशतं० ओं उदुत्तमं०) यैहं वारुण होव-
 ओं त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाः । यजिष्ठो वान्हितमः शोशु
 चानो व्विश्वा द्वेषार्ठेसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाम्यां०४ ओं सत्वन्नोऽअग्ने व्वमो
 भवोतीनेदिष्टोऽअस्य ऊषसो व्व्युष्टौ अव यक्ष्वणो व्वरुणठं. रराणोवीहि मृडोकठं० सुहवोनऽ
 एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाम्यां०५ ओं अयाशान्नेस्यनमीशास्ति याश्च सत्वमित्वमयाऽअसि ।
 अयानो यज्ञं बहास्ययानोयेहि भेषजठं० स्वाहा इदमग्नेये०६ ओं ये ते शतं. वरुणं ये सहस्रं य
 ज्ञियाः पाशा विततामहान्तः । तेभिर्नोऽअद्यऽसवितोतविष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा
 इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ७ ओं उदुत्तमं
 व्वरुणपाशमस्मदवाधमं । व्विमद्रथम ठं० श्रथाय अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये
 स्याम स्वाहाइदं वरुणाय०८ ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०९ इति नवाहुतयो हुत्वा।
 करे. । फिर० (ओं प्रजापतये०) यैहं प्रजापतिके अर्थ होमके संखवाशान अर्थात् प्रोक्षणिके पात्रका घृतप्राशन करे.

और आचमन करके पवित्रसे लिये होये प्रणीताके जलसे (सुमित्रियान०) इस मंत्रकरके यजमानके अभिषेक करे और (दुर्मित्रिया) यह मंत्र पठके प्रणीताका पात्र न्युञ्जकरके पवित्री अग्निमें डालदेवे. (यहा पूर्णाहुतिहोम और बर्हिहोम सूत्रकारने नहिलिखेहै; परतु के चित् मेयिलग्रयोमें लिखा हुवाहै. इसवास्ते विकल्प दिखताहै सो

संश्रवमाशनमाचमनंच कृत्वा॥पवित्रभ्यांजलमानीय । तेन ओं सुमित्रियानऽआपऽओषधयः
सन्त्विति मंत्रेण शिरः संसृज्य । ओं दुर्मित्रियास्तस्मै संतुयोस्मान्द्वेष्टि यं च यं द्विष्म । इति

प्रणीतोदकमैशान्यां दिशि निनयेत् प्रणीता विमोकः पवित्रप्रतिपत्तिः अत्रपूर्णाहुतिहोमो व
र्हिहोमश्च कृताऽकृतः) (ततस्तरणक्रमेण बर्हिं रुथाप्य हस्तेन ऐशान्यां क्षिपेत् । वा वन्हो
क्षिपेत्) ततो ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ तद्यथा । कुशत्रय तिल जलान्यादाय, ओं अद्य कृते

तत् वृषोत्सर्गाङ्गभूत होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिं
शिष्टाचार हो जैसा करलेणा चाहिये) फिर निछाई होई बर्हिं दर्सां लडाके ईशानदिशामें रखदेके अथवा अग्निमें डालदेवे
और ब्रह्माके अर्थ पूर्ण पात्र दक्षिणासहित प्रदानकरे । पूर्णपात्रदानकरणके अनंतर होताके अर्थ सुवर्ण. वस्त्र कांस्य

पात्राणि दक्षिणा देके (ओं नमस्ते रुद्र०) इत्यादि रुद्राध्यायका १६ मंत्र पठे । पश्चात् आचार्य वृषभके कुंकुम
 केशर (रोली) आदिसं त्रिशूल, और चक्र लिखे । फिर, लोहारकेद्वारा दक्षिण पार्श्वमें त्रिशूलका और वामपार्श्वमें
 चक्रका चिन्ह करादेवे, अथवा दक्षिणपार्श्वमें चक्र और वाम पार्श्वमें त्रिशूल करे परंतु शिष्टपरंपरा व्यवहारसे चिन्ह-
 देवतमसुकगोत्रायासुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेनतुम्यमहं संप्रददे इति ब्रह्मणे दक्षिणां
 दद्यात् । ओं स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो होत्रे सुवर्ण वस्त्रयुग्मं कांस्यानि दक्षिणात्वेन दत्त्वा
 प्रतिवचनानंतरं । ओं नमस्ते रुद्रेति षोडशर्चां रुद्राध्यायं जपेत् (रुद्रजपाऽकरणे प्रत्यवायोभव
 ति) तत आचार्यः कुंकुमेनवृषस्य त्रिशूलं चक्रं च कृत्वा (त्रिशूलं दक्षिणे पार्श्वे वामे चक्रं तु विन्य
 सेदिति वचनात्) लोहकारमाहूय । दक्षिणपार्श्वे त्रिशूलेन परस्मिन् चक्रेण व्यत्ययेन वा यथा
 चारं अंकयेत् । ततो वत्सतरीसहितं वृषभं ओं हिरण्यवर्णाः शुचय पावका यासु जातः कश्य
 करणा चाहिये और यौ अंकन मेथिलीयोंने औरहातरसे लिखाहे सो उनहीकी सांप्रदा समजणी चाहिये । फिर अंक
 न करणेकेवाद नुडईसहित वृषभको (हिरण्यवर्णाः०) इत्यादि च्यार मंत्रोंकरके और (ज्ञानो देवी०) इस मंत्रसे

अन्त्ये०

॥ ३१ ॥

स्नानकराकं लोहकी घंटा. पेंजणी. सुवर्णपट्टिका आदि आमुष्ण पहरावे और सुशोभित करके. (गायत्री-अधम-
पो याभिध्रः । याऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानः आपः शं स्यो नाभवंतु १ ओं यासां राजा
वरुणो याति मध्ये सत्यानृते ऽअवपश्यन् जनानाम् । या ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानऽआ
पः शं स्यो नाभवंतु २ ओं यासां देवा दिवि कृष्वन्ति मक्ष्यं याऽअन्तरिक्षे बहुधा भवंति । या
ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानऽआपः शं स्यो नाभवंतु ३ ओं शिवेन माचक्षुषा पश्यतापः
शिवया तत्वोपस्पृशत त्वचं मे । वृतरुच्युतः शुचयो याः पावकास्तानऽआपः शठे०स्यो नाम
वंतु ४ इतिचतसृभिः । ओं शन्नो देवी रभिष्टयऽ आपो भवंतु पीतये । शंध्योरभिस्रवंतु नः ?
इत्यनेनच स्नापयित्वा । लोहवंदानृपुर कनकपट्टिकादिभिः सर्वानलंकृत्य । सावित्रीमवमर्षणं
स्त्राध्यायं पुरुषसूक्तं । ओं यद्देवा देवहेडनमिति ऋक् त्रयं च जपेत् । ततो वृषभस्य
दक्षिणकर्णं । ओं पिता वत्सानां पतिरस्थानामथो पितामहतां गर्गराणां वत्सो जरायुः प्रति
पण. रुद्राध्याय. सहस्रशीर्षा०यद्देवा देवहेडन०) इत्यादि कुष्मांड सूक्त इण मंत्रोक्तो पाठ करे । पश्चात् वृषभके दक्षि-

मा०टी

॥ ३१ ॥

णकानमं (ओं पिता वत्सानां० वृषो हि भगवान्०) यहै २ मंत्रजपके , उत्तरको मुख कियाहुवा सव्यसे वृषभका पुच्छ पकटकें संकल्प चचारण करे और प्रेतके निमित्त ईश्वरके अर्पण करदेवे और संकल्पका जल पृथिवीपे

धृक् पीपृषऽआमिक्षा घृतं तद्धस्परेतः १ वृषोहि भगवान्धर्मश्रतुष्पादप्रकीर्तितः । वृणोमि त्वा महं भक्त्या स मां रक्षंतु सर्वतः २ इतिमंत्रद्वयं जपित्वा - । उदङ्मुखः सव्येन वृषपुच्छं मृहीत्वा । कुशत्रय तिल जलान्यादाया । ओं अद्यैकादशेन्दि, अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेत त्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गलोकप्राप्तिकाम एनं वृषं रुद्रदेवतं यथाशक्त्यलंकृतं गंधपुष्पाद्याद्यचितं त्रिशूलचक्रांकितं वत्सतरीयुतं अहमुत्सुजामि । ओं एतं युवानं पतिं वो ददामि तेन क्रीडंती श्व रथप्रियेणमानः । सापत्यजनुषासुभगारायस्योषेण समिषा मदेम इत्युक्त्वा । सतिलमुदकं भूमौ क्षिपेत् । (नीलवृषे नीलपद प्रक्षेपः) इत्युत्सृज्य । ऐशान्यां दिशि पंचपदानि चालयेत् । ततो त्वसतरीसहिताय वृषभाय नमः० इति मंत्रेण पाद्यार्थानुलेपन पुष्प घूप दीप नैवेद्या त्यागदेवे । इस तरे वृषोत्सर्ग करके ईशानकी तरफ पांच पैर धरे और (वत्सतरीसहिताय वृषभाय०) इस मंत्रसे

बछडीसहित वृषभयी. अर्घ. चदन पुष्प घूप. दीप. नैवेद्य आदि षोडशोपचारं पूजन करके। बछडीयोंके बीच खड़े होये वृभयो (ओं मयोभूरभि० १ यास्ते अग्ने० २ यावोदेवाः० ३ रुचन्नो० ४ तत्वायामि० ५ स्वर्णधर्म० ६) इत्यादि छ दिभिः सांगं वृषभ संपूज्य । ततो वत्सतरीमव्यगतं वृषभमभिमंत्रयेत् । तत्र मंत्राः। ओं मयो भूरभिमाद्याहि स्वाहा, मास्तोसि मस्तां गणः शंभूर्मयोभूरनिमाद्याहि स्वाहा, वस्यूरसि हुव स्वाच्छंभूर्मयोभूरभिमाव्वाहि स्वाहा १ ओं यास्ते अग्ने सूर्ये रुचोदिवमातन्वंतिरश्मिभिः ता भिन्नो अद्य सर्वाभीरुचेयनायनस्कृधि २ यात्रोदेवाः सूर्यरुचोगोष्वश्वेषुजारुचः इंद्राग्नीताभिः सर्वाभीरुचन्नोयत्त बृहस्पते ३ रुचन्नोधेहि ब्राह्मणेषु रुच ठं० राजसुनस्कृधि रुचंविश्येषु शूद्रेषु मायिधेहिरुवा रुचम् ४ तत्वायामि ब्रह्मणा० ५ स्वर्णधर्मः स्वाहा, स्वणार्कः स्वाहा, स्वर्णशुक्रः स्वाहा, स्वर्णज्योतिः स्वाहा, स्वर्णसूर्यः स्वाहा, ६ इति। ततोऽपसव्यं कृत्वा। दक्षिणामुखः पातितवामजानुः यव तिल जल वृषपुच्छ मोटकान्यादाय । ओं स्वधापितृभ्यो मातृभ्यो मंत्रोसे प्रार्थना करानि चाहिये। पश्चात् अपसव्यहोके दक्षिणको मुख. पातित वामजानुकरे और यव तिल जल वृषभ पुच्छ

दर्मा ग्रहण करके (ओ स्वधापितृम्य०) इत्यादि मंत्रोंके द्वारा पितृर्तर्पणकरै; और अजली देवै । फिर. यजमान
 ब्राह्मणोंको दुलाकें उच्चारणकरै और कहैकी इण बछडीयोंका घृत. दूध. किसीको नहि पीणा चाहिये; और वृषभ
 (साड) को हल. बोजे आदिकेलिये नहि जोडे इणकातो केवल गोमूत्र. गोमयही लेणा योग्यहै. यहै सबको
 बधुम्यश्चापि तृप्तये, मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये चान्ये पितृपक्षजाः। गुरुश्वशुरबंधूनां ये। कुलेषु स
 मुद्भवाः। ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः। वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभंतां प्रीतिसुत्तमामि
 ति मंत्रेणांजलित्रयं दद्यात् । ततो दाता ब्राह्मणानाहूय वक्रोक्तिभिः पदैः (न चाज्यं नच
 तत्क्षीरं पातव्यं केनचित्क्वचित् । नवाह्योसौ वृष श्रेषामृते गोमूत्र गोमये ?) इति श्रावयेत् ।
 ततः पायसं श्रपयित्वा । त्रिप्रभृतीन् यथाशक्ति यथासंभवं ब्राह्मणान् भोजयेत् । ततो बहुतीय
 यतृणेरण्ये अथवा बहु गोधन संकुले गोकुले वत्सतरीयुतो गोपतिः क्षेपणीयः । निर्गती गो
 सुणादेवै । पश्चात् पायस (खीर) पकाकें तीन या ५ शक्तिमाफिक ब्राह्मण भोजन कराकें बहोत घास, दूर्वा
 आदियुक्त जगलमें अथवा भोतसी गौके समुहमें बछडी सहित वृषभको रसदेवै । वृषभ विसर्जन करणके अनंतर

ब्राह्मणोंको दक्षिणा रुद्रकुम्भ देके विसर्जन करे और विष्णुस्मरण करे । इति वृषोत्सर्गः ॥ धेनुदानकी विधि लिखते हैं मृतकके दूसरे दिन । शुद्ध भूमिमें शास्त्रके लिखे होये गुणोंवाली गौ. पूर्वका मुख करके स्थापन करे और उत्तम ब्रा-

पती विप्रेभ्यो दक्षिणां रुद्रकुम्भं च दत्त्वा । विष्णुं स्मरेत् । तत अनेन वृषोत्सर्गेण प्रेतस्य प्रेतत्व-
विमुक्तिरस्तु इति पठेत् । एवं वृषोत्सर्गविधिं नरो यः करोति भक्त्या निज पूर्वजानां । उद्धृत्य
तांडुर्गतिपकमग्नान् स्वयं सलोकं समुपैति शंभोः ? इति वृषोत्सर्गपद्धतिः समाप्ता- ॥

॥ अथ धेनुदानविधिः ॥ तत्र आशौचान्तद्वितीयेन्हि पुण्यदेशे यथोक्तलक्षणवतीं गां प्राङ्मु-
खीमवस्थाप्य यथोक्तक्षणं सत्पात्रं तदभावे अनिपिद्धब्राह्मणं उपवेश्य । स्वयं गोपुच्छदेशे प्रा-
ङ्मुख उपवेश्य । सव्येन आचम्य। प्राणानायम्याकुशत्रय तिल जलान्यादायादेशकालौ संकी

क्षणको बैठाने सुद यजमान गौके पुच्छके पाए पूर्वको मुख करके बैठे । सव्यसे आचमन, प्राणायाम, करे, और
कुरानय तिल जल लेक सकल्प उच्चारण करे। गौ ब्राह्मणकी पूजा करके परिक्रमा देवे. प्रणाम करे । फिर गौका पुछ,

कुशत्रय तिल जलसहिब लेकें, सवत, मास, पक्ष, तिथि, वार आदिका उच्चारण करै (अमुकगोत्र नाम वाले प्रेतका प्रेतभाव निवृत्त होनेके अर्थ और स्वर्गप्राप्तिके अर्थ यहै गो बछडेसहित, दूध देनेवाली, सुवर्णशृंग, रोप्य (चादी) त्त्य (अपसव्येन) ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकस्वर्गकामो गोदानम हं करिष्ये (सव्यं) तदंगतया गो ब्राह्मणस्य च पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य । ब्राह्मणं पा द्यादिभिः संपूज्य । हस्ते पुष्प चंदन तांबूल वासांस्यादाय । ओं अद्य करिष्यमाणगोदानार्थ ममुकगोत्रममुकशर्माणं त्वामहं वृणे इति वृणुयात् । ओं वृतोस्मीति प्रतिवचनम् । ततो गां गंधादिभिः संपूज्य । प्रदक्षिणां कृत्वा प्रणम्य उदङ्मुखो गोपुच्छं गृहीत्वा । कुशत्रय तिलजला न्यादाय, देशकालौ संकीर्त्य, ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक स्वर्गकाम इमां गां सवत्सां पयस्विनीं सुवर्णशृंगीं रोप्यशुरां ताम्रपृष्ठो वस्त्रयुगच्छन्नां कांस्यपानीयपा त्रां पैत्तिल दोहां रुद्रदेवतां अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुम्यमहं संप्रददे । इति संक के मूर तामेकी पीठ, वस्त्र, कासीका पीनेका पात्र, पित्तलका दोहणेका पात्र, इत्यादि सामग्रियुक्त, रुद्र देवता, अमुक

गोन नाम वाले आपके अर्थ देताहों) ऐसे पठके संकल्पका जल पुच्छसहित ब्राह्मणके हाथमें दे देवै । फिर (ओं-स्वस्ति) ऐसे कहनेके अनंतर (ओं यज्ञ साधन०) इस मंत्रसे प्रार्थना करके दान प्रतिष्ठाके अर्थ सुवर्ण दक्षिणा देवै ल्य । गोपुच्छं सतिल कुशोदकं विप्रहस्ते दद्यात् । ओं स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततः ओं यज्ञ साधनभूता त्व विश्वस्यावप्रणाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ? इति पार्थ्य । दक्षिणा द्रव्यादिकमादाय । ओं अद्य कृतैतत् गोदानप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतमसुकगो त्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं संप्रददे । इति दक्षिणां दद्यात् । ततः प्रति ग्रहीता ओं स्वस्तीत्युक्त्वा । यथाशाखं ओं कोदात्कस्माअदात्कामोदात्कामायादात्कामो दा ता कामः प्रतिग्रहीता कामैतसै । इतिकामस्तुतिजपेत् । ततो दाता अनेन गोदानाल्य यज्ञकर्मणाश्री नारायणः प्रीयतामिति पठित्वा । विप्रं विसृज्य । कर्मपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । और लेनेवाला ब्राह्मण (ओं स्वस्ति) कहके (ओं कोदात्कस्मा०) यहै काम स्तुतिपठे । फिर विष्णुके अर्पण करके ब्राह्मणकों विसर्जन करे । कर्म पूर्तिके अर्थ विष्णु स्मरण करे ।

इति गोदान विधिः ॥ अथ एकादशाह श्राद्ध लिख्यते । प्रातः काल नदी, तलाव आदिमें स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करे । संध्या, ब्रह्मयज्ञ, जप आदि नित्यक्रिया समाप्त करके नदीके तीर या देवस्थानमें जाकर श्राद्धभूमि शुद्ध करे; गोमयका लेप देवे; जलता हुआ अंगार फेरे. सुपेद मट्टी या बालु रेत विछावे; तिल पीलिसरसों विकीरण करे । फिर इतिगोदानविधिः समाप्तः ॥ ॥ अथेकादशाह श्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र प्रातः नद्यादौ स्नात्वा । शुद्धवाससी परिधाय । संध्यादि नित्यक्रियां कृत्वा । नद्यादि तीरे देवालये वा गत्वा । तत्र श्राद्धभूमिं परिकल्प्य, गोमयोदकाम्यामुपलिप्य, ज्वलदंगारैः संशोध्य, गौरसृत्तिकयाच्छाद्य, तिलैर्गौरसर्षपैश्च विकीरेत् । ततो मध्याह्ने, पुनः स्नात्वा, शुचिदेशे गोमयोपलिप्तभूमौ तिलान् विकीर्ये । तत्र सर्पिंडादिद्वारा स्वयं वा नूतनमृन्मयभांडेन सकृत् षोडशश्राद्धार्थं पाकं कुर्यात् अथवा आमन्त्रेण संपादयेत् । ततः पाके सिद्धे मध्याह्ने पुनः स्नान करके शुद्ध स्थानमें गोमयका लेप दीर्घईर्जों तिल गेरे, और तहां भाई, बांधव आदि द्वारा नवीन मट्टीके या घाटके पात्रमें षोडश श्राद्धके अर्थ पाक तैयार करे ।

पाक होनेके बाद आमनके समीप तिलोंके तेल करके दीपक जलावै । काग, मुर्गा, ध्वान, सूर आदि निगिद्ध जानवरोंको हठादेवै, और श्राद्ध मकानके बाहरफर बग्न लपेट देवै । फिर श्राद्धकर्ता आसनपें प्राङ्मुख होके बैठे पगोंके तले त्रिकुश स्थापन करे । कर्म पात्रमें जल, तिल, गन्ध, पुष्प घालके सब्यसे आचमन, प्राणायाम करे । पश्चात्

आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य, संस्थाप्य । काककुक्कुटादीन् श्राद्धापहंतृनप सारयेत् । श्राद्धदेशावरणंच कुर्यात् । ततः कर्ता स्वासने प्राङ्मुख । उपविश्य । पादयो रथः कुशत्रयं धत्वा । कर्मपात्रं जल तिल गंध पुष्पादिभिः प्रपूर्य, सब्येन आचम्य, प्राणानाय म्य, कुशोपग्रहः । ओं अपवित्रः पवित्रो वा० ओं पुंडरीकाक्षः पुनात्विति कुशत्रयानीतजले न श्राद्धद्रव्याण्यात्मानं च प्रोक्षयेत् । तत ओं भूम्यै नमः । ओं भगवत्यै गयायै नमः । ओं भगवते गदाधराय नमः । इति नत्वा । कुशत्रय तिल जलान्यादाय । देशकालौ संकीर्त्य-

कुशा धारण करके (अपवित्र० पुंडरीकाक्षः पुनात्) इस मंत्रसे श्राद्धसामग्री और अपने शरीरको जलसे प्रोक्षण करे । फिर भूमि, गया, गदाधरको नमस्कार करके कुशत्रय तिल जल लेवे सकल्प पठके अपसव्य होवे और कहेकी अमु-

कप्रेतका प्रेतत्वनिवृत्ति और पितृत्वप्राप्तिके अर्थ अथ, मासिक, त्रिपाक्षिक, द्वितीयमासिक, तृतीयमासिक, चतुर्थ, पंचम, ऊनपाणमासिक, पाणमासिक, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, ऊनाब्दिक, द्वादशमासिक, यह सोलहें श्राद्ध अपने २ समयपर करने योग्यथा परंतु द्वादशकेदिन सपिंडन श्राद्ध करनेके अधिकारके अर्थ आज ग्यारहवें

(अपसव्येन) अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्ति पूर्वक पितृसमत्व प्रारप्यर्थ आद्य, मासिक, त्रिपाक्षिक, द्वितीयमासिक, तृतीयमासिक, चतुर्थ, पंचम ऊनपाणमासिक, षण्मासिक, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादशमासिक, ऊनाब्दिक, द्वादशमासिकानि स्वका लकर्तव्यानि षोडशश्राद्धानि सपिंडीकरणार्थमेकादशेहन्यपकृष्य एकोद्विप्त विधिना करिष्ये । इतिसंकल्पयेत् (एकादशमासाभ्यंतरे ऽधिमासपाते षोडशपदस्थाने सप्त

दिन संपूर्णके स्वाचकर एकोद्विष्टविधि करके एकसाथहि करताहूँ । यह उच्चारण करके संकल्पका जल भूमिमें त्याग देवे यहि ग्यारह मासके भितर अधिक मास होवे तो सतर १७ श्राद्ध करे. अर्थात् अधिकमासको १ अधिक करे । फिर गाय-

नीका तीनवेर जप करके (देवताम्यः०) यहै मंत्र तीनवेर पठे, और तिल, पीलिसरसों लेके (नमो नमस्ते०) इस मंत्रसे सर्वत्र विकीरण करे, और तिल कुशाकी निवी कटी मागमें धारण करे । फिर एक पात्रमें जल भरके दमासे

दशपदंप्रयोज्यं) ततो गायत्री त्रिर्जपित्वा । ओं देवताम्यः पितृम्यश्च इति त्रिर्जपेत् । ततः तिल गौरसर्पपान् गृहीत्वा । ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषिकेश रक्षतां सर्वतो दिशः १ इति मन्त्रेण सर्वत्र विकीर्य निवीबंधं कुर्यात् ॥ ततः कस्मिंचित्पात्रे जलं गृहीत्वा दमरालोड्य । ओं यहैवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा व्ययम् । अग्निर्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्च त्वर्ढ० हसः १ यदि दिवा यदि नफेमेनांसि च कृमा व्ययम् । वायुर्मा तस्मादे नसो विश्वान्मुञ्च त्वर्ढ हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि षकृमा वयम् । सूर्यो मा तस्मा देनसो विश्वान् मुञ्चत्वर्ढ० हसः ३ इतिकूष्मांडसूक्तेनाऽभिमंत्र्य । ओं श्वादि दृष्टदृष्टिपातात् । शिलवे (यहैवा देव हेडन०) इत्यादि कूष्मांडसूक्त पदके अभिमन्त्रण करे, और श्वान, गुर निपिद्ध जानवरोंकी कस्मिंच

तथा शूद्र आदिके संपर्कदोषसे इण पाकः आदि सामग्रीकी पवित्रता होवो, ऐसे कहके जलकरके पाक प्रोक्षण करें। फिर
 अपसव्य, दक्षिणमुख, पातितवामजानु करके अपने अगाडी सोलह १६ चट स्थापन करें। तिलोंको लेके चटोंको स्पृश
 शूद्रादि संपर्कदोषाच्च । पाकादिनां पवित्रताऽस्तु इत्युत्का, तेन पाकं प्रोक्षयेत् । ततोऽपसव्यं
 कृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजानुः (स्वाग्ने दक्षिणाग्रान्षोडश कुशचदान् संस्थाप्य । कुश
 तिलान् गृहीत्वा चदान् स्पृष्ट्वा । ओं इह लोकं परित्यज्य गतोसि परमां गतिं। मनसा वायुरु
 पेण चटे त्वाहं निमंत्रये १ इति मंत्रेण सर्वत्र तिलान् विकीर्यो अमुकगोत्र अमुकप्रेत आद्या
 दि षोडश श्राद्धनिमित्तोयं ते क्षण उपतिष्ठतामिति क्षणं दत्त्वा पाद्यादि देयं) । अथासना
 दि दानम् । तत्र कुशत्रय, तिल जलान्यादाय । ओं अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत आद्य श्राद्ध
 इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा ऋष्टु कुशत्रयरूपमासनं प्रथमं सर्वतः पश्चि
 कारताडुवा (इहलोकं०) इस श्लोकसे निमंत्रण करें । फिर तिल गेरके क्षण, पाय, अर्घ आदि दान करें (अथास-
 नादि दानं) कुशत्रय तिल जल लेवे, प्रेतका गोत्र, नाम उच्चारण करें । हे प्रेत, आद्य श्राद्धके निमित्त यह कुशाका

१) त्रीका तीनवेर जप करके (देवताम्यः०) यह मंत्र तीनवेर पठे. और तिल, पीलिसरसों लेके (नमो नमस्ते०) इस मंत्रसे सर्वत्र विकीरण करे. और तिल कुशाकी निवी कटी यागमें धारण करे। फिर एक पात्रमें जल भरके दर्भासे दशपदंम्रयोज्यं) ततो गायत्री त्रिर्जपित्वा। ओं देवताम्यः पितृभ्यश्च इति त्रिर्जपेत्। ततः तिल गौरसर्पपान् गृहीत्वा। ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हविकेश रक्षतां सर्वतो दिशः १ इति मंत्रेण सर्वत्र विकीर्य निवीबंधं कुर्यात् ॥ ततः कस्मिंचित्पात्रे जलं गृहीत्वा दर्भरालोड्या ओं यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा व्यग्रअग्निर्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्च त्वर्ध० हसः १ यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि च कृमा व्यग्र। वायुर्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्च त्वर्ध हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि षट्कृमा वयग्रसूर्यो मा तस्मादेन सो विश्वान् सुञ्चत्वर्ध० हसः ३ इतिकृष्णान्डसूक्तेनाऽभिमंत्र्य। ओं श्वादि हुद्दृहृदिपातात्। शिखरे (यद्देवा देव हेडन०) इत्यादि कृष्णान्डसूक्त पठके अभिमन्त्रण करे, और स्नान, गूरु निषिद्ध जानवरोंकी दृष्टिसे

चतुर्थमासके अर्थ ६ पाचवें मासके अर्थ ७ ऊन पाणमासके अर्थ ८ पाणमासके ९ सप्तम मासके १० अष्टम मासके
 निमित्त इदमासनं ५ पुनः ओं अद्यामुकं प्रेत चतुर्थे मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ०
 ६ ओं अद्यामुकं प्रेत पंचम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ० ७ पुनः ओं अद्या
 मुकं प्रेत ऊन पाणमासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ० ८ ओं अद्यामुकं प्रेत षण्मासिक
 श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ० ९ ओं अद्यामुकगोत्रं प्रेत सप्तम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमास
 नं ते ० १० ओं अद्यामुकं प्रेत अष्टम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ० ११ ओं अद्यामु
 कं प्रेत नवम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ० १२ ओं अद्यामुकं प्रेत दशम मासिक
 श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते ० १३ ओं अद्यामुकं प्रेत एकादश मासिक श्राद्धनिमित्त इदमा
 सनं ते ० १४ ओं अद्यामुकं प्रेत ऊनाब्दिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते मया दीयते तवोपति
 ष्टामित्युत्सृजेत् १५ ओं अद्यामुकगोत्रं प्रेत द्वादश मासिक श्राद्धनिमित्तक इदमासनं ते
 १६ नवम मासके १७ दशम मासके १८ एकादश मासके १९ ऊन वार्षिकके अर्थ २० द्वादश मासके अर्थ सोहल-

आसन तुमहों देताहों सो मेरा दियाहुया आपकों प्राप्त होवो ऐसे कहकें सीधी त्रिकुशाका १ आसन पश्चिम तरफ दक्षिणको फण करके स्थापन करदेंवै १ परंत. (द्विगुण भुज) घुणी करी होई और वंटी होई दर्माका (मोटक) न देंवै; कारण (विष्णुपुराण, हेमाद्रि, निर्णयसिंधु, बृहद्रुकडपुराण, वायुपुराण, कारिका, अंत्येष्ट्यर्क, विध्वनायी, धर्मसिंधु मगतं दक्षिणात्रमुत्सृजेत् ? (नात्र द्विगुणभुज (मोटक) रूपं सपिंडीकरणं यावदृष्टुदर्भः पितृक्रिया इति विष्णुपुराणीयात्) पुनः कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्यामुक० प्रेत मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते मया दीयते० २ पुनः कुशत्रयादी० ओं अद्यामुक० प्रेत त्रिपाक्षिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ३ पुनः कुशत्रयादी० ओं अद्यामुक० प्रेत द्वितीय मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ४ पुनः ओं अद्यामुक० प्रेत तृतीय मासिक श्राद्ध आदि) न पूर्ण मशान्बोधोंमें निषेध कियाहै. अर्थात् सपिंडीकरण श्राद्धके पहले सीधी त्रिकुशासे क्रिया करणी। सपिंडीके अनंतर मोटक रूप दर्मा धारण करणी चाहिये १ इसीतरे । फिर कुशात्रय तिल, जल लेकें मासिक श्राद्धके निमित्त च दूधरा आसन देंवै २ और त्रैवर्षिक श्राद्धके अर्थ तीसरा ३ द्वितीयमासिकके अर्थ चौथा ४ तृतीयमासके अर्थ ५

पत्र, घालदेवे । फिर प्रेतके अर्घ्यपात्रोंकी संपत्ति पूर्ण होई ऐसे पढके-पहला १ पात्र बाँमें हाथमें लेके पवित्री, याने
 कुशाग एक पत्ता, पत्तलके ऊपर अगाडी रखे, और पात्रके ऊपर दाहणाहाय रखके (या दिव्या आपः०) इस मंत्र
 प्रेतपात्राणामर्घार्चनविधेःपरि पूर्णताऽस्तु इति पठित्वा । प्रथम पात्रस्थं पवित्रं पलाशपत्रे
 छत्वा । अर्घ्यपात्रमादाया । ओं या दिव्या आपः पयसा संबभूवुथ्याऽअन्तरिक्षा उतैपाथिर्वीर्याः
 हिरण्यवर्णाः यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शठ० स्यो नाः सुहवा भवंतु । इति मंत्रेणाभिमंत्र्य
 दक्षिण हस्तेन । ओं अद्यामुकगोत्र० अमुकप्रेत आद्य श्राद्धे एषते हस्तार्वो मया दी
 यते तवोपतिष्ठतामिति पितृतीर्थेन प्रथम पवित्रोपरि अर्घजलमुत्सृजेत् । अर्घ्यपात्रं च पुरतः
 स्थापयेत् ? । ततो द्वितीयपात्रस्थं पवित्रं पलाशपत्रे धत्वा । अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । ओं या दि
 व्या इत्यभिमंत्र्य । ओं अद्यामुकगोत्र० प्रेत मासिक श्राद्धे एष ते हस्तार्वो मया दीयते तवो
 कर्कं अभिमंत्रण करे । फिर दाहणे हाथमें लेके । प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करताहुवा आद्य श्राद्धके निमित्त पंचे
 पर स्थापन करिहोई पवित्रीपे अर्पका जल देदेवे और अर्घ्यपात्र अगाडी स्थापन करदेवे, १ । इसीतरे दूसरे पात्रको लेके

वां प्रागन सर्वके पूरे तरफ देते १६. अधिकमास होवे तो सतरवां १ अधिक देना चाहिये । फिर (अपहृता०) यह मंत्र पढ़के तिल आसनोपर रिकीरण करे, और सोलह १६ पात्र (डोनों) में एक, एक, एक, दुर्माका पत्ता दक्षिणको अग्र-भाग करके रखे (इसीका नाम एक, एक परित्राहै) अथवा एकहि पत्ता सर्वके अर्थ स्थापनकरे । क्युंकी बोहि पत्र

मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति योडशं सर्वतः पूर्वगतामुत्सृजेत् ३६ । तत ओं अपहृताऽअसुरा रक्षाई०सि वेदिगद इति वामावत्तन सर्वत्र तिलान् विकीर्ये । पोडशाऽर्धपात्रोपरि प्रत्येकं दक्षिणायं पवित्रैकैकं धृत्वा । तेषु ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवतु पीतयोशं व्योरभि श्रवन्तुन इति प्रत्येकं जलं शिप्त्वा । ओं तिलोसि सोम देवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वव या यितृल्लोकान्प्रीणाहि नः । इति प्रत्येकं तिलान् प्रक्षिप्यात्तूष्णीं गंध पुष्पाणि प्राक्षिपेत् । ततः

ध्वजंगे अर्गं देतिदृके उवा २ कर रखता जाते, । पत्ता रखनेके अनंतर, संपूर्ण पात्रोंमें (शन्नो देवी०) यह मंत्र पढ़ता हवा जल डाले, (तिलोसि सोमदेवत्यो०) इस मंत्रके द्वारा सर्व पात्रोंमें तिल भरे; और मंत्रसहित, गंध, पुष्प, वृक्षसी-

आदि मंत्र जगहें स्थापन करके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करता हुआ प्रेतके अर्पण करदेवै और संकल्प छोडके इण षोडश श्राद्धोंकी पूजा परिपूर्ण होवो ऐसे प्रार्थना करे और जलकी कार आसनोके बारह करदेके चोकोण या

ल जलान्यादाय । ओं अद्यामुकगोत्र० अमुकभेत आद्यादि द्वादश मासिकान्त षोडश श्राद्ध निमित्तकानि एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल वासांसि एक तंत्रेण ते मया दीयन्ते तवोप तिष्ठतामित्युत्सृजेत् । तत अभीषां षोडश मासिक श्राद्धानामर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु इति पठित्वा । जलेन आसनानि वेष्टयित्वा चतुष्कोणादि मंडलं कुर्यात् (अत्र परकीयभूमौ श्राद्धकरणे ओं इदमन्नमेतद्भूस्वामि पितृभ्यो नम इति घृतादियुक्तमन्नं दर्भेषूत्सृजेत्) तत उष्णमन्नं ताम्रादिपत्रिण प्रत्येकं षोडश पात्रेषु परिविश्य, घृत जल व्यंजनानि चोपनीय, अन्ने

त्रिकोण मंडल करदेवै । यदां दूसरे कामका न होने तो उसके मोहेये मालरुको (इदमन्नमेतद्भूस्वामि पितृभ्य०) इस मंत्रसे बलिदान करे । पञ्चात्र गरम २ अन्न तामे आदिके पात्र करके छुदा २ या (एकही पत्रमें) घृत, जल, (व्यंजन) शाग

पित्री पनत्यं रसे (या दिव्या०) इमं अभिर्षयण करके प्रथम मासके निमित्त अर्घ देवै, २ और तीसरे पात्रको
 देके, त्रिपक्षिक श्राद्धनिमित्तक०३। चोथेसे दिनीयमास निमित्त०४। पांचवेंमें तृतीय मास०५। इसीतरे, छठे०६। सातवें०७।
 आठवें०८। नौवें०९। दशवें०१०। ग्यारहवें०११। बाराहवें०१२। तेहरवें०१३। चौदहवें०१४। पंद्रहवें०१५। सोलहवें०१६। पात्र

पतिष्ठनामिति पवित्रोपरि पूर्ववद्दद्यात् । पात्रं च पुरतः स्थापयेत् एवं त्रिपक्षिक०३ द्वितीय
 मासिक०४ तृतीय मासिक०५ चतुर्थ०६ पंचम०७ ऊन पाण्मासिक०८ पाण्मासिक०९ सप्त
 म०१० अष्टम०११ नवम०१२ दशम०१३ एकादश०१४ ऊनाब्धिक०१५ द्वादश मासिक श्रा
 द्धनिमित्तं चार्घं पूर्ववद्दद्यात् (अत्र पात्राणां उत्तानत्वं एव नन्युञ्जवत्त्वम्) ततो गंधादि दा
 नम् । तत्र नायत्सर्वेषु चेटेषु । गंध पुष्प घृष दीप तांबूल वस्त्रादीन्यासाद्य । हस्तैः कुशत्रय ति

करके पदलेकी नाह पवित्रोके पने रूपर अर्घ जल देता जाते, और अर्घपात्र अगाडी रसे । यहां अर्घपात्रको सुधाहि
 रस्वणा चाहिये (नुञ्ज) घुद नहि करणा चाहिये । पश्चात् गंध, पुष्प, घृष, दीप, तांबूल, पूर्णाफल, यज्ञोपवीत, बस्त्र

करके बायें हाथसों अन्नपात्र स्वर्ण करता हुवा दाहणे हाथमें कुशत्रय तिल जल लेके संकल्प उच्चार करे । हे प्रेत,
आप श्राद्धनिमित्तक यहै घृतादि सामग्री सहित उचम अन्न आपके अर्थ देताहूं सो तुमकों प्राप्त होवो । ऐसा कहके,

करण पात्रं स्पृशन् । दक्षिणहस्ते कुशत्रयादान्यादाय । ओं अध्यामुकगोत्राऽमुकप्रेत आद्य श्राद्धे
इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यासन वामभागे जलमुत्सृजेत्
१ तत अनेनैव क्रमेण द्वितीयपात्रं वामकरेण स्पृशन् दक्षिणकरे कुशत्रयादीन्यादाय । ओं
अध्यामुकगोत्रं प्रेत मासिकश्राद्ध इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं ते मया दीयते ० २ एवं
तृतीयपात्रं वामकरेण स्पृश्या । ओं अध्यामुकगो० प्रेत त्रिपाक्षिकश्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्क
रसहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ३ एवमेव द्वितीयमासिक ० ४ तृतीय ० ५
चतुर्थ ० ६ पंचम ० ७ ऊनपाण ० ८ पाण ० ९ सप्तम ० १० अष्टम ० ११ नवम ० १२ दशम ० १३ एका

आसनके वामभागमें जल त्यागदेंवै १ इसीतरे । मासिक ० २ त्रिपाक्षिक ० ३ द्वितीय ० ४ तृतीय ० ५ चतुर्थ ० ६ पंचम ० ७ ऊन-

दर्शन, आदि परिवेषण करे और अन्नके सहित लगाके (मधुवाता०) इण तीन मंत्रों करके अभिमन्त्रण करे और (मधु मधु मधु) तीनबेर जपे । यहा पात्रालभ, अर्थात् (पृथिवी ते पात्र०) इत्यादि मन्त्र पाठ, अगुष्ठ निवेशन आदि कर्म नहि करणा चाहिये । ऊपरके प्रमाणसे निरूप्य है, और विशेष प्रमाण लिखतेहैं । (बिष्णु वायुपुराण हेमाद्रि गारुडेयु, आशिषो द्विगुणा दर्भा जपाशीः स्वस्तिवाचन । पितृशब्दः स्वसवधः शर्मशब्दस्तथैवच ॥ आवाहः पात्रालभश्च उल्मुकोल्लेख

मधु दत्त्वा । ओं मधुवाताऽऽकृतायते इति मन्त्र त्रयेणाभिमन्त्र्याओं मधु मधु मधु मध्विति च जपेत्
नाऽत्र पात्रालंभागाहौ (नात्र पात्रालंभोनाशिषः प्रार्थयेदिति प्रचेतसोक्तत्वात्) ततः
सर्वत्र पात्र परित ओं अपहताऽअसुरा रक्षार्थसि० वेदिपद इति तिलान् विकीर्योन्मुञ्ज वाम

नादिक । नृप्तिप्रश्नश्च विकिरः शेषप्रश्नस्तथैव च ॥ प्रदक्षिणविसर्गश्च सीमात गमन तथा । अष्टादश पदार्थास्तु प्रेतश्राद्धेषु-
र्नयेत्) आशीर्वाद, मोटक, जप, स्वस्तिवाचन, पितृशब्द, अस्मात् पित० अमुक शर्मन्, अवाहन, पात्रालभन, उल्मुक
भ्रामण, रेखाकरण, वृप्ति प्रश्न. विकीरण, शेषप्रश्न, प्रदक्षिणा, विसर्जन, लेरजाना इत्यादि अठारहै १८ वात, प्रेत श्रा-
द्धोंमें नहि करणा चाहिये । करणसे दोष होता है इसवास्ते पात्रोके बाहर कर (अपहता०) इस मन्त्रसे तिल विकीरण

एक पात्र दाहर्णे हाथमें लेवे । प्रेतके गोत्र नाम लेके प्रथम वेदिका कुशाऊपर थोडा (अवनेजन) जल डालदेवे । इसीतरे
 दूसरी २ तीसरी ३ आदि वेदियांपें अबोजन देवे । फिर घृत, सहत, तिल, दर्शा, राकर जादि मिलेहोये अन्नका सोलह १६
 तिल गंध पुष्पाणि प्रक्षिप्या एक पुटकं दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा । ओं अद्याशुक्रगोत्र अमुकमे
 त आद्य श्राद्धपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते मयादीयते तवोपतिष्ठामिति प्रथम वेदिकायां स
 मूलकुशात्रयोपरि अवनेजनं किंचिदद्यात् १ एवं द्वितीय पुटक गृहीत्वा । ओं अमुकगोत्रं
 प्रेत मासिक श्राद्धपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते मयादीयते २ पुनस्तृतीयं पुटकमादाय । ओं
 अमुकं प्रेत त्रिपाक्षिक श्राद्धपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठामिति तृ
 तीयवेदिकायां कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ३ अनेभव क्रमेण द्वितीय मासिकादि पिंडस्था
 नेषु प्रत्येकमवनेजनं यथाक्रमेण दद्यात् ॥ ततो घृत मधु तिलयुक्तेनाद्येन षोडश पिंडान् वि
 ल्पोपमान् निर्माय । घृत मधुभ्यामभिवार्य्य । प्रथमं पिंडं कुशात्रय तिल जलानि
 पिंड बीलके फल जैसा गोल करके घीरत, सहतको मसलके एरु पिंड और कुशात्रय तिल जल सहित धारण करके

रात्रि०८ पत्र०९ मसम०१० अष्टम०११ नम०१२ दशम०१३ एकादश०१४ उनाब्दिक०१५ द्वादश मासिक १६
 ब्राह्मनिमित्त प्रोक्ते अर्थे अन्नका त्याग वरे, और यदा (सहस्र शीर्षा०) इत्यादि जप, पाठ नहि करणा चाहिये। क्युकी
 क्रूरने भ्रम,णसेति निरूपहे। पयात् अन्नपात्रके समीप आद हाथ जगें छोडके पिंड देनेके अर्थ मही या बालु रती-
 दश० १४ उनाब्दिक०१५ द्वादश मासिक ब्राह्मनिमित्तमन्नमृतसृजेत् १६। नात्र पैतृको
 जपः (नपैतृको जागः कार्थ्ये इति हेमाद्रौ प्रचेतसःस्मरणात्) विकिरमपि न कुर्यात् (प्रेत
 श्राद्धे न विकिर इति स्मृतिरत्नावल्यां, विकिरं न स्ववाकारमिति वायुपुराणाच्च) ततः
 सव्येन गायत्रीं त्रिर्जपित्वा। अपरसव्यादिना अन्नपात्रसमीपे पिंडदानार्थं सिकताभिः षोडश
 वेदिकाः कृत्वा। गोमयोदकेनोपलिप्या। प्रत्येकं तत्र दक्षिणाग्रं समूल कुशत्रयास्तरणं कुर्यात्।
 नात्र रेखाद्वरण (नोल्मुकोल्लिखनादिकमिति हेमाद्रौ वायवीयात्) ततः षोडश पुटकेषु जल
 की सोल्ह १६ वेदी बणाके गोययका लेपा देने और सबके ऊपर त्रिकुश एक एक रमंदे। यहा (अपहता०) इसें रेखा
 (ये रूपाणि०) इससे उल्मुक भ्रामण नहि करणा। अनंतर, सोल्ह १६ पात्र (जेनों) में जल, तिल, चदन, पुष्प, घालक

कके निमित्त० १ द्वितीय मासिक० ४ तृतीय मासिक० ५ चतुर्थ मासिक० ६ पंचम मासिक० ७ षष्ठ मासिक० ८ पाण्मासिक० ९ सप्तम० १० अष्टम०
 पुन० ओं अमुक० प्रेत पंचम मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठता
 मिति० ७ ओं अद्यामुक० प्रेत ऊन षण्मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया० ८ ओं अ
 द्यामुक० प्रेत षण्मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते० ९ ओं अद्यामुक० प्रेत स
 प्तम मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते० १० ओं अद्यामुकगोत्र० प्रेत अष्टम
 मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो० ११ ओं अद्यामुक० प्रेत नवम मासिक श्राद्धनिमित्त
 एष ते पिंडो० मया० १२ ओं अद्यामुक० प्रेत दशम मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो
 मया० १३ ओं अद्यामुक प्रेत एकादश मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया० १४ ओं
 अद्यामुक प्रेत ऊनाब्दिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते० १५ ओं अद्यामुकगोत्र
 अमुकप्रेत द्वादश मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति षोड
 ११ नवम० १२ दशम० १३ एकादश० १४ ऊनवर्षिक० १५ द्वादशमासिकके अर्थे छुदी २ वेदीयोंपर क्रमसेति पिंडदान

सकल्प उच्चारण करता हुआ । हे प्रेत, आज श्राद्धके निमित्त यहै प्रथम पिंड तुमारे अर्थ देतारों सो तुमकों प्राप्त होवो चादाय । ओं अध्यासुकगोत्र असुकप्रेत आद्य श्राद्धे एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठता भित्युक्त्वा । प्रथमवेदिकायां कुशोपरि अघनेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणकरणे पिंडं दद्यात् १ पुनः पिंडं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अध्यासुकगोत्रं प्रेत मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति द्वितीय वेदिकायां कुशोपरि दद्यात् २ पुनः पिंडं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अध्यासुकगोत्रं प्रेत त्रिपाक्षिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति तृतीयवेदिकायां कुशोपरि दद्यात् ३ पुनः पिंडं कुशादीनि चादाय । ओं अध्यासुकं प्रेत द्वितीय मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते ४ पुनः पिंडादिकमादाय । ओं अध्यासुकं प्रेत तृतीय मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते ५ पुनः ओं असुकं प्रेत चतुर्थ मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते ६

१ ऐसे कर्दके प्रथम वेदीकी कुशाके ऊपर दोनों हाथोंसे पिंड देदेंवे १ इसतिरे । मासिक श्राद्धके निमित्त ०२ त्रिपाक्षि

सव्य आदि करके तीन २ सूतके तागे दाहणे हाथसें, प्रेतका नाम उच्चारण करता होया संपूर्ण पिंडोपर चोडे और गंध, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, पूगीफल, दक्षिणा आदि करके सोलह पिंडोंकी अछिरी पूजा कर संकल्प लेके प्रेतके निमि-

हस्तेन धृत्वा । कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत आद्यादि द्वादश मासिकांत श्राद्धनिमित्त षोडश पिंडेषु एतानि वासांसि ते मया दीयंते तवोपतिष्ठतामित्येकतंत्रेणोत्सृजेत् । तत षोडश पिंडेषु गंध पुष्प तुलसीपत्र धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादीनि दत्त्वा कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्यामुकप्रेत अद्यादि द्वादश मासिकांत षोडश पिंडेषु एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादीनि महत्तानि तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् । ततो हस्ते जलयादाय । एभिः षोडश पिंडदानैरमुकप्रेतस्य असद्गतिविनाशः (सव्यं) सद्गत्युत्तमलोकप्राप्तिः इत्युक्ता उत्सृजेत् । तत एकस्मिन् पत्रपुटे सुप्रोक्षतादिकरणं सुप्रोक्षितोयं

न कर देवै । अनंतर हाथमें जल लेके, इष्ट षोडश पिंडदान करणे करके अमुक प्रेतकी असद्गति नाश होवो और सद्गति

करे १६। पश्चात् हस्त प्रक्षालन करके सब्य होवे और आचमन, हरि स्मरण करे। अपमव्य, दक्षिणमुख, पातितवाम
जातु, करके प्रत्यवनेजन देवे। अर्थात् पहले स्वाहोय अवेनेजन पात्र लेके प्रेतका गोत्र, नाम उच्चारण करके आष० १
श वेदिकायां कुशोपरि पिंडं दद्यात्। ततो हस्तौ प्रक्षाल्या सव्येनाचम्या हरिं स्मृत्वा अपस
व्यादि कुर्यात्। ततः प्रथम अवेनेजनपात्रं गृहीत्वाओं अध्यामुक० प्रेत आद्य श्राद्धापिंडेऽत्र
प्रत्यवने निक्षते मया दीयते तवोपतिष्ठामिति प्रथम पिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात्१ अनेनैव
क्रमेण। मासिक०२ त्रिपाक्षिक०३ द्वितीय०४ तृतीय०५ चतुर्थ०६ पंचम०७ ऊनषाण०८
पाण०९ सप्तम०१० अष्टम०११ नवम०१२ दशम०१३ एकादश०१४ ऊनाब्दिक०१५ द्वादश मा
सिक श्राद्धपिंडेषु प्रत्येकं प्रत्यवनेजनं दद्यात्१६ (अथवा एकत्रेण सर्वेषु दद्यात्) ततः पिंड
समीपे नीवीं विसृज्य। सव्येन आचम्या हरिं स्मृत्वा। अपसव्यादिना प्रतिपिंडं सूत्रत्रयं दक्षिण
मासिक २ आदि सोऽह पिंडो पर क्रमसे प्रत्यवनेजन जलदान करे। अथवा एकही पात्रसे सर्व पिंडोपर एकहि संकल्पसे
प्रत्यवनेजन देदेवे। फिर पिंडके समीप (नीवी) कटिभागमें टंगा हुवा तिल दर्मी डालके, सब्य होवे। आचमन करे। अप-

कृष्णकृष्ण०३ नारायण०४ हिरण्यगर्भ०५) इण पांचश्लोकोंको पढ़ता हुंवा देवै और प्रेतका गोत्र नाम लेके तीनबेर जलंगली पिंडोपें देवै । फिर दक्षिणा दान करै । रजत (चांदी) की दक्षिणा कुशत्रय तिल जल लेके षोडश श्राद्ध-

धरप्रद । अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ४ हिरण्यगर्भे पुरुष व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणे । अस्य प्रेतस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा ५ इति पठित्वा । ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत अत्र जल धाराः पयधारास्ते मया दीयंते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा । पिंडोपरि दद्यात् । ततो दक्षिणादानं । तत्र रजतद्रव्यं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये कृतैतत् आद्यादि द्वादश मासिकान्त षोडशश्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इदं रजतं चंद्रदेवतममु कगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इति संकल्प्य दद्यात् । ततः पिं डोद्धारणं चटविसर्जनं च कृत्वा । देवताभ्य इति त्रिजर्जपित्वा । रक्षादीपं निर्वाप्यासव्येन हस्तौ

की प्रतिष्ठके अर्थ ब्राह्मणको संकल्पद्वारा देदेवै, और पिंड उगवे, चट विसर्जन करै । (देवताभ्यः०) यहै मंत्र तीनबेर

प्राप्त होवो ऐसे कहेके जल त्यागन करदेवै । फिर एक डोनेमें सुप्रोक्षित करै (शिवा आपः संतु०) यह पदके जल
 डाले और (सौमनस्यमस्तु०) इसमें पुष्प (अक्षतं चारिष्टं चास्तु०) यह कहेके तिल, यव, प्रक्षेपण करै और कुशत्रय
 प्रदेशोस्तु। शिवा दर्भा आपः संतु, सौमनस्यमस्तु, अक्षतां चारिष्टं चास्तु इति जल पुष्प यव
 तिलान् पत्रपुटे दत्वा । अपसव्यादिना कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य
 आधादि द्वादश मासिकांत षोडश श्राद्धेषु यह तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं
 दद्यात् । ततः पिंडानामुपरि प्रत्येकं पवित्रं धत्वा तदुपरि जलधाराः पयधाराश्च दद्यात् । ओं
 अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुंडरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भवः अतसीपुष्प
 संकाशं पीतवाससमच्युतम् । ये नमस्यति गोविंदं न तेषां विद्यते भयं २ कृष्ण कृष्ण कृपालु
 स्वमगतीनां गतिर्भव । संसारार्णवमज्ञाना प्रसीद पुरुषोत्तम ३ नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकांत
 तिल जल लेके आय आदि सेलह श्राद्धनिमित्त दियाहुवा अन्न, जल प्रेतके निमित्त अक्षय दानकरै (यहां बही विम-
 कि देणा चाहिये) । फिर पिंडोके ऊपर एक एक कुगा रसके दुग्ध जलकी धारा (अनादि निधन० २ अतसीपुष्प० २

मुग्धोभित दरो, सोडीये, तकीया, चादरा, सोड, केवल, आदि बहसहित चंदन, धूप, पुष्प, नागरपान केसर,
 कर्पूर, अगुरु, दीपक, उपानह, (जूते) छत्र, चामर, पंखा, आसन, सप्त धान्य, वृत्तका, भराहुवा, कलशा
 इत्यादि सामग्री करके शोभायमान उत्तम शय्या स्थापनकरै। उसके ऊपर सुवर्णकी प्रेतप्रतिमा रखके पूर्व
 गंधधूपादिवासितां पुष्प तांबूल कुंकुम कर्पूरागरु चंदन दीपकोपानह छत्र चामर व्यजनां
 सन सप्त धान्य घृत पूर्णकुंभसहितां शय्यामासाद्यो तत्र हैमं कांचनपुरुषं स्थापयेत्। ततः
 पूर्वागिमुख उदङ्मुखो वा उपविश्य। आचम्य, प्राणानायम्य। देशकालौ संकीर्त्य। ओ
 अधाशौचान्त द्वितीयेन्हि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गकामः शय्यादानं करिष्ये इति
 संकल्प्य, देवब्राह्मणं गंवादिना संपूज्य। ओ इमां सोपकरणां शय्यां ददामीति द्विजंकरे जलं
 याउत्तरां मुख कियाहुवा आचमनकरै। प्राणायाम करै। देश काल उच्चारण करके कहेकी आज भै
 सुतकके दुसरे दिन अमुकगोत्र, नामवाले प्रेतको स्वर्ग प्राप्तिके अर्थ यहै शय्यादान करताहो। इसतरे संकल्प
 लेके शय्या लेनेवाले ब्राह्मणकी चंदन आदिसे पूजाकरै। यहै शय्या, सामग्रीसहित आपको देवोंगा ऐसे कहके ब्राह्म-

जपे । रक्षादीपक बुझावे और सब्य होके हाथ पैर प्रक्षालन करे । आचमन करे । (प्रमादात्०) यह श्लोक पढके कर्म पू-
रितके अर्थ विष्णुका स्मरण करे । आहसामग्री ब्राह्मणको देके पिंड आदि गो या कागलौको खिलादेवे या नदी आ

पादौ प्रक्षाल्य, आचामेत् । तत ओं प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत् । स्मरणादेवतद्वि-
ष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिरिति पठित्वा; कर्मपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः श्राद्धवस्तूनि
ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् पिंडादिकं गोभ्यो वायसेभ्यो वा दद्यात् । अगाधे जले वा क्षिपेत् ।
तत एकादशमृति ब्राह्मणान् भोजयेत् । तान् शय्यादिदानैः परितोषयेत् । इत्याद्यादि षोडश
पद्धतिः समाप्ता ॥ ॥ अथ शय्यादि दानम् । तत्र प्रयोगः । तत्रादौ सारदारुमयीं
दृढां दंतपत्रहेमपद्मार्थै र्लंकृतां हंसतूली प्रतिच्छन्नां शुभ्रगंडोपधानिकां प्रच्छादनपटीयुक्तां
दिके भीतसे पानीमें डाल देवे । फिर एकादश ११ ब्राह्मणोंको भोजनकारके; शय्या, पददान आदिसे प्रसन्नकरे इति

आषादि षोडश श्राद्धपद्धतिः ॥ अथ शय्यादान लिख्यते । सालकाष्टकी, मजपूत, हस्तिकेदात सुवर्ण आदिसे

स्नानकों देताहों ऐसे पढ़के जलकों ब्राह्मणके हाथमें त्याग न करदेवै। फिर शय्यादान प्रतिष्ठाके अर्थ सुवर्णदक्षिणा देके
 (यथानकृष्णशयन०) इस मंत्रसे प्रार्थना करे और प्रणाम करके विसर्जन करदेवै इति शय्यादानं ॥ अथ पददानं आ-
 ओं स्वस्तीत्युक्त्वा शय्यां संस्पृशेत् । ततो दाता ओं यथानकृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ।
 शय्याममाप्यशून्यास्तु तथाजन्मनि जन्मनि ? इति पठित्वा, प्रणम्य, विसृजेत् । इति शय्या
 दानम् ॥ अथ त्रयोदश पददानं । तत्र आसनं, १ उपानहौ, २ छत्रं, ३ मुद्रिकां, ४ कमंडलुं, ५
 अन्नं, ६ जलं, ७ भाजनानि, ८ वस्त्राणि, ९ आज्यं, १० यज्ञोपवीतं, ११ यष्टीं, १२ तांबूलंच
 १३ इमानि त्रयोदशानि पददानद्रव्याणि यथाशक्ति संपाद्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय, देश
 कालौ संकीर्त्य, (अपसव्येन) ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य परलोकिसुखप्राप्त्यर्थं असद्ग
 तिनिवारणार्थं इमानि, आसनोपानहौ छत्र मुद्रिका कमंडलु अन्न जल भाजन वस्त्र आ
 ज्य यज्ञोपवीत यष्टी तांबूलानि त्रयोदशपदानि नानादैवतानि नानानामगोत्रिभ्यो ब्राह्मणे
 सन, १ उपानह, (सुता) २ छत्र, ३ विंटी, ४ लोटा, ५ अन्न, ६ जल, ७ पात्र, ८ वस्त्र, ९ घृत, १० यज्ञोपवीत, ११ छडी.

णके हाथमें जल दें और शय्याकी पूजा करे, नमस्कार करके, कांचनपुरुष अर्थात् सुवर्णकी मूर्तिको गंध, पुष्प, धूप, दीप आदिसे पूजे। फिर नमस्कार करके। कुशत्रय तिल जल लेते और सकल्प उच्चारण करके और अमुकप्रेतके स्वर्ग दत्त्वा। ददस्वेति प्रतिवचनानंतरं विप्रं शय्यायामुपवेशयेत्। ततः ओं सोपकरणशय्यायै नमः इति शय्यां नमस्कृत्य। कांचनपुरुषं गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलादिभिः संपूज्य। नमस्कृत्य। कुशत्रय तिल जलान्यादाय। ओं अद्यैकादशेऽन्दि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य परलोकके सुखशयनार्थं स्वर्गलोकप्राप्त्यर्थमिमां सोपस्करां शय्यां कांचनपुरुषप्रतिमायुतां विष्णुदेवत्याममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे इति सतिलकुशोदकं विप्रहस्ते दद्यात्। ओं स्वस्तीति विप्रो वदेत्। ततः शय्यादानप्रतिष्ठार्थं हिरण्यं कुशत्रय तिल जला निचादाय। ओं अद्य कृतैतत्सोपकरणशय्यादान कर्मणः प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे इति विप्रहस्ते दद्यात्। प्रतिगृह्णीता लोकराप्तिके अर्थ तथा परलोकमें सुखशयनके अर्थ यह शय्या सामग्री, कांचनपुरुष सहित विष्णुदेवताकी अमुक प्रा-

निवृत्ति अर्थ बारहमासके दिनदिनके जलसहित कुंभके निमित्त और सर्पिंडीश्राद्धके अधिकारके अर्थ ग्यारवैदिन ३६० पिंडदान करता ही यहै पढके संकल्पका जल त्यागदेवै। फिर अपने अगाडी बारह १२ बेदी पिंडदानके

छानि प्रतिमासं प्रत्यहनि कर्त्तव्यानि। इदानीं द्वादशेन्हि करिष्यमाण सर्पिंडीकरणाधिकार
सिद्धयर्थं सर्वाण्यपकृष्य, पिंडदानविधिना करिष्य. इति संकल्प्य। स्वपुरतो द्वादशवेदिकाः
सिकताभिः पिंडदानार्थं कृत्वा। तत्र द्वादश कुशचटान् संस्थाप्य। तिलान् गृहीत्वा। चटान्
स्पृष्ट्वा। ओं इह लोकं परित्यज्य० १ गतोसि दिव्यलोकं त्वं कृतांतविहितात्ययात्। मनसा
वायुभूतेन चटे त्वाहं निमंत्रये२ इत्यनेन वा।ओं अमुकप्रेताऽत्र क्षणं ते उपतिष्ठतामिति क्षणं
दत्त्वा। चट्रेषु तिलान् विकीर्य। प्रत्येकं दक्षिणाग्रं समूलकुशत्रयास्तरणं कुर्यात्। ततो द्वादश

अर्थ मट्टि या बालुरेतकी बुणावै, उसीके ऊपर १२ कुशचट स्थापन करै। तिल लेके चटोको स्पर्श करताहुवा (इह-
लोकं०गतोसि०) इण श्लोकोसैप्रेतको निमंत्रण देके एकएक १ वेदिपै मूलवाली त्रिकुशा स्थापन करदेवै। फिर बारह १२

१२ नागरपान १३ यहै तेरह सामग्री शक्तिपाफिक तैयार करके संकल्प उच्चारण करके प्रेतके निमित्त ब्राह्मणोंको दान करदौं इति पददानम् । अनंतर यदि घनवान होवे तो मोतमोलवाले रत्न, गौ, हस्ती, घोडा, म्याना, रथ, दासी, म्यो दातुमहमुत्सुजे । प्रेताय । उपतिष्ठतां एभिस्त्रयोदशपदानैरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिश्चास्तु इतिपठेत् । इति त्रयोदशपददानम् ॥ ततः शक्तौसत्यां महाहर्षिणि रत्नानि गाः, वाहनं, यानानि; दासी, दास, वेश्मानिच प्रेतमुद्दिश्य विप्रेभ्यो दद्यात् ॥ अथ सान्नोद कुंभदाननिमित्त पष्ट्युत्तरशतत्रय पिंडदानप्रयोगः ॥ तत्र तावत् आचम्य, प्राणानायम्य, देश कालौ संकीर्त्य (अपसव्यादिना, । ओं अधामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक परलोकै संवत्सरपर्यंतं क्षुत्तृपोपशांत्त्यर्थं प्रथममासिकसान्नोदकुंभश्राद्धं, द्वितीयमासिक० तृती य० चतुर्थ० पंचम० षष्ठममासि० सप्तम० अष्टम० नवम० दशम० एकादश० द्वादशमासिक कुंभश्रा दास, घर आदि प्रेतकानिमित्त लेके ब्राह्मणोंको दानकरणा चाहिये ॥ अथ षष्ट्युत्तरशतत्रय पिंडदानप्रयोगः । प्रथम आचमन, प्राणायाम करके संकल्प उच्चारण करे और अपसव्य दक्षिणापुल होके प्रेतकी संवत्सरपर्यंत, मूल, प्यस

सोसाठ ३६० पिंड बुनावे ओर कुशत्रय तिल जल लेके प्रेतका नाम उच्चारण करताहुवा प्रथम० द्वितीय० तृतीय, मास

मित्त इमानि त्रिंशत्पिंडानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा। वामान्वारब्ध्यादक्षिणह
स्तेन कुशोपरि दद्यात् १ अनेन क्रमेण द्वितीयमासिक० २ तृतीयमासिक० ३ चतुर्थमासि
क० ४ पंचम० ५ षण्मासिक० ६ सप्तम० ७ अष्टम० ८ नवममासिक० ९ दशममासिक० १० एका
दशमासिक० ११ द्वादशमासिक सान्नोदकुंभानिमित्तपिंडानि क्रमेण दद्यात् १२ ततो हस्तप्रक्षा
लनं कृत्वा। अवनेजनपात्रेण। ओं अमुक० प्रेत प्रथममासिकादि द्वादशमासिकांत सा
न्नोदकुंभानिमित्त षष्ट्युत्तरत्रिंशत् पिंडोपरि प्रत्यवने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति
सकल्य क्रमेण दद्यात्। ततः पिंडान् सूत्र गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य तांबूल पूगीफल दक्षि
णाभिः संपूज्य। अमुकगोत्र० प्रेत अत्र षष्ट्युत्तरत्रिंशत्पिंडेषु एतानि आच्छादन ग्रंथ पुष्प

आदि बारहमहिर्नोका न्यारा २ तीस ३० तीस पिंड एकएक वेदिषे क्रमसे देदेवै। अनंतर हाथ धोकें सपूर्ण पिंडोपर

दोनोमें या एकडोनमें जल तिल गंध पुष्प डालके प्रथम०१ द्वितीय०२ तृतीय०३ चतुर्थ०४ पंचम०६ षष्ठम०७
 सप्तम०८ नवम०९ दशम०१० एकादश०११ द्वादश०१२ मासिकनिमित्त पिंडस्थानमें न्यारा २ अवनेजनदेवै । पश्चात्
 पत्रपुटेपु जल तिल गंध पुष्पाणि कृत्वा । प्रथमपुटकं गृहीत्वा । ओं अमुक० प्रेत प्रथममा-
 सिक सान्नोदकुंभनिमित्त त्रिशत् पिंडदान स्थानेऽत्रावनेनिश्चते मया दीयते तवोपतिष्ठता-
 मिति प्रथम वेदिकायां कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् १ एवं द्वितीय०२ तृतीय०३ चतुर्थ०४ पं-
 चम०५ षष्ठ०६ सप्त०७ अष्ट०८ नवम०९ दशम०१० एकादश०११ द्वादश
 मासिक पिंडस्थानेऽवनेजनं क्रमेण दद्यात् । अथवा एकतंत्रेण सर्वत्र दद्यात् । तत-
 स्तिल घृत दुग्ध दधि मधु शर्करादियुक्तेन चरुणा, यवचूर्णेन वा, सक्तुना वा । अर्द्रोमलक
 मानान् षष्ट्युत्तरशतत्रयपिडान् कृत्वा । क्रमेण दद्यात् । तत्र त्रिशत् पिडान् कुशत्रयादीनि
 चादाय । ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत परलोकै धुचुषोपशांत्यर्थं प्रथममासिक सान्नोदकुंभनि-
 त्तिल, घृत, दुग्ध, दधि, सहत, शकर आदि मिलेहोये यवोंके चूनकरके या शतू करके हरे आवलेकी मासिक तीन-

करके अमुकप्रेतकी भूल बारह मासतक शांती होवो । अनंतर पिंड विसर्जन करके ३६० अंजलीदान करें । पीपल, वड आदिदरखतके नीचे बैठके अपसव्य, दक्षिणमुख कीयाहुवा तिल दुग्ध मिलेहोये जल करके सीधीदर्भायुक्त दोनो पिंडविसर्जनं कृत्वा । अश्वत्थादिके षष्ट्युत्तरशतत्रयांजलिदानं कुर्यात् । तद्यथा । एकस्मिन् बृहत्पत्रे जल तिल दुग्ध गंध पुष्पाणि प्रक्षिप्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय, देशकालौ संकीर्त्य, अपसव्येन, दक्षिणासुखः । ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य परलोकैः संवत्सरपर्यंतं क्षुत्तृषोपशांत्यर्थं प्रतिमासिक निमित्त सान्नोदकुंभदानानि प्रतिमासं प्रत्यहनि कर्तव्यानि इदानीं द्वादशेन्द्रिकरिष्यमाण सर्पिंडीकरणाधिकारसिद्धयर्थं तन्निमित्त षष्ट्युत्तरशतत्रयअंजलिदानं करिष्ये । इति संकल्प्य ऋष्टु कुशत्रय तिल पूर्णांजलिना । ओं अमुकप्रेत संवत्सर क्षुत्तृषोपशांत्यर्थं प्रतिदिननिमित्त सान्नोदकुंभनिमित्तक षष्ट्युत्तरशतत्रयोजलयस्ते मयादीयं तेतवोपतिष्ठताभित्युष्यार्थं क्रमेण ३६० दद्यात् । ततः सव्यं कृत्वा, आचम्य, विष्णुस्मरणं, घृते हाथोत्ते ३६० अंजली देणी चाहिये । फिर सव्यहोके आचमन विष्णुस्मरण करें और घृतके पात्रमें श्रपना मूल देसके

प्रत्यग्नेज्ज्वन दान करे और सूत, गध, पुष्प धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, दक्षिणासे पिंडोको पूजके (अनादि०१-भक्तसो०२
 रुष्णकृष्ण०३ नारायण०४ हिरण्यगर्भ०५) इन मंत्रोकरके पिंडपे द्रुग्जलधारा देवे। फिर चांदीकी दक्षिणा लेके तीनमों-
 धूप दीप नैवेद्य तांबूल पूर्गीफल दक्षिणादीनि महत्तानि तत्रोपतिष्ठतामित्युत्सुजेत्। ततः ओ
 अनादिनिधनो देव० १ अतसीपुष्प० २ कृष्णकृष्ण० ३ नारायण सुरश्रेष्ठ० ४ हिरण्यगर्भे पुरु
 ष० ५ इति पठित्वा जलद्रुग्धारा दद्यात् । ततो रजतद्रव्यं कुशत्रयादीनि चादाय ।
 ओ असुकगोत्रस्य० प्रेतस्य० कृतैतन्मासिकादि द्वादशमासिकांत साम्नोदकुंभानिमित्त
 षष्ट्युत्तरत्रिंशत् पिंडश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं रजतं चंद्रदेवतमसुकगोत्रायामु
 कशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहसुत्सुजे । इत्युक्त्वा । ततः अमुक० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं
 कृतैतत् षष्ट्युत्तरशतत्रय पिंडदानविधेर्यन्धूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णताऽस्तु एभिः
 षष्ट्युत्तरत्रिंशत् पिंडदानैरमुकप्रेतस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुत्प्राप्तुमिर्भवतु इति पठेत् । ततः
 साठ पिंड दानकी सांगताके अर्थे ब्राह्मणको दक्षिणा दानकरे। फिर हाथमें जल लेके कहेकी इण तीनसोंसाठ पिंडो

र स्नान किये होयें माई आदि द्वारा पाक दो २ करावें। अर्थात् एक पितृपक्षक और दूसरा प्रेतका। पश्चात् मृतिस्थानमें श्राद्धकरणके अर्थ गोमयका लेपा देवें और अग्निसें जलताहुवा वृण फेरके साफ शुद्ध मट्टि (रेत) बिछाके तिल पीली सरसोंका विकिरण करें और तहां श्राद्धसामग्री जलसें पूरित १२ घट तथा एक १ पक्वान्न पूरित बर्दनीकुंभ स्थापन

सुन्नात, सपिंडादिद्वारा, स्वयं वा, पाकद्वयमारभेत। ततो मृतिस्थाने श्राद्धभूमिं परिकल्प्य गोमयोदकेनोपलिप्याज्वलदंगारैः संशोध्यगौरमृत्तिकयाच्छाद्य। तिलगौरसर्षपैश्च विकिरेत् । तत्र श्राद्धसामग्रीं जलपूरितान् द्वादशघटांश्चैकां पक्वान्नपूरितां बर्द्धिनींच संपाद्य । आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य, स्थापयेत् । काककुक्कुटादीन् श्राद्धापहंतृनपसारयेत् । अथ प्रयोगः तत्र तावत्स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य । पादयोरधः कुशपत्रत्रयं दत्त्वा । सव्येन पवित्रधारणं, आ

करके आसनके समीप तिलोके तेलसें दीपक जलके घरे और कवा, मुर्गी, कुचा, चील, शूरु, मार्जार आदि निषिद्ध जानवरोंको पास नहि आनदेवें, इनको दूर हटादेवें। पश्चात् श्राद्ध करनेवाला आसनपे पूर्वको मुखकरके बैठे आसन-

यथाशक्ति मुगले, भिसारी आदिकों अन्न अथवा दक्षिणा देवे । फिर अपने घर आके वेधदेव और शांतीपाठ करे । इति षष्ट्युत्तरशतत्रयपिंडदानम् ॥ ॥ अथ सर्पिंडनश्राद्धप्रयोग लिख्यते । प्रथम पहले दिन श्राद्धकरनेवाला एकादशा-
 ष्टश्राद्धकरके (निरामिप) अर्थात् मासआदिनिषिद्धवस्तुरहित उत्तम चावल आदि पदार्थ एववक्त भोजनकरे और

सुरवावलोकनंच कृत्वा । यथाशक्ति भिक्षुकप्रभृतिभ्योऽन्नं, तन्निष्कयद्रव्यं वा दत्त्वा। गृहभाग
 त्य, वैश्वदेवं कृत्वा । शांतिपाठं पठेत्। इति षष्ट्युत्तरशतत्रयपिंडांजलिदान प्रयोगः समाप्तः ॥
 इत्येकादशाहकर्म समाप्तम् ॥ ॥ अथ द्वादशाहे सर्पिंडनश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र पूर्व दिन
 एकादशाहश्राद्धं कृत्वा । निरामिपमेकवारं शुक्त्वा सर्पिंडनदिने नद्यादौ प्रातः स्नात्वा ।
 नित्यक्रियां समाप्यामध्यान्हे पुनःस्नात्वा। धौतशुक्लवस्त्रयुग्मे परिधाय। गोमयोपलिप्तायां भूमौ

सर्पिंडनके प्रातःकाल नदी, तलाव आदिमें स्नानकरके, सध्या, त्रभयज्ञ, तर्पण, देवपूजन आदि करे और मध्यान्हमें,
 फिर स्नान करके धोयाहुवा श्वेत (वस्त्र) घोती, अगोछा धारण करे । फिर गोमयका लेप दिईहुई शुद्धभूमिके रूप-

पश्चात्, त्रिकुशा, तिल, जल, यत्र, आदि ताम्रके पात्रमें लेकर दाहणे हाणसे संकल्प करै अर्थात् सात, ऋतु, मास, पक्ष, तिथी, वार; आदिका उच्चारण करके अपने गोत्रका उच्चारण करै और (अपसव्य) से अमुकगोत्रनामवाले प्रेतका प्रेतत्वनिवृत्तिके अर्थ और उत्तमलोक प्राप्तिके अर्थ अमुकगोत्रनामवाले प्रेतके पिता, दादा और परदादेके साथ तिलजलान्यादाय । देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) औ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तये उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्रैः अमुकप्रेतस्य पितृपितामहप्रपितामहैरमुकानु कशर्मभिः वसुध्वादित्यस्वरूपैः सह मृताहाद्वादशेन्द्रि एकोद्विष्टपार्वणोभयात्मकं सर्पिडीकर णश्राद्धमहं करिष्य इति संकल्पयेत् (मातुः सर्पिडीकरणेतु औ अमुकगोत्रायाः अमुकीप्रे तायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं-अमुकगोत्राभिः अस्मिपितामहीप्रपितामहीवृ ष्टप्रपितामहीभिः गंगा यमुना सरस्वतीस्वरूपाभिः सह सर्पिडीकरणश्राद्धं करिष्य इति, ततो वारये दिन एकोद्विष्टपार्वणसंज्ञक सर्पिडीश्राद्धं करताहौ ऐषे कहके पात्रका जल तिल आदि पृथिवीपे छोडदेवे । इसी- तरे माताके सर्पिडीश्राद्धमें, अपनी, दादी, परदादी, बुढीदादी, के साथ सर्पिडनश्राद्धका संकल्प त्यागन करै । फिर

के तले त्रिकुश देवै, सन्महोक्तं पवित्रधारण करे और तीनबेर आचमन करे। प्राणायाम करके कर्मपात्र, जल, तिल, गंध, पुष्प आदिसे परिरूपी करे। फिर (अपवित्रः०) इस श्लोक और (पुंडरीकाक्षः पुनातुः) इस मंत्रस द्वाँ करके जल द्वारा संपूर्ण सामग्री तथा अपने शरीरको पवित्र करे। प्रोक्षणकरणके अनंतर (ओं वैष्णव्ये० काश्यप्ये० ब्रह्मरूप्ये०

चमनं च कृत्वा, प्राणानायम्याकर्मपात्रं जलेन परिपूर्य, तिल गंधपुष्पादिभिः संपूज्या। ओ अपवित्रः पवित्रो वा०१ ओ पुण्डरीकाक्षः पुनातु इति पठित्वा। श्राद्धीयवस्तूनि स्वारमानं च सिञ्चेत्। तत ओ वैष्णव्ये नमः ओ काश्यप्ये नमः ओ अक्षरूप्ये नमः ओ भूम्यै नमः इति नत्वा श्राद्धदेशं गयात्मकत्वेन तदेकदेशस्थं गदाधरं च व्यात्वा। तयोः ओ भगवत्यै गयायै नमः। ओ भगवते गदाधराय नमः। इति मनो वाक्यैर्नमस्कारं कुर्यात्। ततः कुशत्रय

भूम्ये०) इन मंत्रोंसे पृथ्वीको नमस्कार करे। फिर श्राद्धस्थानको गया सदृश समझके और तहां स्थित गदाधर भगवानका ध्यानकरके (भगवत्यै गयायै० भगवते गदाधराय नमः०) इन मंत्रोंसे मन, वाणी, काया द्वारा नमस्कार करे।

बल्लके बाहर (ओं सोमस्य०१ निहन्मि०२) इन दोमंत्रोंके अंतमें तिल कुशाका स्थापनकरै । इसको नीवीबंधन कहते हैं । यह नीवी बंधन अपसव्यसे करणा चाहिये, कारण अगाडी अपसव्यहिसे निकाली जावेगी । फिर सव्य सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येद्रिस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि उच्छ्रयस्त्व व्वनस्पतऽऊर्द्धुमापाहृयठं० हसऽआस्य यज्ञस्यो दृचः१निहन्मि सर्वं यदग्नेध्यव, ऋवे हताश्र सर्वं सुरदानवा मया । यक्षाश्र रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुयानाश्र सर्वं २ इति नीवीबंधनं कुर्यात् । ततः सव्येन कस्मिंश्चित्पात्रे जलं गृहीत्वा । दर्भे रालोड्य ओं यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा व्वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुंचत्वठं० हसः१ यदि दिवा यदि नक्तमेनार्ठं०सि चकृमाव्वयम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वठं० हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वप्नऽएनार्ठं०सि चकृमाव्वयम् सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वठं० हसः ३ इति कृष्णान्डसूक्तेनाभिमन्थ्य । ओं उदक्वयादि दुष्ट दृष्टिपातात् शूद्रादिसंपर्कदोषाच्च होंके एक तामेमादिके पात्रमें जल घाले और दर्भासे (आलोडन) हिलाके (ओं यद्देवा देवहेडनं०) इण तीन

तीनबेर ब्रह्मगायत्रीका जप और (देवताम्यः०) इस मंत्रको तीसरे पढे । फिर (नमोनमस्ते०) इस मंत्रसं देवस्थानमें यव विकीरण करके श्रपसव्यसे पितृस्थानके भिषे (अग्निष्वाता०) इत्यादि मंत्रोंको पढके दक्षिण हाथसे पूते, दक्षिण, गायत्रीं त्रिज्जपित्वा। ओं देवताम्यः पितृम्यश्च महायोगिम्य एवचानमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनम इति त्रिजपेत् । तत ओं नमोनमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः इति देवप्रदेशे यवान् विकीर्य । अपसव्येन पैतृकप्रदेशे । ओं अग्निष्वाताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मे दिशं तथा बर्हिपदः पान्तु याम्यां ये पितरः स्थिताः प्रतिचीमाज्यपा रक्षेदुदीचीमपि सोमपाः । ऊर्ध्वतस्त्वयमार क्षेत्रकव्यवाडनलोप्यधः २ रक्षोभूतपिशाचभ्यस्तथैवासुरदोषतः । सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ३ वायुभूतपितृणां च तृप्तिर्भवतु शाश्वती । य इदं श्राद्धकाले तु कुर्याद्वै पितृपंजरः ४ अक्षय्यं तद्भवेच्छ्राद्धं पितृभ्यः परिरक्षतु ॥ इत्यनेन दिक्षु अधस्तादूर्ध्वं कोणेषु च दर्भतिलान् गौरसर्षपांश्च विकीर्य (ओं पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्व, अध, कोणोंमें अर्थात् दशदिशामें सर्वत्र दर्भो, तिल पीलीसरसों विकीरण करके दाहणे कटी-

यत्र लेके विश्वेदेवोंका आवाहन करे अर्थात् कहेंकी कालकामनामवाले विश्वेदेवोंको हम बुलातेहैं। फिर (विश्वेदेवा०) इस मंत्रसे आवाहन करके (ययोसि०) इस मंत्रकरके यत्र विकीरण करे और (विश्वेदेवाः शृणुते० आगच्छंतु०) यहै २ मंत्र पढ़े इसतरे। आसनदेनेके अनंतर एक अर्घ्यपात्रमें पूर्वको अग्रभाग कराहोया (पवित्र) दो कुशपत्र दश१० अंगुल

इत्युक्त्वा ओं विश्वे देवास ऽआगत शृणुतामऽ इमठं० हवं । एदम्बर्हिनिषीदत्
इत्यनेनावाह्य। ओं ययोसि यवयास्मद्धेपो यत्रधारातीरिति यवान् विकीर्य । ओं विश्वे देवाः
शृणुतेमठं० हवस्मेयेऽंतरिक्षेय उपद्यविष्ठये अग्निजिह्वाऽ उतवायजत्राऽ आसद्वास्मिन् बर्हि
षिमादयध्वम् इति जपेत् । आगच्छंतु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ये यत्र यो
जिताः श्राद्धे सावधानां भवंतु ते इति श्लोकोऽप्युच्चारणायः । ततोऽपि त्रे पूर्वाग्ने पवित्रे

लंबाधरे इसीका नाम पवित्र; पवित्रैहै (कात्यायनस्मृतौ). अनन्तगर्भिणं साग्रं कौशं द्विंदलमेवच । प्रादेशमांत्रं विज्ञेय
पवित्रं यत्र कुत्रचित् । एतदेवदि पिंजूर्यां लक्षणं समुदाहृतम्) यहै कात्यायनस्मृतिका प्रमाणहै अर्थात् तीनपत्ते। छुडेहोये
मांसे बीचकापत्ता निकालदेवे। वाकीका दोपत्ता अग्रभागसहित हो दशअंगुल लंबाहो इसको पवित्र संपूर्ण कर्ममें कहते

मर्चकरके मंत्रे होथे जलसे; रगस्वला, श्वान, चांडाल, आदिकी दृष्टिसे और शूद्र आदिके स्पर्शसे अशुद्धहोये पाककी शुद्धिसे अर्थ पाक प्रोक्षण करना चाहिये। आसनादि देनेकी विधि लिखते हैं। प्रथम उत्तरकी तरफ मुखकरे जाघसहित दाहना (जानु) गोडा नीचेको रखके दक्षिणहायमें कुशत्रय, यव; जल लेवै और कहेको हमारे (पितामहादि त्रय)

पारुादीनां पवित्रतास्तु इति पाकादीन् संप्रोक्षयेत् । अथासनादि दानम् ॥ तत्र तावत्
उदङ्मुख उपविश्य । सव्येन सजवनं दक्षिणं जान्वाच्य यव जलान्यादाय । ओं अद्य
पितामहादित्रयश्राद्ध संवधि कालकामसंज्ञिकानां विश्वेषां देवानां ओं भूर्भुवः स्वः
इदमासनं । सुखासनं स्वाहा नमः । इत्युच्चार्य देवतीर्थेन पूर्वोत्तं कुशत्रयमुत्सृजेत् ।
ततो यवात् गृहीत्वा । ओं कालकामसंज्ञिकान् विश्वान् देवान् आवाहयिष्ये (आवाहय)

अर्थात् दादा, परदादा, बुदादादिके श्राद्ध (संवधि) हिस्सेदार (काल काम) नामवाले विश्वेदेवताओंको यदै सुसुदेनेवाला आसन देताहूँ सो प्राप्त होवै।ऐसे करके (पूर्वोत्तं) पूर्वको आगे ला हिस्सा रखके कुशाका तीन पत्ता मडलपै छोडदेवै। फिर

अर्घपात्रका जल देदेवै और (विश्वेभ्यो देवेभ्यः०) गृहे पङ्कके देवतोंके आसनकी दक्षिणतरफ निराला सूधाहि स्थापन-
करे । पश्चात् देवोंके आसनपै, गंध, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, सुपारी, यज्ञोपवीत वस्त्र (धोतीया, साफा) आदि रखके
कुदात्रय यव जल लेके ऊपरका सकल्प उच्चारण करे; और यहै गंध, पुष्प, धूप आदि सामग्री विश्वेदेवोंके अर्घ है ऐसा

श्रुं। ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीत्युत्तानं स्थापयेत्। अथ गंधादिदानं। तत्र गंध पुष्प धूप
दीप तांबूल यज्ञोपवीत वासांसि धृत्वा । कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्य पितामहादित्रय
श्राद्धसंबंधिनः कालकामसंज्ञिकाः विश्वेदेवा एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल
यज्ञोपवीत वासांसि वः स्वाहा नमः इत्युत्सृजेत् । तत ओं विश्वेपां देवानामर्चनं संपूर्णमस्त्व
ति प्रार्थय । प्रणीताग्निभस्मना वारिणावा ब्राह्मणादिषु चतुरस्रत्रिकोणवर्तुलमंडलं वेष्टयित्वा
कुथ्यात्। इति देवार्चनम् ॥ एवं देवक्रियाकांडं निर्वृत्या पितृश्राद्धदेशमागत्या आसने दक्षिणा

काहके सकल्पका जल त्यागदेवै । फिर प्रार्थनाकरके भस्मी या जलकरके आसन आदिके बाहरकर ब्राह्मण, क्षत्रि,
वैश्य, के चतुरस्र, त्रिकुश, गोल, मंडलकरणा चाहिये । इति देवपूजा । इसतरं देवपूजनकरके पितृश्राद्धदेशमें आके

हैं और इसीका नाम (पिंजुली) पिंडस्थानमें रखानिकालनेवाली दुर्भाकों कहतेहैं । फिर पात्रमें (शन्नोदेवी.०) इस मंत्रसे जल घाले (यवोसि०) इससे यव (जो) गेरे और मंत्ररहित, गंध, (चंदन) गुण्य, तुलसीपत्र घालदेवें । अनंतर धृत्वा॥ओं शन्नो देवीरभिष्यऽ आपो भवंतु पितये । श व्योरभिस्रवंतु नः । इति जलं क्षिप्त्वा ओं यवोसि यवयास्मद्धपो यवयारातीरितियवान् प्राक्षिप्यातूष्णीमेव गंध पुष्प तुलसीदलानि निक्षिपत् तत ओं देवार्घपात्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा । अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा।पवित्रं पला शपत्रं दत्त्वा॥ ओं या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्योऽअंतरिक्षाऽउतपार्थवीर्या॥ हिरण्यवर्णा य क्षियास्तानऽआपः शिवाः शठे०स्योनाः सुहवा भवतु इत्यभिमंत्र्यादक्षिणहस्ते कृत्वा॥ओं पि तामहादि त्रयश्राद्धसंबंधिनः कालकामसङ्घिकाः विश्वेदेवा एषोऽर्घ्वे. स्वाहा नमः । इति प ठित्वा॥ देवतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घ्यजलमुत्सृजेत् ततोऽर्घपात्र पवित्रादियुतमासनदक्षिणपा र्घपात्र लेके वामे हाथसे रखे और दुर्भाका २ पत्र पूर्वका अग्रभाग करके पत्तलेपे अगाडी रखदेवें फिर (यादि- व्या०) इस मंत्रसे अर्घपात्रको मंत्रके दाहणे हाथकरके अगुलीयके ऊपरकर पवित्रेपे ऊपरका सकल्प उच्चारण करके

पे दक्षिणकाँ अप्रभाग करके स्थापन करद्वै । इसीतरे; तीसरी वेदीपे ऊसीसे पूर्बे परदादेके अर्थ वूसरा मोटक रूप आसन २ और चौथी वेदीपे परदादेके अर्थ तीसरा आसन ३ सबसे पूर्बे ऊपरके सकल्पोंको उच्चारण करताहुवा स्था-

नर्द्धिगुणभुम्नकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्यामुकगोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्यामुकशर्मणोऽऽदि
त्यरूपस्य इदमासनं स्वधा नमः । इति तृतीयमासनं वृद्धप्रपितामहाय उत्सृजेत् ३ ततस्तिला
न् गृहीत्वा । पितामहादीनुद्दिश्य । ओं पितृनावाहयिष्ये इत्युक्त्वा । ओं उशंतस्त्वानिधी मभ्यु
शन्तः समिधीमहि । उशन्नशतऽ आवह पितृन् हविषेऽ अत्तवे इत्यावाह्य । ओं अपहताऽ असुरा
रक्षाठं० सि वेदिषद । इति तिलान् विकीर्यो कृतांजलिः । ओं आयंतु नः पितरः सोम्यासो
अग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदंतोधिभुवंतु तेऽवन्त्वस्मान् इति पठेत् ।

पनकरै । पश्चात् तिल लेके (पितृन् आवाहयिष्ये) यहै कहके (उशंतस्त्वा०) इस मंत्रकरके पितामह (दादे) आदि-
का आवाहन करै । पश्चात् (अपहता०) इसमंत्रसे तिल विकीरण करके । अगली कियाहुवा (आयंतुनः०) इसमंत्रको

आसनपै दक्षिणमुख, अपसव्य, पातितवामजानू, करकें बैठ जावे और कुशत्रय तिल जल लेकें । अमुकगोत्र नामके प्रेतको सर्पिंडीकरणश्राद्धमें यहें कुशाका आसन देताहों सोप्रेतको प्राप्त होवो ऐसैं कहकें त्रिकुश प्रेतकी वेदीपै दक्षिणको अग्रभाग करकें स्थापन करदेवै १ प्रेतको आसन देनेके अनंतर. (द्विगुणशुभ्र) अथान् वीचसैं दूणी करिहुइ

भिमुख उपविश्या अपसव्यं कृत्वा। वामं जान्वाच्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य सर्पिंडीकरणश्राद्धे इदमासनमुपतिष्ठतामिति ऋशुकुशत्रयरूपं दक्षिणाग्रमासनमुत्सृजेत् । ततो द्विगुणशुभ्रकुशत्रयनिलजलान्यायाओं अद्यामुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकशर्मणो वसुरूपस्य इदमासनं स्वधानमः । इति प्रथमासनं मोटक रूपं दक्षिणात्रं पितामहाय उत्सृजेत् ? पुनर्द्विगुणशुभ्रकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्य प्रपितामहस्यामुकशर्मणो स्वरूपस्य इदमासनं स्वधानमः इति द्वितीयमासनं प्रपितामहाय दद्यात् २ पुनर् (शुभ्र) मुडीहोयी कुशत्रय, इसको मोटकभी कहतहैं । सो यहें और तिल जल लेकें । अमुकगोत्रनामवाले भेरे पितामह (दादेजीको) यहें आसन प्राप्त होवो यहें कहकें मोटरूप आसन दादेके अर्थ प्रेतकी वेदीसैं पूर्व । दूसरी वेदी-

का गोत्रनाम उच्चारण करके अर्घ्यकीतरहे डालदेवे और पवित्री, जलसहित प्रेतके अर्घ्यपात्रको उसीके अगाडी स्थापन करदेवे और पितामहादिकेसाथ पात्रमेलन करे (अथ अर्घ्यपात्र मेलनप्रकार लिख्यते) प्रथम सव्यहोके कुशत्रय तिल जल दाहणेदायमे लेवे और संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार, आदिका उच्चारण करे । फिर अपसव्य, दक्षिणमुख, रणश्राद्धे एष ते हस्ताद्यौ मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति पवित्रोपरि पितृतीर्थेन किंचिज्जलं दद्यात् । ततोचिशिष्टजल पवित्रसहितमर्घ्यपात्रं पुरतः स्थापयेत् (ततः प्रेतपात्र जलं पितृपात्रेष्वसिचति) ॥ अथ अर्घ्यैःसह संयोजनम् ॥ तत्र तावत्सव्येन कुशत्रय तिल जलान्यादा या देशकालो संकीर्त्य । अपसव्यादिना ओं अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं सद्गतिप्राप्त्यर्थं तरिपतृपितामहप्रपितामहानामर्घ्यैः सहार्घ्यसंयोजनं करिष्ये इति संकल्प्य संयोजयेत् । ततः प्रेतार्घ्यपात्रस्थमेकं पवित्रं तत्पितृपात्रे निधाय । प्रेतार्घ्यं गृहीत्वा।ओं अमुकगोत्रं यानितवामजातू, करके (अमुकप्रेतकी प्रेतत्वनिवृत्ति और सद्गतिप्राप्तिके अर्थ उसीके पिता, दादा. 'परदादाके अर्घ्यपात्रोंके जलमें प्रेतके अर्घ्य पात्रका जल मेलन करताहो ऐसे कहके संकल्पका जल पृथिवीपे त्यागदेवे और) पा-

पढे । फिर पितामह आदिके तीन ३ अर्घपात्रोंमें एक एक (पवित्र) दुर्भाका दो २ पत्ता घालें और प्रेतके अर्घपात्रमें एक एककाहि पवित्रा रखे । फिर (शन्नो देवी०) इसमंत्रसे संपूर्णपात्रोंमें जल घाले (तिलोसि०) इसमंत्रको पढके तिल, और मंत्ररहित गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र सबपात्रोंसे ढालदेवे (यहां तिलोसि० इसमंत्रके अंतमें स्वधाहिततोऽर्घपात्रचतुष्टयं धृत्वा । प्रतिपात्रं पवित्रं दत्त्वा । ओं शन्नोदेवीरिति जलं प्रक्षिप्य । ओं तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । मत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृष्टोकान्प्रीणाहिनः स्वधा इति प्रत्येकं तिलान् तृष्णीमेव गंध पुष्पाणि च निक्षिपेत् । ततोऽर्घपात्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा । प्रेतार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा । पवित्रं पलाशपत्रे धृत्वा । ओं यादिव्याऽआपः पयसा संवभ्रूदुर्योऽ अन्तरिक्षाऽ उत पाथिवीर्योः । हिरण्यवर्णाः यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः शर्ठे० स्योना सुहवा भवन्तु इत्यभिमंत्र्यादक्षिणहस्तेन ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत सर्पिंडीक पद देने योग्यहै स्वाहा पद नहिदेना चाहिये) फिर प्रेतके अर्घपात्रको लेके दुर्भाका पवित्रा आसनके अगाडी पत्तलपे धरे (यादिव्या०) इसमंत्रसे अर्घपात्रको अभि मंत्रणकरके अगाडी धरीहोई पवित्रोंमें भोतयोडा अर्घका पानी प्रेत-

देवें इस्सें रुद्रलोक प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ फिर तीसरे, प्रेतप्रपितामहके अर्घपात्रमें प्रेतकापवित्रा घाले और प्रेतके पात्रका जल (येसमाना०) यहै २ मंत्रपढके सपूर्ण (तीसरे) हिस्सेका जल अर्घ पात्रकरके अपने बूढे दादेके अर्घपात्रमें डा-

नाः समनसो० इति मंत्रद्वयांते द्वितीयांशमर्घ्येणैवार्धे क्षिपेत् । तेन रुद्रलोक प्राप्तिः ॥ २ ॥ पु
नः तत्प्रेतपवित्रं तत्प्रपितामहार्धे निधाय । प्रेतार्घ्यं गृहीत्वा । औं अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य० त
त्पात्रस्थं सर्वजलं अमुकगोत्रस्य प्रेतप्रपितामहस्य आदित्यरूपस्य अर्घपात्रेण सह संयोजयि
ष्ये इत्युक्त्वा । औं येसमाना इति मंत्रद्वयांते तृतीयांशमर्घ्येणैवार्धे क्षिपेत् । तेन आदित्यलोकप्रा
प्तिः ३ (मातुः सर्पिडीकरणेतु० अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं उत्तम
लोकावाप्त्यर्थं सर्पिडीकरणश्राद्धे तदर्घपात्रस्थं प्रथमांशजलं अमुकगोत्रायाः अस्मत्पिताम

हदेवें इस्सें आदित्यलोक प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ इसीतरहै पित्तके सर्पिडीश्राद्धमें पात्रमेल करणा चाहिये । अब माताका सर्पि-
डीश्राद्धमें पात्रमेलनका विधान लिखतेहैं । माताके अर्घपात्रका पवित्र अपनी दादाके अर्घपात्रमें धरे । फिर प्रंतरूप-

त्रोंको मिलन करे (पात्र मिलानेकी विधि लिखतेहैं) प्रेतके अर्घ्यपात्रका पवित्रा उसके पिताके अर्घ्यपात्रमें स्थापनकरे फिर प्रेतके अर्घ्यपात्रको लेके उसमासे एकहिस्सेका जल (येसमाना०) दूसरे मंत्रको पढके अपने पितामहके अर्घ्यपात्रमें
 स्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं तत्पात्रस्यं प्रथमांशजलं असुकगोत्रस्य प्रेतपितुरसुकशर्मणः
 वसुरूपस्य अर्घ्यपात्रेण सह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा। ओं ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये
 तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ? येसमानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः । ते
 पाठ० श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन्लोके शतठ० समाः २ इति मंत्रद्वयांते । प्रथमांशमर्घ्येणवार्धे क्षिपे
 त् तेन वसुलोकप्राप्तिः ॥ १॥ ततः प्रेतपवित्रं तत्पितामहार्धे निधाया प्रेतार्धं गृहीत्वा । ओं अ
 सुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनि० प्रेतार्घ्यपात्रस्थं द्वितीयांशजलं असुकगोत्रस्य प्रेतपितामहस्य
 स्वरूपस्य अर्घ्यपात्रेण सह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा । ओं येसमानाः समनसः पितरो० येसमा
 पितृतीर्थसे योडासा डालदेवे. इससे वसु लोक प्राप्त होताहै १ पश्चात् दूसरे प्रेत पितामहके अर्घ्यपात्रमें प्रेतका पवित्रा
 रखसे और प्रेतके अर्घ्यपात्रका जल (येसमाना०) यहै २ पढके अपने परदादेके अर्घ्यपात्रमें दूसरे हिस्सेका जल डाल-

हिस्सेका जल बुद्धिदादीके अर्घपात्रमें घालदेवै इस्से आदित्यलोक प्राप्तहोताहै ३ इति मातृसर्पिडने पात्रमेलनम् । अर्घ-
 पात्र मिलानेके अनंतर प्रेतके पवित्रेको प्रेतार्घपात्रमें रखके उसीके आसनसमीप स्थापन करदेवै और दादे आदिको
 अर्घदान करे (अब अर्घदेना लिखतहै) प्रथम दादेका अर्घपात्र वामे हाथमें लेके उसका पवित्रा आसनके अगाडी
 शमर्घणैवांघं क्षिपत् ३ । इति मातृविषये विशेषः) । तत अनेन अर्घसह योजनेन
 प्रेतस्य सद्गत्युत्तमलोकप्राप्तिः इतिपठित्वा । प्रेतय वित्रं प्रेतार्घपात्रे कृत्वा । प्रेतसमीपे
 उत्तानं पात्रं स्थापयेत् ॥ ततः पितृगणामर्घदानम् ॥ तत्रादौ पितामहार्घपात्रं वामहस्ते
 कृत्वा । पवित्रं पितामहपात्रे दत्त्वा । ओं या दिव्याऽ आप इत्यर्घपात्रम भिमंभ्य ।
 दक्षिणहस्तेन ओं अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन् एष ते हस्तार्घःस्वधां नमः ।
 पचलपे रसे और (यादिव्या०) इस मंत्रसे अर्घपात्रको अभिमंत्रणकरके दक्षिणहाथमें लेवै । फिर (पितामह) दादेका-
 नाम उच्चारण करणके अनंतर पचलपर रखिहुई (पवित्र) दर्भापे किंचित् अर्घका जल पितृतीर्थसे अर्थात् दाहणें अं-
 गुटे और आगली अंगुलीके बीचकर छोडदेवै ३ । इसीतरै. (प्रपिता) परदादेको (बृद्धप्रपिता) बुढे दादेको

माताके अर्घको ग्रहणकरके उसके एकहिस्सेका जल (येसमाना०) इण २ मंत्रोंको पढके दादीके अर्घपात्रमें घोडा-
सा जल डालदेवे इस्से वसुलोक मिलताहे १ । फिर इसीतरहे, पढदादीके अर्घपात्रमें प्रेतरूपमाताका अर्घपवित्रघरे
ह्यः अमुर्कीदेव्याः गगरूपिण्याः अर्घपात्रेणसह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा । ओं ये समाना० इ
ति मंत्रद्वयाति प्रथमांशमर्घेणैवार्षे क्षिपेत् ३ पुनः अमुकगोत्राया० प्रेताया० अर्घपात्रस्थं द्वि
तीयांश जलं । अमुकगोत्रायाऽस्मत्प्रपितामह्यः यमुनारूपिण्याः अर्घ्यपात्रेण सह संयोज
यिष्ये इत्युक्त्वा । येसमाना० इति मंत्रद्वयान्ते द्वितीयांशमर्घेणैवार्षे क्षिपेत् २ पुनः अ
मुक प्रेताया० अर्घपात्रस्थं तृतीयांशं जलं अमुकगोत्रायास्मत् वृद्धप्रपितामह्यः सरस्व
तिरूपिण्या अर्घ्यपात्रेणसह संयोजयिष्ये० । ओं येसमाना० इति मंत्रद्वयान्ते तृतीयां
और (येसमानाः०) इण २ मंत्रोंकरके प्रेतके अर्घपात्रका जल दूसरे हिस्सेका डालदेवे इस्से रुद्रलोक मिलताहे २
फिर बुढीदादीके अर्घपात्रमें प्रेतका पवित्र घाले और प्रेतके अर्घपात्रको लेके (येसमाना०) इन दोमंत्रोंकरके तीसरे

हिलवेभी नहि । इत्यर्थप्रकारः । अथ गंधादि दानम् ॥ प्रथम, प्रेतके और पितामह, वृद्धप्रपितामहके छुदेर
 आसनोपर, गंध, पुष्प, तुलसीपत्र, धूप, दीप, तांबूल, पूगीफल, यज्ञोपवीत, वस्त्र (धोती. सांफा) आदिछुदार रखके
 रेन्न चालयेत् ॥ इत्यर्थदान प्रकारः ॥ अथ गंधादिदानम् ॥ तत्र तावलेतस्थाने गंध पुष्प धूप
 दीप तांबूल वासांसि दृत्वा । कुशत्रय तिल जलान्यादायाओ अद्यामुकगोत्र असुकप्रेत स
 पिंडीकरणश्राद्धे एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल यज्ञोपवीतवासांसि ते मया दी
 यते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ॥१॥ पुनः पितामहादि स्थानत्रये दृत्वा । द्विगुणभुग्नकुशत्र
 यादीन्यादायाओ अद्यामुकगोत्र पितामहासुकशर्मन्वरूप एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबू
 ल पूगीफल यज्ञोपवीत वासांसि तुभ्यं स्वधा नमः । इति पितामहाय गंधादीन्युत्सृजेत् । ए
 वमेव प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय च गंधादीन्युत्सृजेत् ॥ ततः कृतांजलिः ओं पितृणाम
 र्चनं संपूर्णमस्विति प्रार्थ्य । अस्त्वर्चनं संपूर्णमिति । प्रतिबचनानंतरं गौरमृतिकया जलादि
 संपूर्णका गोत्र नाम उच्चारण करके प्रेत और पितामहादिकोके अर्थ ऊपरकी संकल्पशित्तिसे अर्पणकर देवे और संक

अपने २ अर्घपात्र करके पवित्रीपर अर्घदान करे और पवित्र जलसहित संपूर्णपात्र छुदा २ अपने २ आसनके अगा-
डी स्थापन करदेवे । फिर प्रेतके अर्घपात्रको लेके उसीके चामेभागमें अर्घ्यात् निर्ऋतिकोणमें सुधाहि स्थापनकरे और
वृद्धप्रपिताका तथा प्रपिताके अर्घपात्रका पवित्र जल आदि पितामह (दादे) के अर्घपात्रमें घालदेवे । फिर पितामह-

इति पितृतीर्थेन पवित्रोपरि पूर्ववत् दद्यात् । एवमेव प्रपितामह वृद्धप्रपितामहाभ्यां दद्यात् ।
अवशिष्टजल्युतान्यर्घपात्राण्यत्रे स्थापयेत् । ततः प्रेतार्घपात्रमासनवामपार्श्वे तूष्णीं उत्तानं
न्युब्जवा स्थापयेत् । ततो वृद्धप्रपितामहाद्यर्घपात्रस्थानि जलपवित्रादीनि पितामहार्घपात्रे
कृत्वा तं ओं पितृभ्यः स्थानमसीत्सुक्त्वा आसनवामप्रदेशभ्रूमावसंचरे न्युब्जमुखं स्थापयेत् ।
तदुपरि प्रपितामहाद्यर्घपात्रंद्वयं दद्यात् । एतानि स्थापितपात्राणि दक्षिणादानपर्यंतं नोद्ध

के अर्घपात्रको लेके उसीके निर्ऋतिकोणमें (पितृभ्यः स्थानमसीति) इसमंत्रसे (न्युब्ज) मुद्रा स्थापनकरे और उ-
सीके ऊपर प्रपितामहादिकें दो पात्रोंको अघरसी कंधा धरदेवे । परत. इण मुद्देक्रिये होये पात्रोंको सूधा नहि करे और

निराला रसवेवे (यहे हतशेष अन्न प्रेतके भोजनपात्रमें नही देना चाहिये । और विश्वेदेवोंके पात्रमेंभी नही देणा कि-
साहं कयुकी ऊपरके वसिष्ठके प्रमाणसे निषेध है) पश्चात् सव्यहोके देवपात्रमें और अपसव्य करके प्रेत. पितामह आ
पिहार्थ चावशेषयत् (तदमौकरणशेषसहितं पात्रमसंचरदेशे निदध्यात्) तदवशिष्टं न प्रेतपा
त्रे-दानं न च विश्वेदेवपात्रे (नहिस्मृताः शेषमाजो विश्वेदेवाः पुराणैरिति हेमाद्रौ वसिष्ठस्म
रणात्) । ततः सव्यादिना देवपात्रे अपसव्यादिना प्रेतपात्रे पितामहादिपात्रेषुच स्वं स्वं
उष्णमन्नं सघृतं अनेकव्यंजनयुतं सुशीतलज्जलसहितं यथावत् परिविश्य । मधुनाभिघार्य
ओं मधुव्वाताऽऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिधवः । माद्धीन्निः सन्त्वौषधीः १ ओं मधु नक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिवर्तं० रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता २ ओं मधु मान्नो व्वनस्पतिर्मधुमांऽ अस्तु
सूर्यः । माध्वीर्गावो भवंतुनः ३ ओं मधु मधुमध्वित्यभिमंत्रयेत् ॥ तत उदङ्मुखः सव्यादि
दिके पात्रोंमें छुटा २ गरम २ अन्न और घृत, शाग, दही, बडे, पकोरी आदि अनेक व्यंजन. ठडा २ पानिका गिलाश,
अछितर खुदे ३ पात्रोंमें परिवेण करके अत्रके मधु (सहत) लगावे और (मधुवाताऽऽ ऋतायते०) इत्यादि तीन मंत्रपढ़के

लपका जल आसनोके पास छोड़देवे । अनंतर. अंजलिंकरके पितरोका अर्चन परिपूर्ण होवो ऐसे कहके प्रार्थनाकरे । और सुपेदगद्दी. बालुरेत. या. जलकरके अपने २ आसनके बाहरकर मंडलकरे । फिर खुदारभोजनके अर्थ पात्र या पत्तल स्थापन करदेवे । भोजनपात्रदेनेके अनंतर अन्नोकरणहोम लिखतेंहे । प्रथम (व्यंजन) शाक. लूण. मरिच. स्वार. आना वा प्रत्येक मंडलं कृत्वा भोजनपात्राणि दद्यात् ॥ अथान्नोकरणम् ॥ तावत् व्यंजनक्षारवर्जितं घृताकमुष्णमन्नं श्राद्धीयान्नाग्रभागं कांस्यपात्रे कृत्वा । ओं अन्नोकरणं करिष्ये इति पृष्ठा । ओं कुरुष्वेत्यनुज्ञातोऽपसव्यादिना एव रजतादिपात्रस्थजले । ओं अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा । इदमग्नये कव्यवाहनाय । ओं सोमायपितृमते स्वाहा । इदं सोमाय पितृमते इत्याहुं तिद्वयं सुहुयात् ॥ ततो हुतशेषमन्नं पितामहादि पात्रत्रये किंचित्किंचित्पितृतीर्थेन दत्त्वा । दिवस्तुरहित घृतकरके युक्त. गरम. श्राद्धकेयोग्य अन्नमेंसे (अग्रभाग) चार ४ ग्रास उनमान कांसिके पात्रमें घालके अपसव्यहिसे चांदी, तामे आदि पात्रस्थित जलमें (ओं अग्नये कव्य० ओं सोमाय पितृमते०) इण मंत्रोकरके दो २ आहुति देवे । पश्चात्. अवशेष बंचाकवा अन्न योडार दादे. परदादे. बुढेदादेके भोजनपात्रोंमें देवे और थोडा पिंडके अर्थ

देवोंके योग्य ऋमृतरूप अन्न विन्धेदेवोंके अर्घ्य करें और संकल्पका जल आसनके दक्षिणतरफ भूमिमें रखानावेदे। पञ्चमस्त
 अपसव्य दक्षिणमुख पातितवामजानुकरके प्रेतपात्ररहित पितामहादि तीनपात्रोंके हस्तालंमम करें- और प्रेतपात्रके
 तो बाहरकर (अपहृता०) इसेतिल विकीरण करके वामें हाथसे अन्नपात्र स्पर्श करताहुवा. कुशत्रय तिल जल लेके
 देवा इदमन्नं हव्यं सोपस्करं अमृतरूपं वः स्वाहा नमः । इत्युदकं देवतीर्थेन देवदक्षिणभागे
 भूमौ निक्षिपेत् । ततोऽपसव्यादिना प्रेतपात्रवर्ज्यं पितामहादि पात्रत्रयालंमः । प्रेतपात्रस्य तु
 परितः । ओं अपहृताऽअसुरा रक्षाठं० सि व्वेदिषदः । इति तिलान् विकीर्य । वामेन करेण स्पृ
 शन् । कुशत्रयादिना ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत सर्पिंडीकरणश्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्करसहि
 तं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् । ततः पितामहपात्रं न्युञ्जाभ्यां व्यस्ताभ्यां
 पाणिभ्यां स्पृष्ट्वा । ओं पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतेऽअमृतं शुहोमि स्व
 प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके प्रेतके अर्पण करदेवे । फिर पितामह (दादे) के अन्नपात्रको ऊधे दोनों हाथ-
 से (व्यस्त) अर्थात् वामेहाथसे पात्रके पश्चिमकरनेको और उर्सीके ऊपर करगये होये दाहणे हाथसे पूर्वके क-

(मधु मधु) यहै तीनबेर जपे । पश्चात् उत्तरमुख होके सव्यसे मूधा दोनों हाथों करके देवतोंका अन्नपात्र स्पर्श करे और (ओंपृथिवीते पात्र० ओं इद विष्णु०) यहै दो २ मत्र पठके । अपने दाहणे अगुठेको मूधा करके नखरहित ऊपरका भाग (ओं विष्णोहव्यर्थ० रत्न०) इसमत्रसे अन्नके ऊपर ध्रमावे । फिर यह अन्नहै, यह जलहै, यह घृत है,

ना उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रमालम्य । ओं पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽ अ
मृतेऽ अमृतं छहोमि स्वाहा । ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदमासमूढमस्यपार्थ० सुरे
इति पठित्वा । स्वदक्षिणकराङ्गुष्ठं अधोमुखमनखं । ओं विष्णो हव्यर्थ० रक्ष इत्यनयाऽन्ने निवे
श्य । ओं इदमन्नं, ओं इमा आपः ओं इदमाज्यं, ओं इद हविरित्युक्त्वा । अपहताऽ असुरा रक्षा
ठ० सि व्वेदिषदः । इति पात्रपरितो यवान् विकीर्ये । करेण पात्रं स्पृशन् । दक्षिणकरे कुशत्रय
यव जलान्यादाय । ओं अद्यास्मत्पितामहादित्रय श्राद्धसंबन्धिनः काल काम संज्ञिका विश्वे
यद् हविर्हे ऐसापठके (अपहता०) इस मत्रकरके अन्न पात्रके बाहरकर यव विकीरणकरे और वामे हाथसे अन्न-
पात्रको स्पर्श करताहुवा दक्षिणहाथमें त्रिकुश यव जल लेके सकल्पद्वारा परिवेषण कियाहोया सामग्रीसहित (हव्य)

नोरों स्पर्श करके (आ पृथिवीते० ओं इदविष्णु०) इत्यादि मंत्रोंको पढ़े और (विष्णोकव्यर्थ० रक्ष०) इस यहु-
 बंदके मन्त्रकरके दाहने हाथके ऊधे अगुठेको अन्नके ऊपर भ्रमवै और (इदमन्न) इत्यादि पढ़के अन्नके बाहरकर
 (अपहता०) इसमंत्रसे तिल विकीरणकरे । फिर अन्नपात्रको वामे हाथसे स्पर्श करताहोया दाहनेहाथमें मोटक तिल
 धा इति पठित्वा । ओं इदम्बिष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूष्मस्यपाठ० सुरे । इत्येतामृचं
 चजस्वाऽधोमुखं स्वदक्षिणकराद्बुधमनसं । ओं विष्णो कव्यर्थ० रक्ष इत्यन्ने निवेश्य । इदमन्नं,
 इमाआपः, इदमाज्यं, इदं हविरित्युवत्वा । ओं अपहताऽअसुरा रक्षाठ० सिं व्वेदिपदरिति तिला
 न् पात्रपरितो विकीर्य । वामकरेण पात्रं स्पृशन् । दक्षिणकरेण द्विगुणभुग्मकुशत्रयादीनि
 चादाय । ओं अद्यामुकगोत्र पितामहामुकशर्मन् वसुरूप इदमन्नं कव्यं सोपस्करं अमृतरूपं
 तुभ्यं स्वधा नमः । इत्युदकं पितृतीर्थेन आसनवामभागे भूमौ क्षिपेत् । एवमेव प्रपि
 जल छेवे और अपने पितामह (दादे) का गोत्रनाम उच्चारणकरके सकल्पद्वारा पितामहकेअर्थ उपस्करसहित अ-
 न्नका त्याग करे और सकल्पका जल आसनके वामभागमें छोडदेवे । इसीतरे प्रपितामह वृद्धप्रपितामहके गोत्र

ली वेदी पिताम्बर आदिके तीन सिंड देनेके अर्थ बनावै । फिर पिताम्हादिकी वेदीकेबीच दीपसेवाली दर्भासे (अप-
 हा०) इस मंत्रको पठके दक्षिणको अग्रभागकरके दश अंगुल लंबी एक रेखा निकाले और (येरूपाणि०) इस मंत्रसे
 जलताहाया वृण रेखाके ऊपरकर अग्रको दक्षिणको धरदवै (यहै रेखा उल्मुक भ्रामण प्रेतस्थानमें नहिकरणा
 दृश्यमेव स्थानं कुर्यात् । ततः पितामहादिस्थानमध्ये दर्भापिंडलीमूलेन ओं अपहताऽ असुरा
 रक्षा ई० सि व्वेदिपदरिति दक्षिणाग्रां रेखां सकृद्विल्य । दर्भापिंडलीमुत्तरस्यां दिशि निक्षिप्य ।
 ओं येरूपाणि प्रतिमुंचमानाऽ असुराः संतः स्वधया चरंति परापुरो निपुरोयेभरंत्यग्निद्विंष्टौ
 कालप्रणुदात्यस्मात् इति मंत्रेण ज्वलदुल्मुकं रेखोपरि भ्रामयित्वा । दक्षिणतो निदध्यात् ।
 ततः रेखोपरि उपमूल सकृदाच्छिन्नकुशान् दक्षिणाग्रान् स्तीर्त्वा । प्रेतस्थाने समूल कुशत्रयं
 घृत्वा । देवताग्यरिति त्रिर्जपेत् । ततः पुटकचतुष्टये जल तिल गंध पुष्पाणि कृत्वा । एकं पुटकं
 चाहिये) पम्बात् वेदीसे रेखाकेऊपर जडकेसमीपसे अछितर छेदिहोई कुशासे और प्रेतस्थानमें जडसहित कुशात्रय
 दक्षिणको अग्रभागकरके स्थापनकरे । फिर (देवताग्यः०) यह मंत्र तीन बेरपढके चार ४ पात्र (डोनों) में जल

पठे। फिर अपसव्य आदिकरके पितामह (दावे) के भोजनपात्रके समीप जलसे मूमि धोंके दक्षिणाय त्रिकुश रखे। फिर सर्वतरहका अन्न, व्यजन, तिल, जल, सहित लेंके (अग्निदग्धा०) इस मंत्रसे दर्भाके ऊपर अन्नको विकीरण कर देंगे। पथात् सव्यहोंके आचमन और हरिस्मरण गायत्रीजप करे और अपसव्य आदि करके (मधु-पठेत्। ततोऽपसव्यादिना पितामहपात्रसन्निधौ भूमिं प्रोक्ष्य। तत्र दक्षिणाय कुशत्रयमास्तीर्य सर्वप्रकारमन्नं सव्यंजनसुद्धृत्य०सतिलमेकीकृत्य। ओं अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यऽदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परां गतिम्? इति मंत्रेण कुशोपरि तदन्नं विकिरेत्। ततः सव्यं कृत्वा आचम्य, हरिं स्मृत्वा, गायत्रीं जपित्वा। अपसव्येन ओं मधु व्वाता इति ऋचं, मधु मधु मध्विति च पठेत्। तत उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणप्लवं रमणीयं हस्तमात्रं चतु रंगुलोच्छ्रितं प्रेतपिंडपातनार्थं स्थानं निर्माय। तत्पूर्वे अपरं पितामहादित्रयपिंडदानार्थं च ता गता०) इत्यादि तीन मंत्रपठके भोजनपात्रके समीप चोक्रोण दक्षिणको नीचा रमणीक चोविस २४ अंगुलचोडा पार अंगुलकंचा एकस्थान (बेदी) मढि रेव, आदिसें प्रेतके पिंडदानके अर्थ बणावें और इसीतरे उसके पूर्व दू-

गर्म २ अन्न थोडा २ लेकें अम्लीकरणशेष, सहत, घृत, तिल, शाल आदि मिलाकें एक करे और वीलके फलकीमा-
फिक तीन पिंड बनाकें सहत, घृत करके । चीकना करे । फिर प्रेतवाला पिंड, कुशत्रय, तिल, जलसहित लेकें प्रेतका

णशेष मध्वाज्यतिलव्यंजनयुतं पात्रे कृत्वा । एकीकृत्य, बिल्वोपमां स्त्रीन् पिंडान् निर्माय, मधु
घृतान्यामिभिवार्य, क्रमेण दद्यात् । तत्र प्रथमं प्रेतपिंडं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अद्या
सुकृगोत्र असुकप्रेत सर्पिंडीकरणश्राद्धे एपते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथम वेदि
कायां कुशोपरि सव्योपगृहीत दक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन पिंडं दद्यात् १ ततो द्वितीयपिंडं
कुशादीनि चादाय । ओं असुकगोत्र पितामहामुकशर्मन् वसुरूप एष ते पिंडः स्वया
नमः । इति द्वितीयवेदिकायां प्रथमावनेजनस्थाने पितामहाय पूर्ववद्दद्यात् २ एवं

गोत्र नाम उच्चारण करके प्रथम वेदीकी कुशाके ऊपर दोनों हाथोंको मिलाकें दाहणे हाथसे प्रेतके अर्थ पिंड दे देवे
फिर दूसरा पिंड और मोटक आदि लेकें पितामहका नाम उच्चारण करताहूवा दूसरी वेदीपे कुशाके मूलदेशमें दादेके-

तिल, गन्ध, पुष्प, घाले और एक पात्र दाहणे हाथमें लेके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करताहुवा प्रथम बेदीपे अ-
वनेजन देवे । फिर दूसरा पात्र लेके पितामह (दादे) के अर्थ दूसरी वेदीकी दर्भाके जडके ऊपर गोत्र नाम लेके

दक्षिणकरेण गृहीत्वा । ओं अमुक०प्रेत सर्पिंडीकरणश्राद्धे अत्रावने निक्ष्वते मया दीयते त
त्रवोपतिष्ठामिति पितृतीर्थेन प्रथमवेदिकायां कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् । ततो द्वितीयं
पुटकं गृहीत्वा । ओं अमुकगोत्र पितामहामुकशर्मन् वसुरूप अत्रावनेनिक्ष्वते स्वधा इति
कुशामूले पितामहाय पितृतीर्थेनावनेजनं दद्यात् । एवमेव प्रपितामहाय कुशमध्ये बृद्धप्रपि
तामहाय कुशाग्रे चावनेजनं दद्यात् । ततः प्रेतपाकमध्यात् प्रेतापिंडं तिल मध्वाज्यसहितं
नारीकेलाकारं कृत्वा ततः पितृपाकात्सर्वस्माच्छूद्रशेषान्नाहुष्णं किंचित्किंचिदुद्धृत्य । अनौकर

अवनेजन देवे । इसीतरे दर्भाके बीचमें परदादेके अर्थ और दर्भाके अग्रभागमें बुढेदादेके अर्थ क्रमसे अवनेजन दान-
करे । पश्चात् प्रेतके पाकसेति तिल, सहल, घृत आदिमिलाके नोरलेके आकार एक पिंड बनावे और पितृपाकसे संपूर्ण

देवैः) फिर प्रातः १२ जलसहित घट और एक पकाअणूरित वर्द्धिनी कलशका दानकरै। सव्यहोके संकल्प उच्चारणक
 रके (यै पकान्नसँ भराहुवा कुंभ विष्णुदेवत अमुकप्रेतके प्रेतनिवृत्तिकेअर्थ अमुकब्राह्मणको देताहु) ऐसँ कहके संकल्पका
 वासिश्चास्त्विति पठेत्। (अथत्रयोदशकुंभसंकल्पः। सव्येनाचम्य, स्वात्रे सपक्वान्नोदकुंभं नि
 धाय। देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) औ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य स्वर्गकामः (सव्यं)
 इदं सपक्वान्नोदकुंभमेकं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायासुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।
 इति संकल्प्यावर्द्धिनीसंज्ञकं कुंभं कस्मैचिद्ब्राह्मणाय दद्यात्। एवं कुंभमेकं यमचित्रगुप्तप्रीत्यर्थ
 मपि दद्यात्। ततोऽपसव्यं कृत्वा। कुशत्रय तिल जलान्यादाय। औ अमुकगोत्रस्यामुकप्रे
 तस्य क्षुत्पिपासानिवृत्त्यर्थं इमे द्वादशकुंभाः सान्नोदकाः, सवखाः, नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्म
 णेभ्यो दातुमहमुत्सृजे इति संकल्प्य। सुशीतलजलोपेताः सर्वोपस्करसंयुताः। एते घटा म
 जल छोहदेवै और कुंभ ब्राह्मणको देदेवै। इसीतरे एक कुंभ पकान्नसहित यम चित्रगुप्तके अर्थ दानकरै। फिर अपस
 व्यसँ कुशत्रय तिल जल केके प्रेतकी यूत्स, प्यास निवृत्तिकेअर्थ जलसँ भराहुवा अन्न, वस्त्र सहित ब्राह्मणोंको दानकरै

अर्थ पिंडदानकरे । इसीतरे तीसरा धरदादेकेअर्थ और चौथा बुढेदादेकेअर्थ अपने २ अवेनेजन स्थानमें पिंडदेवै । फिर पितामहादिके पिंड नीचेकी कुशाके जडमें (ओं लेपभागभुजः पितरस्तृप्यंतु०) यहै मंत्र पढ़के दाहणे हायके लगाहुवा अन्न पुंछ डाले । फिर जलसे हाय घोंके सव्यसे नो९ वेर आचमन करे और हरिस्मरण करे और अपसव्य होके पहले प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय च दद्यात् । ततः पितामहादि पिंडास्तरणकुशभूले ओं लेपभागभुजः पितर स्तृप्यंतु इति पठित्वा । दक्षिणहस्तं प्रोच्छ्वय, जलेन हस्तौ प्रक्षालयेत् । ततः सव्यंकृत्वा, त्रिराचम्य हरिं स्मरेत् । ततोऽपसव्येन प्रेतपिंडे पूर्वदत्ता वनेजनपात्रेण । ओं असुकगोत्र० प्रेत सपिंडीकरणश्राद्धपिंडेऽत्रप्रत्यवने निध्वते मया दी यते तवोपतिष्ठतामिति प्रत्यवनेजनं दत्त्वा । सूत्राच्छादन गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादिभिः प्रेतपिंडमभ्यर्च्य । अनेन पिंडदानेन प्रेतस्य सद्गतिः उत्तमलोका दियेहोये अवेनेजनपात्र करके प्रेतपिंडके ऊपर प्रत्यवनेजन देवै और मूत्र, चंदन, पुष्प, तुलसीपात्र, धूप, दीप, तांबूल, पू गीफल, दक्षिणा आदिकरके पिंडकी पूजाकरे (इस पिंडदानकरके अमुकप्रेतका प्रेतत्वपणा दूरहोवो ऐसे कहके जल छो

तकापिंड मिलान करताहूँ । ऐसे कहके संकल्यका जल छोड़देवै । पश्चात् प्रेतके पिंडका प्रथमभाग वाम हाथमें लेवे और दादेका पिंड दाहणे हाथमें लेके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके अर्थात् अमुकप्रेतके पिंडका प्रथमभाग मेरे दादेके पिंड तृपितामह प्रपितामहानां पिण्डैः सह अमुकप्रेतस्य पिंडसंयोजनं करिष्ये । इति संकल्यत्ततः प्रेतपिण्डस्य प्रथमभागमादाय । वामहस्ते कृत्वा । दक्षिणहस्ते पितामहपिंडं धृत्वा । अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रथमपिंडशकलं अमुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकशर्मणः वसुरूपस्य पिंडेन सह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा । ओं येसमानाः सुमनसः पितरो यमराज्ये । तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ? ये समानाः सुमनसो जीवा जीवेषु मामकाः । तेषां ठं श्रीमयि कल्पतामस्मिन् लोकै शतठं समाः इति मंत्रद्वयेन मधु घृताक्तं वर्तुलं कुर्यात् । ततो द्वितीयं प्रेतपिंडभागमादाय । अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य द्वितीयं पिण्डशकलं अमुकगोत्रस्य प्रथमपिंडमिलताहौ । ऐसे कहके (येसमानाः ०) इत्यादिक दो २ मंत्रोंसे अछितरे पिंडादेके गोल करदेवै और सहत घृत का मालसकरे १ इसीतरे प्रेतपिंडका दूसरा भाग लेके ऊपरके वाक्यको उच्चारणकरै और (येसमानाः ०) इण दोमंत्रोंसे

श्रीर शीतल जल बस्त्र, अन्न आदिसहित यहै १२। घट प्रेतकेनिमित्त देताहो सो परलोकमें प्राप्त होवो ऐसे पढके देश कुल परपरासँ ब्राह्मणको देदेंवै । फिर पिंडमेलनकरे (अथ पिंडमेलनप्रकार लिख्यते) प्रथम प्रेतपिंडके ऊपरका सूत पुष्प आदि उत्तारदेवे और सुवर्ण, चादी, ताम्बे, आदिकी शलाका अथवा दर्भाको रस्सी सहत घृतसँ मालसकरोहोई लेके प्रेतके

या दत्ताः स्वर्गद्वारोपतिष्ठतामिति पठित्वा यथाचारं दद्यात् । एभिः घटदानैः प्रेतस्य क्षुधा वृथा निवृत्तिरस्तु इतिकुम्भदानम् ॥ अथ पिंडसंयोजनम् । तत्र तावत्प्रेतपिंडे सूत्रादिकमपनीय । हस्तद्वयेन सुवर्णरजतादिशलाकां, तदभावे दर्भमयीं रज्जुं मधु घृताक्तामादाय । तथा प्रेतपिंडं सम त्रेधा विभजेत् । ततो द्विगुणभुक्तशत्र्यादीन्यादाय । ओं असुकगोत्रस्यासुक प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं पितृसमत्वं प्राप्त्यर्थं वस्वादिलोकप्राप्त्यर्थं च असुकगोत्राणां तत्पिंडवा तीन भागकरे और पितामह आदितीनापिंडोमें सकल्प पढके जुदा २ मिलदेवै । पिंडमिलनेको विधि लिखतेहै ॥ प्रथम कुम्भामय, निल जललेक, सबत्, मास पक्ष आदि ऊच्चारणकरके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करे और अमुकनाम वाले प्रेतका प्रेतभाव निवृत्त होने और पितृयोग्यहोनेकेअर्थ उसिके, पिता, पितामह, प्रपितामहके पिंडोकरके सहित प्रे

सनप्रकारः (यदिमाताकामपिंडीश्राद्ध होवेतो इसतरहे पिंडमेलन करे) कुशत्रय, तिरु, जल लेके संकल्प पठे और प्रेत रूपमानाका नाम लेके अर्थात् अमुकनाम प्रेतरूपमाताका प्रेतभाव निवृत्त होनेके अर्थ हमारी दादी, परदादी, बुढीदा

शेषः । देश कालो संकीर्त्य । ओं अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं पितृस मत्वप्राप्त्यर्थं वसुध्वादित्यलोकप्राप्त्यर्थं च अमुकगोत्राणां अस्मत्पितामही प्रपितामही बृद्धप्र मितामहीनां अमुकामुकदेवीनां गंगा यमुना सरस्वतीरूपिणीनां पिंडैः सह अमुकभ्रैतायाः पिंडयोजनं करिष्ये इति संकल्पयेत् । ततः प्रथम भागं गृहीत्वा । अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः पिंडप्रथमांशः अमुक० अस्मत्पितामह्याः पिंडेन सह संयोजयामि इत्युक्त्वा । ओं ये समाना इति मंत्रद्वयेन पितामह्याः पिंडेन सह संयोजयेत् । तेन वसुलोकप्राप्तिः १ ततो द्वितीय

दीके पिंडोत्तरहेमरिति अमुकप्रेतका पिंड मिलताहें । ऐसे कहेंके संकल्प छोड देवें । फिर प्रेतके पिंडका प्रथम भाग उचें. दादीके पिंडमाथ ऊपरके वाक्य और (यसमानाः०) इण दोमत्रोंसे मिलके गोल करे । इससे वसु लोक प्राप्त होताहे

अपने परदादेके पिंडमें मिलाके गोल करे और सहत, घृतको मालस करदेते २ फिर प्रेतके पिंडका तीसरा हिस्सा
 लेके इसीतरे ऊपरके सम्यते और(येसमानाः०)इण दो मंत्रोंकरके अपने बुढ़ेदादेके पिंडसाथ मिलादेवे । फिर गोल कर
 पितामहस्यामुकशर्मणो स्वरूपस्य पिंडेनसह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा। येसमाना इति मंत्रद्वयेन
 प्रपितामहपिंडे नियोजयेत् २ । ततस्तृतीयं प्रेतपिंडभागमादाय । अमुक० प्रेतस्य तृतीयपिंड
 शकलं अमुक गोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्य० आदित्यरूपस्य पिंडेनसह संयोजयिष्ये इत्यु
 क्त्वा । ओं येसमाना इति मंत्रद्वयेन वृद्धप्रपितामहपिंडे नियोजयेत् ३ । एवं प्रेतभागोनसह
 पिंडत्रयं प्रत्येकमेर्काकृत्य समं वर्तुलं कृत्वा । प्रथमपिंडं कुशादीनि चादाय । ओं अमुकगो
 त्र पितामहस्यामुकशर्मन् वसुरूप एतत्ते पिंडं स्वधा नमः । इति पूर्वोक्तस्थाने पितृतीर्थेन दद्या
 त् । एवमेव प्रपितामह वृद्धप्रपितामहयोरपि दद्यात् । इति पिंडमेलनम् ॥ (अथ स्त्रीविषये वि
 के माल, गृनका, मालिस करदेते. ३ इसतरे तीनों भाग तीनों पिंडोंकेसाथ मिलाके पितामहादिकोंकी वेदीपे दर्भा
 के ऊपर क्रमसे अपने २ स्थानमे पितामहादिकोंका संबोधन रीतिमें नाम उच्चारण कर्ताहुवा पिंडदान करे । इतिपिंडमे

ऊपरांत भूलकेभी प्रेतशब्द ऊच्चारण नहीं करणा चाहिये । यहां निश्वासधेनुदान अथवा उसकेनिमित्त द्रव्य सव्यार्थोंके ऊपरकेसंकल्पसे ब्राह्मणकों देवै) पश्चात् अपसव्य होके(ओं अत्र पितरो) यहै मंत्र पठे और वामभागकीतरफसे उत्तरको द्यथा। सव्यं अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्यास्मात्पितुः पित्रादित्रयेण सह संयोजनेन चतुर्थस्य निवृत्तिर्जाता। तच्छ्लोकोपनयक्षमार्थं ब्राह्मणाय निश्वासधेनुदाननिष्क्रयरूपद्रव्यं दातुमहमुत्सु त्सृजे इति दद्यात्)। ततोऽपसव्यादिना।ओं अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमिति पठित्वा । वामावर्त्तेन उदङ्मुखो भूत्वा । प्रीतमनाः मनाक् श्वासं नियम्य । तेनैव यथा प रावृत्या।ओं अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत इतिजपेत्। ततः पूर्वदत्तावनेजन जले न ।ओं अमुकगोत्र पितामहामुकशर्मन् वसुरूप अन्न प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा नमः इति प्र थमपिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात् । एवमेव प्रपितामह वृद्ध प्रपितामह पिंडोपरि प्रत्यवनेज मुखकरके प्रसन्नमन, मोन होके श्वास बंधकियाहुवा ऊसीतरफसे पिछाहटकें(अमी मदंत०) इसमंत्रसे पिंडोपिश्वास तीन बेर त्यागन करे । फिर पहले दियेहोये अवनेजन पात्रोंकरके पितामह आदि तीनों पिंडोपर छुदेर संकल्पसे प्रत्यवनेजन

१ फिर इसीतरे प्रेत के पिंड का दूसरा भाग, परदादिके पिंडसाथ और तीसरा भाग, बुढीदादिके पिंडसाथ ऊपरके वाक्य और (येसमाना०) इण दो २ मंत्रोंकरके मिलदेंवै। इस्से रुद्रलोक. और आदित्यलोक प्राप्त होताहै। इति मावृपिंड भागमादाय। अमुक० प्रेतायाः पिंडद्वितीयांशः अस्मत्प्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयामि इत्युक्त्वा। ये समाना इति मंत्रद्वयेन प्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयेत्। तेन रुद्रलोक प्राप्तिः २ ततस्तृतीयभागमादाय। अमुक० प्रेतायाः पिंडतृतीयांशः अमुक० अस्मत् वृद्धप्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयामि इत्युक्त्वा। ये समाना इति मंत्रद्वयेन वृद्धप्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयेत्। तेन आदित्यलोकप्राप्तिः ३ इति स्त्रीविषये विशेषः)। ततः पिंडा नामभिमृशति। एष वानुगतः प्रेतः पितरस्तं ददामिवः। शिवमस्त्विति शेषाणां जायतां चिरजीविनां। अमानीच आकूर्ताः समानाहृदयानि वः। समानमस्तु वो चित्तो यथा वः सुसहासतीति जपेत् (अत ऊर्ध्वं कदाचित् भ्रांत्यापि प्रेतशब्दो नकार्यः। अत्रावसरे निश्वासधेनुदानं। तमेव प्रकारः) पिंडमिलानेके अनंतर. पिंडोंको स्वर्ग करताहुरा (एपनेलुगत० १ अमानीव० २) इणदोमंत्रोंको पठे (इस्से

धूप, दीप, तांबूल, सुपारी, दक्षिणा आदिसें तीनों पिंडोंकी पूजाकारके बचाहुवा अत्र पिंडोंकेपास, विकीरण करदेवै । कि
 र, सव्यहोके हाथ प्रक्षालनकरे उचरको मुखकरके देवपात्रमें (शिवा आप०) इस्सें जल डाले (सौमनस्यमस्तु०) इस्सें
 पुष्प और(अक्षतं चारिष्टं०) इसकरके यव (जौ) डालदेवै परंतु चावल नहिगरे(अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ताः०) इस स्मृतिसेअ
 धूप देवप तांबूल पूर्णाफल दक्षिणादीनि दद्यात् । पिंडशेषान्नं पिंडसमीपे विकीरेत् । ततः
 सव्यं कृत्वा । हस्तौ प्रक्षाल्य । उदङ्मुखो देवान्नपात्रे । ओं शिवा आपः संतु इति जलं । ओं सौम
 नस्यमस्त्विति पुष्पं । ओं अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति यवांश्च दद्यात् । ततोऽपसव्यादिना पितृपा
 त्रेषु । ओं शिवाआपः संतु । ओं सौमनस्यमस्तु । ओं अक्षतं चारिष्टमस्त्विति सोदकपुष्पाक्षितान्
 दद्यात् । (अक्षाताः यवाः) ततो द्विगुणभुन्नकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्य पितु
 रमुकशर्मणः वसुरूपस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् । एवं
 क्षनाम ययोंकाहिहै । फिर, इमीतरहे अपसव्यहोके पिताआदिके चारों अन्नपात्रोंमें जल, पुष्प, तिल, गेरे और कुशत्रयः
 जल, लेके (अमुकगोत्रं, नामत्राले मेरे पिताको दियाहुवा अन्न, जल आदिअक्षय प्राप्तहोवो, ऐसें पण्डितिविकिकेद्वारा

देवे और नीची (कड़मं रसिहोई तिलकुशा) पिंडोंके पाम रसके सव्यसे आचमन करे । फिर अपसव्य होके (ओं नमो वः पितरो०) इसमंत्रसे अंगुली बांधके प्रार्थना करे, और (ओं एतद्०) इसमंत्रको पठताहुवा । एक, एक, पिंडोपे

ने दद्यात् । नीचीं विघ्नस्य सव्येन आचम्य । अपसव्यादिना ओं नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितर स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देव्यः । इति कृतांजलिः पठेत् । तत ओं एतद्दः पितरो वासः॥ इति पठित्वा प्रत्येकं पितामं हादि पिंडोपरि सूत्रत्रयं धारयेत् । ततो द्विगुणभुग्नकुशत्रयादीन्याद्राय । ओं अमुकगोत्र पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहामुकामुकशर्माणः वसुद्रादित्यरूपा एतानि वासांसि शुष्मभ्यं स्वधा नमः इत्युसुजेत् । ततः प्रत्येकं पित्रानुद्दिश्य तदीयपिंडेषु, तूर्णीं गंध पुष्प

तीन २ मूत्रके तागे रसके संकल्पद्वारा पितामह, आदिकेअर्थ करदेवे । पश्चात् मंत्ररहित गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र

वित्रसहित कुशारस्त्रे (ओं स्वधां वाचयिष्ये०) इत्यादि वाक्योंको पठके (ओं उर्जी बहती०) इसमंत्रसे दक्षिणाग्रजलधा-
 रा देवे और पितामहआदिका (न्युञ्ज) ऊधा कियाहुवा अर्घपात्र सूधाकरके दक्षिणादान करै । प्रथम सव्यहोके सुवर्ण
 ओं उर्जी ब्वहन्तीरमृतं वृतम्पयः कीलालम्परिस्तुतम् । स्वधास्थतर्पयत मे पितृन् इति पिंडो
 पारं दक्षिणां जलधारां दद्यात् । ततोर्घपात्राण्युत्तानिकृत्य । सव्येन देवदक्षिणां दद्यात् ।
 तत्र कुशत्रय यव जल हिरण्यद्रव्यमादायाओं अध्यास्मत्पितामहादित्रय श्राद्धसंबंधिनां काल
 कामसंज्ञिक विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदेवतं यथानामगोत्राय ब्रा
 ह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इत्युत्सृजेत् । तदोऽपसव्यादि कृत्वा । द्विगुणभुन्नकुशत्रयादीनि रज
 तद्रव्यं चादायाओं अध्यासुकगोत्रस्य पितुरसुकशर्मणः कृतैतत्सापिंडीकरणनिमित्तकैको द्विष्ठ
 श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चंद्रदेवतमसुकगोत्रायामसुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इति
 कुशत्रय एव जलरंज और ऊपरका संकल्प उच्चारण करके विश्वेदेवोंके श्राद्धप्रतिष्ठाके अर्थ सुवर्णदक्षिणा ब्राह्मणको
 देदेवे । फिर अपसव्यहोके मोटक तिल जल रजत (चादी) को दक्षिणा धारणकरके पिता, दादा, परदादा बुढेदादा-

तिल अक्षयोदक दानकरे) फिर इसीतरे दादे, परदादे, बुहेदादेकोभी अक्षयोदक दानकरे । फिर सव्यसे पूर्वको मुख तन्मन, प्रसन्नचित्त करके अजली कियानुवा और दक्षिणको देखताहोया (ओं अघोराः पितरः सतु०) इसमनसे पूर्वोग्रजलधारा

पितामहाय प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय च सतिलमक्षयोदकं दद्यात् । ततः सव्यं कृत्वा ।
 प्राङ्मुखस्तन्मनाः सुमनाः कृतांजलिर्दक्षिणां दिशं पश्यन् । ओं अघोराः पितरः संत्विति
 पठित्वा । समाचारात्पूर्वाग्र जलधारां दद्यात् । तत ओं गोत्रं नो वर्द्धतां, दातारो नोभिव
 र्द्धतां । वेदाः संततिरेव च, श्रद्धाच नोमाव्यगमद्बृहदेय च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहुभवेद
 तिथीश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सतु माचयाचिष्मकं च नः । एताःसत्याशिषः संतु
 इति धाचेत् । ततोऽपसव्यादिना पिडोपरि सपवित्रान् कुशानास्तीर्य । ओं स्वधां
 वाचयिष्ये । वाच्यतां । पितृ पितामहप्रपितामहेभ्यः स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा ।

पिंडप देवै । फिर अजलीकरके (ओं गोत्रं नो वर्द्धता०) इत्यादि आशीप मागे । अनतर. अपसव्यहोके पिंडोकेऊपर प

पितरोका विसर्जन कारदेवे और (अमा वामस्थ०) इसमंत्रसे परिक्रमाकरके (देवताभ्य०) यह मंत्र तीनवेर जपे । फिर सब्य और अपसब्यहोके देव, पितृस्थानका दीपक निर्वापन, (बुध्नावे) और हाथ पैर, धोके सब्यसे आचमन

यात पथिभिर्द्वयानैः १ उत्तिष्ठतु पितरः (सब्यं) देवैः सह इति पितृन् विसृज्य । ओं अमा
 व्याजस्य प्रसवो इति परिक्रम्य। ओं देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति त्रिर्जपेत्। ततः सव्यापसव्याभ्यां
 देवपितृश्राद्धायदीपान् पाणिभ्यां निर्वाप्य । सब्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमनं कुर्यात्। ततः
 ओं प्रमादारुर्वतां कर्म प्रच्यवताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुति
 रिति पठित्वा । कर्यापूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः पिंडान् गां अजं वायसान् वा खादयेत् ।
 अग्नौ जले वाक्षिपेत्। ततो वैश्वदेववर्लिकर्मणि पार्वणवदाचरेत्। उच्छिष्टमार्जनं कुर्यात् । ततो

रं । फिर (ओं प्रमादात्०) इसश्लोकको पढके कर्मपूर्तिकेअर्थ श्रीविष्णुका स्मरण करे और पिंडोंको गौ, बकरा,
 गणले, घृतम, आदिमें सिलानेवे अथवा अग्निमें या जलमें डालदेवे। फिर वैश्वदेव बलिकर्म करके मकानकी शुद्धिकरे

के श्राद्धप्रतिष्ठाके अर्थ ऊपरके संकल्पोंसे छुदे २ ब्राह्मणोंको दक्षिणा दानकरै; परंतु विश्वेदेवोंकी दक्षिणा चांदीकी नहि दिवै. सुवर्ण नहिहोवै तो चांदीसे दूणेमोलकी ताम्र. फल श्रादिकी दक्षिणा देवै । फिर नम्र होके पिंडोंको थालीमें रखै
 पितृश्राद्धदक्षिणां दद्यात् १ पुनः कुशादीनि रजतद्रव्यं चादाय।ओं अमुकगोत्रस्य पितामह
 स्यामुकशर्मणो वसुरूपस्य कृतैतत्संपिंडीकरणनिमित्तकपार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजनं चंद्र
 देवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इतिपितामहश्राद्धदक्षिणां दद्यात् ।
 एवमेव प्रपितामह वृद्धप्रपितामहयोः श्राद्धदक्षिणां दद्यात् । (देवे रजतनिषेधः) ततो नम्री
 भूय, पिंडानुत्थाप्य, स्थाल्यां निधाय, अवाजिघ्रति।ततः सहृदाच्छिन्नान् कुशान् उल्मुकंच व
 न्हौ क्षिपेत् । ततः सव्येन ओं विश्वेदेवाः प्रीयंतामिति देवे वाचयित्वा (अपसव्येन) ओं व्वा
 जेव्वाजे वत व्वाजिनो नोधनेषुविप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः । अस्य मद्गुः पिवत मादयद्गुं तृप्ता
 ओर सुगंके पिंडोके नोचेकी दर्मा, उल्मुक अग्निमें डालदेवै. । पश्चात् सव्यसे (विश्वेदेवाः प्रीयता०) इसवाक्यको पढ-
 के अपसव्य करके (ओं वाजे वाजे०) इस मंत्रके द्वारा

प्राणायाम करें। फिर कुशत्रय तिल जल लेकर संकल्प उच्चारण करें और गोदानके अर्थ ब्राह्मण वरणन करके ब्रा-
 प्राणानायम्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय । देशकालौ संकीर्त्य० । ओं अमुकगोत्रस्यास्म
 रिपुरमुक्कशर्मणः स्वर्गकामो गोदानमहं करिष्ये । तदंगतया गोब्राह्मणस्यच पूजनं करिष्य
 इति संकल्प्य । ब्राह्मणं पाद्यादिभिः संपूज्य । हस्ते पुष्प चंदन तांबूल वासांस्यादाय । ओं
 अद्य करिष्यमाणगोदानार्थं त्वामहं वृणे इति वृणुयात् । ओं वृतोस्मीति प्रतिवचनम् ॥ अय
 गोपूजाक्रमः ॥ अवाहयाम्यहं देवी त्रैलोक्येषु चमातरं । यस्याः शरणमाविष्टः सर्वपापैः प्रमु
 च्यते १ इत्यावाहनं । त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुंधरा । सावित्री त्वंच गायत्री गं
 गा त्वंच सरस्वती ३ तृणानि भक्षसे नित्यं अमृतं स्रवसे प्रभो । भूतप्रेतपिशाचांश्च पितृदेव
 तमानुपान् ॥ सर्वास्तारयसे देवि नरकात् पापसंकटात् २ ओं भूर्भुवः स्वर्धनोइहा
 ब्राह्मणा चरण धीने, चंदन आदिसं पूजाकरे । फिर, गौकी पूजन करे (अवाहयाम्यहं०) इस्सें आवाहन, (त्वदेवीत्वं०)

और शक्तिमुजब दश १० या १०० या १००० ब्राह्मणोंको भोजन करावै । फिर अभ्यागत, भाई, बाधव, जातिवालों करके सहित आपधी भोजनकरे । फिर गणेशपूजा स्वस्तिवाचनआदि कर्म करके ब्राह्मणोंकी पूजन करे और ब्राह्मणोंकी आशीप लेवै (इस दिन कितने शिष्ट, वैतरणीनिमित्त गोदान और शय्यादान करतेहैं । इसवास्ते यहा गोदान-

दशप्रभृति श्रोत्रियान् यथाशक्ति भोजयेत् । ज्ञातिभिःसह स्वयमपि भोजनं कुर्यात् । ततो गणपत्यादिपूजनं कृत्वा । विमान् संपूज्य । तैर्देतान्याशीपो गृह्णीयात् । (इदानीं केचिच्छिष्टाः वैतरणीधेनुदानं शय्यादानं च कुर्वन्ति तस्मात्तत्प्रयोगो लिख्यते) ॥ अथ गोदानविधिः ॥ तत्रादौ पुण्यदेशे यथोक्तलक्षणवतीं गां प्राङ्मुखीमवस्थाप्य । यथोक्तलक्षणं सत्पात्रं तद्वत् भावे अनिषिद्धब्राह्मणं उपवेश्य । स्वयं गोपुच्छदेशे प्राङ्मुख उपविश्य । सव्येन आचम्य

विधि लिखतेहै) शुद्धजगें सुसील गुणयुक्त गौको पूर्वं मुखकरके स्थापन करे और उसीके पास उत्तम ब्राह्मणको बैठाव । सुद यजमान गौके पुच्छकीतरफ बैठके पूर्वको मुख किया आचमन,

नेत्रय सुबाँवे. (आछादन०) इसमंत्रसे वस्त्र २ उठावे. (यत्ने मयार्पित०) इसमंत्रसे घंटा चायर ष्यावि अर्पणकरे । फिर पत्रिमाकरके उत्तरको मुख किया हुवा गौका पुच्छ कुशत्रय तिल जल हेवै और अपनी शालाके अनुसार देव

अच्छादनंच कौशेयं शुद्धं चैव सुनिर्मलं। सुरम्ये दीयमानं तु प्रीयतां केशवः सदाऽइति वस्त्रं
यत्ने मयार्पितं शुद्धं घटं चायरमण्डितं। सुरभे तद्गृहाणेदं सुनित्रिदशवांदिते ९ इति घंटाचामरं
इति गंधादिभिः संपूज्य। प्रदक्षिणांकृत्या उदइमुखो गोपुच्छं गृहीत्वा। कृशत्रय यव तिलजलैः
कातीयवेदमंत्रैस्तर्पणं कुर्यात् । ओं देवा सुरास्तथा यक्षा नागा गंधर्वराक्षसाः। विशाचा गु
ह्यकाः सिद्धाः कृष्मांडास्तरवः खगाः ३ जले चरा भूमिलया वाद्याधाराश्च जंतवः। प्रीतिमते
प्रयान्त्वाशु महत्सेनाम्युनाखिलाः २ आब्रह्मणोये पितृवंशजाता मातृस्तथा वंशभवा मदीयाः
वंशद्वयेस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ३ ते सर्वे तुप्तिमायांतु गोपुच्छोदक

ऋषि, पितृतर्पण करे । फिर (ओं देवासुरास्तथा०) इण ३ श्लोकोसे जलादि देके

इस मंत्रसे स्थापनकरे । पश्चात् (सर्वदेवप्रियं०) इसमंत्रसे चंदन, कुंकुम लगावे (ऐरावतकुले०) इसमंत्रसे पुष्पचोडे गच्छ इहातिष्ठ । इति प्रतिष्ठापनम् ॥ ततः सर्वदेवप्रियं देवि चंदनं मलयोद्भवं । कस्तूरि कुंकुमाढ्यच गो गंधं प्रतिगृह्यतां ३ इति गंधं । ऐरावतकुले जाता शतक्रतुप्रिया सदा । या लक्ष्मीः सर्वभूतानां याच देवेष्वस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ४ इति पुण्याणि । अथांगपूजा । ओं आस्याय नमः । ओं शृंगाभ्यां नमः । ओं पृष्ठाय नमः । ओं पुच्छाय नमः । ओं पूर्वपम्धां नमः । ओं पश्चिमपम्धां नमः । ओं वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाठयो गंधउत्तमः । अत्रियः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यतां ५ इति धूपः । साज्यं च वर्तिसंतु क्तं वन्दिना योजितं मया । दीपं गृहाण सुरभे मया दत्तं हि भक्तिः ६ इति दीपं । वैष्णवि सुरभि मातर्नित्यं विष्णुपदे स्थिते। नैवेद्यं हि मया दत्तं गृह्यतां पापहारिणि७ इति नैवेद्यम् । ओं अंगणुन्ननकरे (वनस्पतिरसो०) इसमंत्रसे धूपकरे. (साज्यच वर्ति०) इसमंत्रसे दीपकरे (वैष्णवि०) इस मंत्रसे

पुच्छसहित त्रैके गोकों प्रणामकरे और दानप्रतिष्ठाके अर्थ दक्षिणा देके ब्राह्मणकों विसर्जन करे कर्मपूर्त्तिके अर्थ विष्णु-

कमादाय० । ओं अद्य कृतैतद्गोदानप्रतिष्ठार्थमिमं हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायामुक्शर्मणे
ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ततः प्रतिगृहीता ओं स्वस्तीत्यु
क्त्वा । यथाशाखं ओं कोदात्कस्मादादिति कामस्तुतिं पठेत् । ततो दाता० अनेन कर्मणा
श्रीनारायणः प्रीयतामिति पठित्वा । विप्रं विसृज्य । कर्मपूर्त्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । इति गोदा
नविधिः समाप्तः ॥ श्री पण्डित चतुर्थीलालविरचिते गौडीयश्राद्धप्रकाशे प्रेतकल्पे द्वादशाह
सपिंडनश्राद्धपद्धतिः समाप्ता । ॥ श्रीगदाधरः प्रीयताम् ॥

ताम्भरण करे । इति गोदानविधिः ॥ इति श्री पण्डितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणविरचिते गौडीय श्राद्धप्रकाशे महा-
नियगे पद्धतिसर्वडे प्रेतकल्पे द्वादशाहसपिंडनश्राद्धपद्धति भाषाटीकासहिते समाप्ता । श्रीगदाधरारयनमः ।

सापिठनश्राद्ध करनेके अनंतर तेरहवें दिनसें लेकर महिने २ ऊनमासिक आदि पौडश १६ कुम्भश्राद्ध करणा चाहिये
 (गरणेशी मिथि लिखते हैं) कर्त्तौ स्नान, संध्या, तर्पण, आदि करके आचमन, और प्राणायाम करे । फिर जलसे
 अथ त्रयोदशदिनादारग्य प्रतिमासं ऊनमासिकादि पौडश सान्नोदकुम्भदानं श्राद्धप्रयोगश्च ।
 कर्त्तौ स्नानसंध्यातर्पणादि विधाय । आचम्य प्राणानायम्य । सान्नोदकुम्भमुपनीय । कुश
 त्रय तिल जलान्यादाय । देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) ओं अद्यामुकगोत्रस्य पितुरसु
 कशर्मणः वसुरूपस्य परलोकैः क्षुचृषोपशान्त्यर्थं यावत् वत्सरं तावत्प्रतिमासं सान्नोदकुम्भदान
 महं करिष्ये इति संकल्पयेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा । दक्षिणामुखः पातितवामजानुद्विरुण
 भुम्न कुशत्रय तिल जलान्यादाय । ओं अद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमा
 सिक सान्नोदकुम्भश्राद्धे इदमासनं तुभ्यं स्वयाइत्यासन पित्रे (मोटक रूपं) सतिलजलप्रो
 मराहृता रुद्रा १ आमन्त्र, वृत्त, शक्र, आदि सहित अपने अगाडी रखे और कुशत्रय तिल जल लेकर, सबत्, मास,
 पक्ष, तिथि, आदि का उच्चारण करे और अपने पिताका नाम गोत्र लेने ऊपरका सकल्प जोड़े । फिर अपसव्य

दक्षिणमुख, पातितवामजानु करकें मोटक, तिल, जल लेंके और पिताके अर्थ मोटक रूप आसनदेके (हे पितः ऊनमा-
 सके निमित्त यहै अन्नसहित जलसे मराहूवा घट आपके निमित्त है सो आपको प्राप्त होवो) ऐसे कहके ब्राह्मणके अर्थ
 देवे। फिर दानप्रतिष्ठाके निमित्त रजत (चादी) की दक्षिणा ब्राह्मणको देके विष्णुस्मरण करै। इसीतरे मासिक,
 क्षितं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् । पुनर्द्विगुणभुम्भुशानीन्यादाय । ओं असुकगोत्र पितरमुकश
 र्मेन् वसुरूप ऊनमासिकश्राद्धे इदं सान्नोदकुंभं तुभ्यं स्वया इति संकल्प्य ब्राह्मणाय दद्यात् ।
 तत ओं अद्य कृतैतत्सान्नोदकुंभदानप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चंद्रदेवतमसुकगोत्रायासुकशर्मणे
 ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इति रजतदक्षिणां दद्यात् । ततो विष्णुस्मरणं । एवमेव मासिका
 दि पंचदश सान्नोदकुंभदानं कुर्यात् ॥ इति प्रतिमासकर्त्तव्य कुंभदानप्रयोगः ॥ इदानीं
 शिष्टाः एकस्मिन्नेव दिने सर्वाण्यपकृष्य कुर्वति । तच्च पुत्रजन्म विवाहादि वृद्धि प्राप्ता
 त्रिपाक्षिक आदि पदरह घटदान महिनेकी महिने करणा चाहिये । परत् आजकल, उच्चमपुरुष कहतेहैकी पुत्रजन्म,
 विवाह आदि (वृद्धि) प्राप्त होनेके निमित्तसे एकहि दिनहि सपूर्ण पदरहकुंभ, आमन्न, वस्त्र, दक्षिणा आदि सहितका

दान साडेपाचमाससे अथवा डेट्ट माससे १६ या. सतरावे दिन या. चौदवे १४ दिन देश कुल, चारसे एक १ या दो २ या तीन ३ दिन मरण दिनेमें कमति दिन नेनेमें करे, परत उसदिन, मंगल, आदित्य, शनैश्वर वार नहिहो और अधि-
 रतिथि, एरण्य, द्विपाद त्रिपादयोग, चतुर्दशी, शुक्रवार, कर्त्तिका जन्मनक्षत्र, मद्रा, व्यतिपात आदि निषिद्ध दिनरहित
 ऊनपाणमासिके वा त्रेपाक्षिके सप्तदशेहनि चतुर्दशेहनि वा यथाचारं एक द्वि त्रीन्यूनदिने
 भोमार्कमंद नंदा तिथियुग्मेकपाद द्विपाद त्रिपाद चतुर्दशी शुक्रवार कर्त्तुनक्षत्र मद्रा
 व्यतिपातादि वर्जिते सर्वाण्यपहृष्य कुर्यात् । वृद्धच्युतरनिषेधनात् ॥ तत्र प्रयो
 गः॥आचम्य प्राणानायम्य । कुशत्रय तिल जलान्यादायादेश कालो संकीर्त्याओं अमुकगो
 त्रस्य अस्मत्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुत्रूपोपशांत्यर्थं ऊनमासिकं? मासिकं
 श्रेष्ठ दिनहो तत्र करे औरगिवाह आदि शुभ कर्म करणेके अनंतर फेर ऊन घटदान नहि करणा चाहिये(पंचदशघटदानकी
 विधिः) आचमन प्राणायाम करके कुशत्रय तिल जल धारण करे। देश काल आदि कचारणकरणेके बाद (अमुकगोत्र
 नाम वाले मेरे पिताकी गारह १२ मासपर्यंत भूख प्यास शांति होनेकेअर्थ ऊनमास ३ मास, २ त्रिपक्ष, ३ द्वितीयमास, ४

तृतीयमास, ५ चतुर्थं०६ पंचमं०७ ऊनपाणमास, ८ पाणमास, ९ सप्तम मास, १० अष्टमं०११ नवमं० १२ दशमं० १३
 एकादशं० १४ ऊनवार्षिक १५ श्राद्धनिमित्तक पंदरह १५ अन्नसंहित जलका घटदान महनेकी महने एक एक करने
 त्रिपाक्षिकं द्वितीयमासिकं तृतीयं चतुर्थं० पंचमं० ऊनपाणमासिकं पाणमासिकं सप्तमं०
 अष्टमं० नवमं० दशमं० एकादशं० ऊनाब्दिकं एतानि पंचदशसान्नोदकुंभश्राद्धानि स्वस्व
 काले कर्तव्यानि इदानीं मम कुले भविष्यमाणवृद्धिनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य सांकल्पेन
 विधिना तंत्रेण सद्यः करिष्ये इति संकल्पयेत्। ततोऽपसव्यादि कृत्वा कुश तिल जलान्या
 दायाओं असुकगोत्र पितरसुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदश सान्नोदकुं
 भश्राद्धनिमित्त इदमासनं पंचदशधा विभज्य तुभ्यं स्वधा इत्युक्त्वा । दक्षिणाग्रं मोटकक
 पमासनं दद्यात् । तत ओं अत्र क्षणः कर्तव्यरिति पठित्वा । देशकालौ स्मृत्वा। ओं अमुक
 योग्यया परंतु हमारे कुलमें विवाह आदि वृद्धि (मंगल आचरण) आनेवालाहै इसवास्ते संपूर्ण पंदरह १५ घट आज
 दिन एकदि राय संकल्प विधिसे दान करताहो) ऐसे पढके संकल्पका जल छोडदेवे । फिर अपसव्य आदिकरके मोट-

दान साठेपाचमाससँ अथवा डेट मासमें १६ या. सतरावें दिन या. चौदवें १४ दिन देश कुलाचारसँ एक १ या दो २ या तीन ३ दिन मरण दिनमें कमति दिन होनेसँ करे, पांठ उसदिन, मंगल, आदित्य, शनैश्वर वार नहिहो और अधि-
 ऋत्विधि, एरुपाद, द्विपाद. त्रिपादयोग, चतुर्दशी, शुक्रवार, कर्ताका जन्मनक्षत्र, भद्रा, व्यतिपात आदि निषिद्ध दिनरहित
 ऊनपाण्मासिके वा त्रैपाक्षिके सप्तदशेहनि चतुर्दशेहनि वा यथाचारं एक द्वि त्रीन्यूनदिने
 भोमार्कमंद नंदा तिथियुग्मेकपाद द्विपाद त्रिपाद चतुर्दशी शुक्रवार कर्तुनक्षत्र भद्रा
 व्यतिपातादि वर्जिते सर्वाण्यपकृष्य कुर्यात् । वृद्धयुत्तरनिषेधनात् ॥ तत्र प्रयो
 गः॥आचम्य प्राणानायम्य । कुशत्रय तिल जलान्यादायादेश कालो संकीर्त्य।ओं असुकगो
 त्रस्य अस्मत्पितुरसुकशर्मणः वसुरूपस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुत्रूपोपशांत्यर्थं ऊनमासिकं१ मासिकं
 श्रेष्ठ दिनहो तब करे श्रौरियाह आदि शुभ कर्म करणके अनंतर फेर ऊन घटदान नहि करणा चाहिये(पंचदशघटदानकी
 विधिः) आचमन प्राणायाम करके कुशत्रय तिल जल घारण करो। देश काल आदि उचारणकरणके वाद (अमुकगोत्र
 नाम बाले मेरे पिताकी वारह १२ मासपर्यंत भूत प्यास शांति होनेकेअर्थ ऊनमास १ मास, २ त्रिपक्ष, ३ द्वितीयमास, ४

तृतीयमाम, ५ चतुर्थे ०६ पंचम ०७ ऊनपाणमास, ८ षण्मास, ९ सप्तम मास, १० अष्टम ०११ नवम ० १२ दशम ० १३
 एकादश ० १४ ऊनवार्तिक १५ श्राद्धनिमित्तक पंद्रह १५ अब्रसहित जलका घटदान महनेकी महने एक एक करने
 त्रिपाक्षिकं द्वितीयमासिकं तृतीय ० चतुर्थे ० पंचम ० ऊनपाणमासिकं षण्मासिकं सप्तम ०
 अष्टम ० नवम ० दशम ० एकादश ० ऊनाब्दिकं एतानि पंचदशसान्नोदकुंभश्राद्धानि स्वस्व
 काले कर्तव्यानि इदानीं मम कुले भविष्यमाणश्राद्धनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य सांकल्पेन
 विधिना तंत्रेण सद्यः करिष्ये इति संकल्पयेत्। ततोऽपसव्यादि कृत्वा। कुश तिल जलान्या
 दाया। ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदश सान्नोदकुं
 भश्राद्धनिमित्त इदमासनं पंचदशधा विभज्य तुभ्यं स्वधा इत्युक्त्वा। दक्षिणाग्रं मोटक
 पमासनं दद्यात्। तत ओं अत्र क्षणः कर्तव्यरिति पठित्वा। देशकालो स्मृत्वा। ओं अमुक
 योग्यया परंतु हमारे तुल्यं विगाह आदि श्रद्धि (मंगल आचरण) आनेवालाहै इसवास्ते संपूर्ण पंद्रह १५ घट आज
 दिन एकदि साथ संकल्प विधिसं दान करताहों। ऐसे पढके संकल्पका जल छोडदेवे। फिर अपसव्य आदिकरके मोट-

रूप आसन देवे और क्षण प्रदान करे। पथात् मोटक तिल जल लेके हेपितः (ऊनमासिक आदि ऊनवार्षिक पर्यंत परदद श्राद्धके निमित्त यैदे पचदश १५ अन्न वस्त्र दक्षिणा सहित जलका घट आपके अर्थ होवो) ऐसे कहके दान प्र-
 तिष्ठा दक्षिणासहित ब्राह्मणोंको १५ घट देदेवे और विष्णुस्मरण करे। इति पचदशकुम्भदानम् ॥ अथ ऊनमासिकादि
 गोत्र पितरसुकशर्मन्वसरूप ऊनमासिकाद्यूनान्दिकान्त पंचदशश्राद्धनिमित्तकानि इमानि
 पंचदश सान्नोदकुम्भानि तुभ्यं स्वया इति संकल्प्य । दानप्रतिष्ठा दक्षिणासहित ब्राह्मणोभ्यो
 यथाचारं दद्यात् । ततः सव्येन विष्णुस्मरणं । इति सान्नोदकुम्भदानप्रयोगः ॥ अथ ऊनमा
 सिरुघूनान्दिकान्त पचदशश्राद्धनिमित्तकेोदिष्टम् । तच्च विवाहादिवृद्धिप्राप्तौ ऊनमासि
 कादिकाले एक द्वित्रीन्यूनदिने पूर्वोक्त भौमाकादिनिषिद्धवर्जिते कुर्यात् । तत्र प्रयोगः ।
 पचदशश्राद्धविधिः । यदि विवाह यज्ञोपवीत. आदि मगलीक कार्य करणा होवेतो ऊनमासिक आदि समयमें माणदि-
 नसें एक १ दो २ या तीन ३ दिन कमति और मगलवार आदि पहले कहे होये निषिद्ध दिन त्यागके अच्छे दिन ऊन-
 मासिकादिश्राद्ध (छमाई) करे । (करणेकी विधि लिखतेहैं) श्राद्धके पहले दिन एक मक्क भोजन कर. श्राद्धके दिन

प्रातः काल स्नानकरके घुसाहुवा श्वेतवस्त्र धारण करे। संख्या आदि नित्यकर्म करणके अनंतर गोमयसे लेपी होई शुद्ध-
 जमे भाई आदिकेद्वारा पाक करावे। श्राद्धभूमिकों गोमय उलमुक मट्टि आदिसे शुद्धि करके तिल पीलीसरसों बिकी-
 श्राद्धपूर्वदिने एकभक्तादि नियमं विधाय। श्राद्धदिने प्रातः स्नात्वा। धौत श्वेतवस्त्रे परि-
 धाय। संख्यादि नित्यक्रियां समाप्य। पाकभूमिं गोमयादिना संस्कृत्य। तत्र सपिंडादिद्वारा
 स्वयं वा पाकं कुर्यात्। ततः श्राद्धस्थानं गोमयोदकेनोपलिप्य। ज्वलदंगारैः संशोध्य। गौ-
 रमृत्तिकयाच्छाद्य। तिलैर्गौरसर्पैश्च विकीर्ये। वस्त्रादिना वेष्टयित्वा। तत्र श्राद्धसामग्निं सं-
 पादयेत्। ततो मध्याह्ने पुनः स्नात्वा। वाससी परिधाय। श्राद्धभूमिमागत्य। अन्नाभिप्रा-
 येण सिद्धमित्यभिधाय। आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत्। दीपरक्षा
 द्विजेन कार्या। काककुक्षुटादीच्छ्राद्धापहंतृनपसारयेत्। ततः कर्ता स्वासने प्राङ्मुख
 ण करे और वस्त्र लपेटे देवे और तहां श्राद्धसामग्नि स्थापनकरे। पश्चात् मध्याह्नमें फेर स्नानकरे। शुद्धवस्त्र पहरे।
 श्राद्धभूमिमें आके पाक तैयारहे एते ब्राह्मणोंको कहे। आसनकेसमीप तिलके तेलसे भराहुवा दीपक जलके स्थापनकरे।

दीपककी रक्षा ब्राह्मणने करणीचाहिये । काग मुर्गा गूर श्वान आदिनिषिद्ध जानवरोको दूर हटावे । फिर श्राद्धकर-
नेमाला आसनपे पूर्वको मुख करके बैठे । सव्य होके पवित्रीधारण करे और आचमन प्राणायाम करे । कर्मपात्रको जल
तिल चंदन पुष्प आदिरें पूर्णकरके (ओं अपवित्र०) (पुंडरीकाक्षः पुनातु०) इसमंत्रसे दर्भायुक्त जल करके श्राद्धसा-
उपविश्य । पवित्रे परिधाय । सव्येन आचम्य । प्राणानायम्य । कर्मपात्रं जल तिल
गंध पुष्पादिनाऽपूर्य। ओं अपवित्रः पवित्रोवा इति पठित्वा । ओं पुंडरीकाक्षः पुनात्विति
कुशत्रयानीतजलेन श्राद्धीयद्रव्याणि स्वास्मानं च सिचेत्ततः ओं वैष्णव्यै नमः ओं काश्य
प्यै नमः ओं अक्षय्यायै नमः ओं भूम्यै नमः इति नत्वा । ओं भगवत्त्रैगयायै नमः ओं भ
गवते गदाधराय नमः इति मनोवाक्यार्थेनमस्कुर्यात् । ततः कुशत्रय तिल जलान्यादाय
मयी और अपने शरीरको प्रोक्षण करे । अनंतर (ओं वैष्णव्यै० ओं काश्यप्यै० ओं अक्षय्यायै० ओं भूम्यै० ओं भग-
वत्यै गयायै० ओं भगवते गदाधराय०) इन मंत्रोंकरके पृथ्वि० गया० गदाधरको मन वाणी शरीरकेद्वारा प्रणाम करे ।
फिर कुशत्रय तिल जल लेके

संकल्प उच्चारण करें। पिताका गोत्र नाम लेकर (अमुक गोत्र नामवाले मेरे पिताका ऊनमाससे लेकर ऊनवार्षिक
कर्मयंत पंचदशश्राद्ध अपने २ समयपर करणे योग्यथा परंतु हमारे कुलमें विवाह आदि वृद्धि (मंगल-
कार्य) होनेवालेहि इसवास्ते सबको खींचकर आजदिन एकोद्विष्टविधि करके एकसाथहि सक्षेपरीतिसें करताहुं) ऐसे
देशकालो संकीर्त्य०। ओं अमुकगोत्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य संवत्सरपर्यंतं
क्षुन्नूपोपशांत्यर्थ०। ऊनमासिकाहूनाब्दिकांतानि पंचदशमासिकानि स्वस्वकाले कर्तव्या
नि श्राद्धानि। इदानीं मम कुले भविष्यमाणवृद्धिनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य एकोद्विष्टविधि
ना तंत्रेण सद्यः करिष्ये इति संकल्पयेत्। (अधिकमासपाते तन्निमित्तकं अधिकं कार्यं) ततो
गायत्रीं त्रिर्जापित्वा। ओं देवताभ्यरिति त्रिर्जापेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा। दक्षिणामुखः पाति
तवामजानुः तिलगौरसर्पपान् गृहीत्वा। ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम। इदं
उच्चारण करके संकल्पका जल त्यागदेवै (यदि बीचमें अधिकमास होवे तो पंदरकी जंगे सोलह (पौडश) पद उच्चारण
करे। फिर तीनवेर गायत्री (देवताम्य०) इसमंत्रको तीनवेर जाँपे और अपसव्य दक्षिण मुख पातितवामजानु करके तिल

पीलातरसों (ओं नमो नमस्ते०) (अग्निष्वात्ताः०) इत्यादि मंत्रोंकरके पूर्वादिक संपूर्ण दिशाओंमें और ऊपर नीचे को
 णोंमें निकारणकरे। फिर तिल दर्मां लेके कडीभागमें स्थापनकरे, इसको नीवीवध करतेहैं। पश्चात् एकपात्रमें जल ढाले उ
 श्राद्धं हृषिकेश्य रक्षतां सर्वतो दिशः १ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राची रक्षंतु मे दिशं । तथा
 वर्हिपदः पांतु याम्यां ये पितरः स्थिताः २ प्रतीचीमाज्यपा रक्षेदुदीचीमपि सोमपाः । अधो
 र्ध्वमपि कोणेषु हविर्भन्तश्च सर्वदा ३ रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोपतः । सर्व्वतश्चाधिप
 स्तेपां यमो रक्षां करोतुवे ४ वायुभूत पितृणां च तृप्तिर्भवतु शाश्वती । इत्यनेन पूर्वादि दिक्षु
 अथस्थादूर्ध्वं कोणेषु च सर्व्वत्र तिलान् गौरसर्पणांश्च विकीर्त्य । निर्वीबंधं कुर्यात् । ततः
 कस्मिंश्चित्पात्रे जलं मृहीत्वा । दर्भरालोड्य । ओं यद्देवा देवहेडन मित्यादि कूर्ष्मांडसूक्तेना
 भिमंज्य । उदक्यादि दृष्टिपातात् शूद्रादि संपर्कदोषाच्च पाकादीनां पवित्रताऽस्तु इति पाका
 सको दर्भासे हिलारे और (ओं यद्देवा देवहेडन०) इस कूर्ष्मांडसूक्त करके अभिमंत्रण करे। फिर रजस्वला, ध्यान, श्रुत, शूर,
 चांडाल आदिकी दृष्टिसें गूद्र आदिके स्पर्श दोषसें अशुद्ध होयेहुये पाकको दर्भाकरके जलसें प्रोक्षणकरे और हरिको

निवेदनको । फिर मोटक तिल जल लेंके । हेपितः ऊनमासिक आदि ऊनवार्षिकपर्यंत पंद्र आन्हके निमित्त यहै आ-
 मन आपको देताह सो ग्रहणकरो । ऐसे पढके पितृतीर्थसे दक्षिणको अग्रभागकरके मोटकरूप आसन देवे और (अ-
 दीन् संप्रोक्ष्य हरये निवेदयेत् । अथासनादि दानं । तत्र द्विगुणभुगनकुशत्रयतिलजलान्यादा
 य । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदशश्राद्धनि
 मित्त इदमासनं पंचदशथा विभज्य तुभ्यं स्वधा । इत्युच्चार्य्य । पितृतीर्थेन मोटरूपं दक्षि
 णाग्रं कुशत्रयात्मकमासनमुत्सृजेत् । ततः ओं अपहताऽअसुरारक्षार्थं०सि वेदिपद इत्यासनो
 परि तिलान् विकीर्य्य । अर्घपात्रोपरि पवित्रमेकं धृत्वा । ओं शन्नो देवीरिति जलं प्रक्षिप्य ।
 ओं तिलोसि सोमदेवयो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृलोकान्प्रणा
 हिनः स्वधा इति तिलान् तूष्णीं गधपुण्ये च निक्षिपेत् । ततोऽर्घपात्र संपसिरस्तु इति पठि
 पढता०) इस मंत्रसे तिल गिराण करके, एक अर्घपात्रमें दर्भाका एक पत्ता पवित्रके अर्थ धरे (शन्नो देवी०) इस-
 मंत्रसे जल डाले (तिलोसि०) इसमंत्रसे तिल और मंत्ररहित गध (चदन) पुष्प घालदेवे । फिर अर्घपात्रको वामे हाथमें-

लेंके पवित्रा पत्तलपें रखे (यादिव्या०) इस मंत्रसे अर्घपात्रकों अभिमंत्रणकरके दाहणे हाथसे । हेपित० ऊनमासि
 कादि ऊनवार्यारूपयंत पंचदश श्राद्धके निमित्त येहे अर्घ आपके अर्घ देताहूं सो आपको प्राप्तहोवो । ऐसे कहके अर्घ-
 पात्रका जल पवित्रे ऊपर थोडासा डालदेवे । फिर अर्घपात्रकों (पित्रे स्थानमसि०) इसमंत्रसे आसनके निष्कृतिकोणमें
 त्वा । अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा । तत्रस्थं पवित्रं पितृपात्रे दत्त्वा । ओं या दिव्या इति मंत्रे
 ण पात्रमभिमंत्र्य । दक्षिणहस्तेन ओं असुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकादि
 ऊनाब्दिकांतपंचदशश्राद्धनिमित्त एष तेऽर्घःस्वधा नमः । इति पितृतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घं
 दद्यात् । ततोऽर्घपात्रं ओं पित्रे स्थानमसीति पितृवामपार्श्वे न्युब्जं निदध्यात् । इदं दक्षिणा
 दानपर्यंतं न चालयेत् । ततो गंध पुष्प धूपं दीपादिकं धृत्वा । द्विगुणभुज कुशत्रयादीन्या
 दाय । ओं असुकगोत्रपितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदश श्राद्धनि
 निराला कंथा स्थापनकरे परंतु दक्षिणादानपर्यंत हलावे चलावे नहि । पश्चात् गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूर्णाफल य-
 मोपपीत वसुआदि आसनपें रखेके मोटक तिल जलकेदारा । हेपित० ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकांत पंचदश श्राद्धके-

निमित्त यह गंध पुष्प धूप आदि सामग्रि आपके अर्घहे सो आपको प्राप्त होवो ऐसे कहके निवेदन करदेवै । फिर भोजनपात्र स्थापन जंगको साफ करके पत्तल रसे और सुपेदमट्टि या जलको आसनके बाहरकर मडलकरे । पश्चात् भोजनपात्रमें गरम २ अन्न वृत (व्यजन) शाग दही रायता वडा पकोरीआदि और ठडा २ जल अछितरे मित्त एतानि गंध पुष्प धूप दीप यज्ञोपवीत वासांसि तुभ्यं स्वधा । इत्युत्सृजेत् । तत ओ अर्चनं सपूर्णमस्तु इत्युक्त्वा । भोजनपात्रस्थापनदेश समाज्यं । पात्रं च दत्त्वा । गौरमृत्तिकया जले नवा आसनं वेश्यित्वा । चतुरस्रादि मडल कुर्यात् । ततो भोजनपात्रे उष्णमद्वं सघृतमनेक व्यजनयुत सुशीत जलसहितं यथावत् परिविष्य । मधुनाभिवायर्थं । ओ मधुब्वाताऽऋतायते इति मन्त्रत्रयेण । ओ मधु मधु मध्वित्यभिमन्त्रयेत् । ततोऽन्नपात्र न्युब्जपाणिभ्यां स्पृष्ट्वा । ओ पृथिवी ते पात्र द्यौरपिधानं । ब्राह्मणस्य मुखेऽ अमृतं अमृतं जुहोमि स्वधा । ओ इदं वि जुदे २ पात्रोंमें पुरसके (मधु) सहत लगावे (ओ मधुवाता०) इण तीन मत्रोंसे (मधु मधु मधु) इत्सु अभिमन्त्रण करे । फिर अन्नपात्रको ऊधे उपर थली न्यारे न्यारे दोनो हाथोंसे स्पर्शकरके (पृथिवीते०)

(इदपिण्डु०) इत्यादि दोमंत्रोंको पढ़के अपना दाहणे हाथका अंगुठा (विष्णो हव्यर्धे० रक्ष०) इस-
 मंत्रसे अन्नपे लगावे और (इदमन्न०) इत्यादि पढ़के (अपहता०) इसमंत्रसे अन्नके बाहर कर तिल
 रित्तिरण करे । फिर वामे हाथको स्पर्श करताहुवा दाहणे हाथमें मोटकादि लेके हेपित ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकात प-
 ण्डुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपा ठे० सुरे इति पठित्वा । स्वांगुष्ठमधोमुखमनखं
 ओं विष्णो कव्यर्धे० रक्ष इत्यन्ने निवेश्य । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । एतत्सर्वं कव्य
 मिति पठित्वा । ओं अपहता इत्यन्नपात्रपरितस्तिलान्न विकीर्य्यं । वामकरेण पात्रमत्यजन् ।
 दक्षिणकरेण कुशादीन्यादाया । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनान्दि
 कान्त पंचदशश्राद्धनिमित्त इदमन्नं कव्यं सोपस्करममृतरूपं तुभ्यं स्वया । इत्युदकं पितृतीर्थेन
 पित्रासनवामभागे भूमौ क्षिपेत् । तत ओं अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं
 चदश श्राद्धनिमित्तं यद्दे अन्न कव्यसङ्गक उपस्करसहित अमृत रूप आपके अर्थ है सो आपको मिले । ऐसे कहके
 आसनके गामभागमें संकल्पका जल त्यागदेवे । फिर (अन्नहीन०) इसमंत्रसे प्रार्थना करके तीनवेर गायत्रीजप और

(मधुवाता०) यहै तीनमंत्र पठे और (कृणुष्वपाज०) इत्यादि पांच मंत्र (उदीरता०) इत्यादि १३ मंत्र (सहस्र-
 शीर्षा०) इत्यादि १६ मंत्र (आशुः शिशानो०) इत्यादि १७ मंत्र और (अमूर्त्तानां०) इत्यादि सप्तार्चि रुचि
 मच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्ये । सव्येन गायत्रीं त्रिर्जपित्वा । मधुव्वाता इति ऋचं मधु मधु मध्वि
 ति जपेत् । ततः कृणुष्वपाजरित्यादि रक्षोघ्नीः पंच ऋचः पठित्वा । 'तिलान् विकीर्ये' । पितरं
 ध्यायन् । उदीरतामवर इत्यादि पितृमंत्रान् । पुरुषसूक्तं । अप्रतिरथंच जपेत् । ततोऽन्यान्य
 पि सप्तार्चिहचिस्तव प्रभृतीनि यथाशक्ति पठेत् । ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ भूमिं
 प्रोक्ष्य । तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य्य । सर्वप्रकारमन्नं सव्यंजन तिल जलं गृहीत्वा । औ
 असि दग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृयंतु तृसायांतु परां गतिमि
 ति कुशोपरितदन्नं क्षिपेत् । ततः सव्येन आचम्य । हरिं स्मृत्वा । पूर्ववत् गायत्रीं । मधुवाता
 स्तोत्र शक्तिमाफिरु पठे । फिर मोजनपात्रकेसमीप जगे घोके दक्षिणाग्रदर्भो धरे और सर्व प्रकारकाअन्न व्यंजन तिल
 जलसहित लेक (अग्निदग्धा०) इसमंत्रसे दर्भाके ऊपर विकीरण करे और सव्यहोके आचमन विष्णुस्म-

रण गायत्रीज्ञप (मधुगता०) इत्यादि तीन मन्त्रों । फिर भोजनपात्रकेसमीप चोकोण दक्षिणको नीचा एरुस्थान मटिसें वणारे और उसके बीच दोपत्तेवाली दर्मा दर्माकरके (अपहता०) इस मन्त्रमें एक रेखा दक्षिणाग्र द्विखके दर्मा उत्तरदिशामें रखदें और (ओं येरूपाणि०) इसमन्त्रको पठके जलताहुवा लल्लुक इति ऋचं मधु मधु मध्वितिच जपेत् । ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणप्लवं स्थानं निर्माय।तन्मध्ये दर्भपिंडुलीमूलेन ओं अपहताऽअसुरा रक्षाठं०सि वेदिषदरिति रेखां दक्षिणाग्रां समुद्धिरव्य । दर्भपिंडुलीमुत्तरस्यां दिशि निक्षिपेत् । ततः ओं ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना०इति मंत्रेण ज्वलदुल्लुकं रेखोपरि भ्रामयित्वा दक्षिणतो निदध्यात्।ततः समूलकुशत्रयं रेखोपरिस्तीर्त्वा।देवताभ्यरिति त्रिर्जपित्वा।सतिलजलपात्रं गृहीत्वा।ओं अमुकगोत्रपितरस्तु कशर्मन् वसुरूप ऊनभासिकादिऊन।ब्दिकांत पंचदश श्राद्धनिमित्तपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते रेसाऊपर भ्रमांकं दक्षिणतरफ जंटे । फिर जडसहित तीन बुशाकापचा मिलाहोया वेदीपें घरकें (देवताम्य०) इणको तीनवर पठे और तिल जलसें भराहुवा एक पात्र दाहणे हाथमें लेके, पिताका गोत्र नाम ऊच्चारण करणेके अनंतर विदी-

पं अर्चनेजन देवे । फिर सर्वप्रकारके अन्नमेंसे थोडा २ अन्न लेके, सहत, घृत, तिल; व्यंजन आदि मिलावे और बीलके फलकी तरह गोलपिंड १ बुणावे । पिंडके घृत, सहत लगाके कुशा जल तिल सहित दाहणे हाथमें धारणकरे (हे पितः जनमासिकादि जनवापिकपर्यंत पंचदश श्राद्धके निमित्त यहै पिंड आपके अर्थ है सो आपको प्राप्तहोवा) ऐसे बहके स्वधा । इति कुशोपरि अर्चनेजनं दद्यात् । किंचिज्जलं पात्रे अवशेषयेत् । ततः सर्वस्मादन्नार्तिक चिर्तिकचिदुद्धृत्य मध्वाज्य तिल व्यंजनयुतं कृत्वा । बिल्वोपमं पिंडं निर्मायाद्युत मधुम्यामभि धार्य्य । द्विगुणभुम्न कुशत्रयादिसहितमादाया । ओ अद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊन मासिकादि ऊनाब्दिकांत पंचदश निमित्त एष ते पिंडः स्वधा नमः । इत्युच्चार्य्य । सव्योपगृही तदक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन कुशोपरि दद्यात् । ततो लेपभागभुजस्तृप्यंतु इति दर्भमूले करं प्रोच्छ्रयाहस्तौ प्रक्षाल्या । सव्येन आचम्या । हारिं स्मरेत् । ततोऽपसव्यादि कृत्वा । ओ अत्र पितर्मा दोनो हाथोंसे कुशाकेऊपर पिंड देदेवे । फिर (लेपभागभुजस्तृप्यंतु) इसमंत्रसे दर्भाकी जडमें पिंडकेपास दाहणो हाथ पुछ देवे और दोनो हाथ धोके सव्यसे आचमन हरिस्मरण करे । अपसव्य होके (अत्रपितर्मा०) इस मंत्रको पठताहुवा

वामीतरफसे उत्तरकी मुख करके प्रसन्न मनसे श्वास वंश करे और उसीतरफ पीछा फिरके (ओं अमीमंदत०) इसको जपता होया पिंडपे श्वास छोडदेते । फिर अग्नेजन पात्रको लेके पिंडपर प्रत्यवनेजन देवे. (नीवी) कडमें रसिहोई दयस्य। यथाभागमा वृषायस्व इति पठित्वा । वामावर्त्तेनोदइमूखीभ्रूया।प्रीतमनाः श्वासं नियम्य । तेनेव यथापरावृत्त्याओं अमीमंदत पितर्यथाभागमावृषायिष्ठ इति जपेत् । ततोऽवनेजन पात्रं गृहीत्वा । ओं असुक० पितरमुकशर्मन् वसुरूप अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा नमः । इति पिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दत्त्वा । नीवां विस्रंस्यासव्येन आचम्या।अपसव्यादि कुर्यात् । तत ओं नमस्ते पितः रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर्जीवाय नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर्घोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्दत्तं सतस्ते पितर्द्वेष्म इति कृतां जलिः पठित्वा। ओं एतत्ते पितर्वासः।इत्यनेन पिंडोपरि सूत्रं ऊर्णादिशांवा दत्त्वा।ओं असुक० तिल दर्भानिकालके पिंडकेपास रहे । सव्य होके आचमन करे ।अपसव्य होके (ओंनमस्तेपित०) इसमंत्रसे अंजली बांध के प्रार्थना करे और (ओं एतत्ते पितर्वास०) यह मंत्र पठताहुवा मूतका तीन तार या ऊनका फल वा पिंडपे रत्नके सक

ल्व रीतिसं त्याग करदेवैः। फिर पिताका निमित्त लेकें उसकें पिंडकी मंत्ररहित गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र, धूप, दीप, ताबूल, पूगीफल, दक्षिणा आदि करकें पूजाकरै। पिंडकेपास पिंडका शेष अन्न विकीरण करदेवै और भोजनपात्रमें (ओं) पितरमुकशर्मन् वसुरूप एतत्ते वासः स्वधा नमः। इत्युत्सृजेत् । ततः पितरमुद्दिश्य तदीयपिंडे तृष्मीं गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादीनि दद्यात्। पिंडशेषान्नं पिंडसमीपे वि क्तिरेत् । ततो भोजनपात्रे । ओं शिवा आपः संतु इति जलं। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं। अक्ष तं चारिष्टमास्त्विति यवांश्च दत्वा। ओं अमुकगोत्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य ऊ नमासिकाधूनाब्दिकांत पंचदशश्राद्धनिमित्त दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतां इति ति ल्युक्तमक्षय्योदकं दद्यात् । ततः प्राङ्मुखः सव्येन कृतांजलिराशिषो गृह्णीयात् । ओं अ धोरः पिताऽस्तु इति। ततः ओं गोत्रं नोर्वर्द्धतां, दातारो नोभिवर्द्धतां, वेदाः संततिरेवच। श्रद्धा शिवा आप० सौमनस्य० अन्नतं चारिष्ट०) इण्वाक्योकरकें जल, पुष्प, यव, तिल घालकें ऊपरके पष्ठिविभक्तिः सहित सं कल्पतसें अक्षयोदक दानकरै । फिर सव्यहोके अजली कियाहोया पूर्वको मुख करके (ओं अघोरः पितास्तु० ओं गोत्रं

नोरद्धतां०) इन मंत्रोत्तरके आशीष मागे और अपसव्यसे पिंडोत्तर त्रिकुश रसके (ओं उर्जं वहति०) इस मंत्रकरके दक्षिणाग्र जलधारा उशाके ऊपर देवे । फिर अर्घ्यपात्र सूधा करके यथाशक्ति रजत (चादी) और कुशा, जल, तिल च नो माव्यगमत, बहुदेयंच नोऽस्तु। अन्नंच नो बहुभवेदतिथीश्च लभेमहि। याचितारश्च नः संतु माचयाचिण्मकंच नः । एताः सत्याआशिपः संतु इति वदेत्। ततोऽपसव्यादिकृत्वा।पिंडोपरि सपवित्रकुशत्रयमास्तीर्य। स्वधां वाचयिष्ये । ओं स्वधोच्यतामिति पठित्वा। ओं ऊर्जं वहंतिसृते घृत पयः कीलालं परिभृतं स्वधास्थ तर्पयत मे पितरमिति मंत्रेण कुशोपरि दक्षिणां जलधारां दद्यात्। ततोऽर्घ्यपात्रमुत्तार्नकृत्य । यथाशक्ति रजतद्रव्यं कुशादीनि चादाय ओं अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य कृतैतत् ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकांत पंचदश मासिकश्राद्धनिमित्तकोद्विष्टश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चद्रदेवतममुकगोत्रायामुक्तशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इति ब्राह्मणाय दद्यात्। ततो ब्राह्मणभोजनसंकल्पः। लेके ऊपरके पश्चिभिक्तियुक्त वाक्यसे श्राद्धप्रतिष्ठाकेअर्थ दक्षिणा ब्राह्मणको देवे । अनंतर मोटक, जल, तिल लेके

(अमुकगोत्रनामवाले मेरे पिताजीकि परलोकमें बारह १२ मासतक भूख प्यास बुरहोनेके अर्थ इण कियेहोये उनमा-
 सिक आदि उनवार्षिकपर्यंत १५ श्राद्धोंकी सांगता सिद्धिकेलिये पंद्र १५ ब्राह्मणोंको भोजन करताहुं ऐसे कहके ब्रा-
 तद्यथा । कुशत्रयादीन्यादाय । देशकालौ स्मृत्वा । ओं अमुकगोत्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः
 वसुरूपस्य परलोकैः सवत्सरपर्यंतं क्षुतृपोपशांत्यर्थं कृतैतत् उनमासिकादि उनान्दिकांत
 पंचदश० मासिकश्राद्धनिमित्तकैकोद्विष्टकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं पंचदश संख्याकान् ब्राह्म
 णान् तृप्तिपर्यंतान्नेन भोजयिष्ये इति संकल्पयेत् । ततः पिंडमुत्थाप्य स्थाल्यां नि
 धाय अवघ्राणं कृत्वा । पिंडाधरतृदर्मं चोल्मुकमग्नौ क्षिपेत् । तत ओं अभिरम्यता
 मिति विसृज्य । देवताभ्यरिति त्रिःपठित्वा । रक्षादीपं निर्वाप्य । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । स
 व्येन आचम्य । ओं प्रमादादिति पठित्वा । कर्मपूर्त्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः पिंडादिकं गवा
 क्षणभोजनका संकल्प छोड़े । फिर पिंडकों उठाके थालीमें रखे । सुगके पिंडोंके नीचेकी दर्भा उल्मुक अग्निमें डाल-
 दें । पश्चात् (ओं अभिरम्यतां०) इसकों पढके तीनबेर (देवताभ्य०) इसमंत्रको जपे और दीपकको नंदोंके हाथ

पर पोरे । सव्यसे आचमन करे (ओं प्रमादात्०) इत्यादि कर्मपूर्तिहेतुर्थ विष्णुस्मरण करे । फिर पिंड आदि गौ वृ-
 त्तम, या, बकरेको सिला देवे और वैश्वदेव गौ आदिके अर्थ बलिदान करनेके अनंतर श्राद्धसामग्री ब्राह्मणको देके १५
 श्राद्धणोंको भोजन करावे । अथवा १५ आमत्र देवे । फिर (ओं यस्यस्मृत्या०) यह पढ़के अतिथि, पुत्र, भाई,
 दिग्भ्यो दत्त्वा वैश्वदेवत्रिलिङ्गकर्माणी कृत्वा श्राद्धीयद्रव्याणि आचार्याय प्रतिपाद्या यथाशक्ति पंच
 दशप्रभृति ब्राह्मणान् भोजयेत् इति ग्यः पूर्वसंकल्पपितान् पंचदश सान्निदकुंभान् दद्यात् । तत
 ओं यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वदे तमच्युतमि
 ति पठित्वा । अतिथि सुत भृत्य बांधवादिभिः सह भुंजीत । एवमेव मात्रादिश्राद्धप्रयोगः ।
 ततः पूर्णं संवत्सरे क्षयाहदिने सांवत्सरिकश्राद्धं कुर्यात् इति ऊनमासिकाद्यूनान्दिकान्त पंचद
 श मासिका श्राद्धनिमित्तकेकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः समाप्ता । ओं गदाधरार्पणमस्तु ॥ ॥ अथ
 नोकर बाँप, मित्र आदिकरके सहित भोजन करे । इसीतरे माना, भाई, चाचे आदिका श्राद्ध करे और पूर्ण संवत्
 रीनेमें मरणके दिन सांवत्सरिक श्राद्ध करे । इति ऊनमासिकादि पंचदश श्राद्धविधिः समाप्तः । प्रथम श्राद्धके पहिले

दिन (निरामिष) मास आदि निषिद्ध वस्तु त्यागके उत्तम इविद्याका एकभक्त भोजनकरे । फिर रात्रिमें ब्राह्मणों-
 को नौता देके प्रातःकाल सुपेद धोति अंगोछा लेके स्नान करे और संध्याआदि नित्यकर्म, समाप्ति करके पाकभूमि-
 को गोमय, मिट्टी, जलद्वारा शुद्ध करे । फिर तहां नवीन शुद्ध पात्रोंमें शक्तिमुजब अच्छे अन्न नानातरहके भाइ बां-
 सांवत्सरिकैकोद्विष्टश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र तावत्पूर्वेद्युर्निरामिषमेकवारं भुक्त्वा । श्राद्धदिने प्रातः
 श्वेतवस्त्रयुगलेन स्नात्वा । नित्यावश्यकं समाप्य । पाकभूमिं गोमयादिना संस्कृत्य । तत्र नूतनपा-
 त्रेषु यथाशक्त्युत्कृष्टमन्नं नानाप्रकारं सपिंडस्त्रीद्वारावा पाचयेत् । स्वयं वा पचयेत् । ततः श्राद्धभूमिं
 गोमयोदकेनोपलिप्य । ज्वलदंगारैः संशोध्य । गोरमृत्तिकयाच्छाद्य । तिलैर्गौरसर्षपैश्च विकीर्य
 वस्त्रादिना वेष्टयित्वा । तत्रश्राद्धसामग्रीं संपादयेत् । ततो मध्याह्ने पुनः स्नात्वा । धौतशुक्लवास
 पव स्त्री आदिके द्वारा करावे । अथवा सुद यजमान करे । पश्चात् श्राद्ध करणेकी भूमिमें गोमय जल आदिका लेपा
 करे और जलता होया वृण लेके फेंरे । फिर बारीक साफ वालुका या मिट्टी बिछाके तिल सरसोंका विकीरण
 करे और वस्त्र आदिसे वेष्टन करके तथा श्राद्धसामग्री संपूर्ण स्थापन करदेवे । फिर मध्याह्नेमें अर्थात् ग्यारह

बनेके अनंतर स्नान करके सुपेद वस्त्र पहिरे और श्राद्धस्थानमें आके आसनके समीप तिलोके तेलसे भरहुवा दीपक जलके ब्राह्मणकेद्वारा दीपकको वायु आदिसँ रक्षा करे और काग, मुर्गी, कुत्ता, चील, सूर, माजूर आदि निश्चिन्ह जानवरोंको दूर हटा देवे। कारण यह जानवर श्राद्धको नाश करतेहैं। पश्चात् श्राद्ध करने वाला आसनपे सी परिधाय। श्राद्धस्थानमागत्या अन्नाभिप्रायेण सिद्धमित्यभियाया आसनसमीपे तिलैतलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत्। दीपरक्षा द्विजेन कार्या। काक कुक्कुटादीन् श्राद्धापहंतृनपसारयेत्। तः कर्ता स्वासने ग्राह्यमुख उपविश्या। पवित्रे धृत्वा। सव्येन आचम्य प्राणानायम्य। कर्मपात्रं जल तिल गंध पुष्पादिभिः परिपूर्य। ओ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरे तुंडरीकाक्षं सत्राहाभ्यंतरः शुचिः। १। ओ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति पठित्वा। कुशत्रयानीत जलेन श्राद्धायद्रव्याणि स्वात्मानंच सिंचेत्। तत ओ वैष्णव्यै नमः। ओ काश्यप्यै नमः। ओ पूर्वको मुख करके बैठे। सव्य होके पवित्र धारण करके आचमन करे (अपवित्र०) इस श्लोकको पढ़के। पुंडरीकाक्षका स्मरण करताहुवा दर्भकेद्वारा जलकरके श्राद्धसामग्रीको तथा स्वयरीरको पवित्र करे। पश्चात्

(वेष्णव्ये०) इत्यादिनामोसं भूमिको नमस्कार करके गणा और गदाधर भगवानको मंत्र वाणी काया करके नमस्कार
 करे। फिर ताम्रके पात्र आदिमें त्रिकुशा, तिल, जल, चंदन, पुष्प आदि लेके संवत्, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार आदिका
 उच्चारण करके अपने पिताका गोत्र तथा नाम उच्चारण करे और कहेंकी अनुकगोत्र अनुकनामवाले मेरे पिताजीका
 अक्षय्यायै नमः। ओं भूस्यै नमः। इति नत्वा। ओं भगवत्यै गयायै नमः। ओं भगवते गंदा
 धराय नमः। इति मनो वाक्यार्थैर्नमस्कारं कुर्यात्। ततः कुशत्रय तिल जलान्यादायादेशकालो
 संकीर्त्ये। ओं अनुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरनुकशर्मणः वसुरुपस्य सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं
 करिष्ये। इति संकल्प्य। गायत्रीं त्रिर्जपित्वा। ओं देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एवच
 नमः स्वाहायै स्वर्थायै नित्यमेव नमोनमः इति त्रिः पठेत्। ततोऽपसव्येन तिलगौरसर्षपान् गृ
 हीत्वा। ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराण पुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः
 मावत्सारिक एकोद्दिष्टं श्राद्धं करतावु। ऐसे कदके पात्रका जल आदि भूमिमें त्याग देवे। फिर ब्राह्मणकी आज्ञा लेके
 तीनबेर गायत्रीका तथा (देवताभ्यः०) इत्यादि मंत्रका जप करे। पश्चात् अपसव्यहोके तिल और सपेद सिरसों वाम

हाथमें धारण करें और (नमोनमस्ते० अग्निध्याताः पितृगणा०) इत्यादि मंत्रोत्तरके पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दि-
 शाओंमें तथा चारों कोण ओर नीचे तथा ऊपरको सर्वत्र विकरण करें। फिर तिल दुर्भा लेंके वाम या दक्षिण पा-
 १ ओं अग्निध्याताः पितृगणाः प्राचीं रक्षंतु मे दिशं तथा बर्हिपदः पांतु याम्यां ये पितरः स्थि-
 ताः २ प्रतीचीमाज्यपास्तद्रुदीचीमपि सोमपाः। अधोर्ध्वमपि कोणेषु हविष्मंतश्च सर्वदा ३
 रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोपतः । सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु वैधवायुभूतपितृ-
 णांच तृप्तिर्भवतु शाश्वती ॥ इत्यनेन पूर्वादि दिक्षु अधस्थादूर्ध्वकोणेषु च सर्वत्र तिलान् गो-
 रसर्षपांश्च विकीर्यावामे दक्षिणे वा कटिभागे नीवीबंधं कुर्यात् । ततः सव्येन कस्मिंश्चित्पात्रे
 जलं गृहीत्वा । दर्भरालोड्याओं यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो
 विश्वान् सुञ्जत्वर्ठ० हसः १ यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि चकृमाव्वयम् । वायुर्मा तस्मादेन
 र्भके कटोवक्ष्मं पारणकरे । इसको नीवीबधन कहतेहैं । पश्चात् सव्य होके ताबे आदिके पात्रमें जल डाले और उस
 पानीको दुर्भा करके आलोडन अर्थात् हिलौवे और (यद्देवादेवहेडनम्०) इत्यादि तीन मंत्रोत्तरके अभिमंत्रणकरे ।

फिर रजस्वला, धान आदि की दृष्टिसे तर्षा शूद्र आदिके स्वशसे पाककी अष्टद्वि दूर करनेके लिये उसी जलका द-
 मीसे अन्न आदि सामग्रीका प्रोक्षणकरे। पश्चात् अपसव्य दक्षिणमुख पातितजानु करके बीचसे दूणी ओर बटिकुइ त्रि-
 सो विधान् मुञ्चत्वर्ठ० हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वम एनाठ० सि चकृमावयमसूर्यो मा तस्मा
 देनसो विधान्मुञ्चत्वर्ठ० हसः ३ इति कृष्मांडसूक्तेनाभिमन्थ्य । ओ उदक्यादि दृष्टिपातात् शू
 द्रादिसंपर्कदोषाच्च पाकादीनां पवित्रताऽस्तुइति पाकादीन् संप्रोक्ष्याहरये निवेदयेत् । ततोऽ
 पमव्यं कृत्वा । द्विगुणभुज्ज कुशत्रय तिल जलान्यादायाओ अद्याऽमुकगोत्राऽस्मपितरसुकश
 र्मन् इदमासनं वृभ्यं स्वया इत्युच्चार्य। पितृतीर्थेन मोटक रूप दक्षिणाग्रकुशत्रयात्मकमासनमु
 त्सृजेत् । तत ओ अपहताऽसुरारक्षार्ठ० सि वेदिपद इत्यासनोपरि तिलान् विकीर्य (आयन्तुन
 इति मंत्रं जपेत् नवा) ततोऽर्धपात्रोपरि पवित्रं घृत्वा । तत्र ओ शन्नो देर्वारभिष्टयऽऽ आपो भव
 तुगा तिल जल सदित लें । फिर अपने पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके पितृतीर्थसे आसनके अर्घ्य देदेवे और सं-
 कल्पना जल वेदिपें छोडदेवे । आसन देनेके अनंतर (अपहता०) इसमंत्रसे आसनपर तिल गें और (आयतनः०)

इसमंत्रको पढ़े अथवा नहिभी पढ़े। कारण एकोद्दिष्टमें आवाहन मंत्रका त्याग होनेसे पश्चात् अर्घपात्र रखके उसमें पवित्री अर्थात् प्रादेशामात्र दर्भाका दो पत्ता अग्रभागधरे और (शन्नोदेवी०) इसमंत्रको पढ़के जल घाले। तथा (तिलोत्ति०) इसमंत्रसे तिल गेरे और मंत्रके बिनाही चदन पुष्प आदि घालदेवै। पश्चात् अर्घपात्रको वामहाथमें लेके न्तु पीतयोशन्नोऽभि स्रवन्तु न इति मंत्रेण जलं प्रक्षिप्याओ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रद्मद्भिः पृक्तः स्वयया पितृलोकान् प्रीणाहि नः स्वधा इतितिलान् तूष्णीमे व गंध पुष्पे निक्षिपेत्। ततोऽर्घपात्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा। अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा। तत्रस्थं पवित्रं पितृपात्रे धृत्वा। ओं यादिव्या आपः पयसा संवभ्रूव्युर्याऽअन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्व्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शर्वे० स्योनाः सुहवा भवंतु इत्यर्घपात्रमभिमंत्र्य दक्षिणहस्ते कृत्वा। ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् एषते हस्तार्घिः स्वधा नमः इत्युच्चार्य पवित्री पत्तेपर स्थापन करे और (यादिव्या०) इसमंत्रसे अर्घपात्रका जल मंत्रकरके द्विगुणभुम अर्थात् मोटक तिल जल लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करे और सकल्परीतिसे अर्घपात्रका जल दाहिने हाथकरके पितृतीर्थसे पवित्री

दे घोडा देगद्वे और अर्घपात्र जलसहित अगाडी स्थापन करदेवे । पश्चात् सव्यहोके (आपः शिवा०) इसमंत्रकरके
 अर्घपात्रके जलका शिरपे अभिषेक करे । फिर अपसव्य आदि होके (पित्रेस्थानमसि०) इसमंत्रसे अर्घपात्रको आ-
 सनके वामे बाके नीचेको मुस्त करके स्थापन करदेवे परंतु दक्षिणादिदे पहीली पात्रको वहासे उठावे नही । फिर गंध,
 पितृतीर्थेन पवित्रोपरि सावशेषं अर्घं दद्यात् । अर्घपात्रंच पुरतः स्थापयेत् (ततः सव्येन
 ओं आपः शिवाः शिवतमाः शांताः शांततमास्ते कृण्वंतु भेषजमिति शिरस्यभिषेकं कृत्वा)
 अपसव्यादिना ओं पित्रेस्थानमसीत्युक्त्वा । अर्घपात्रमधोमुखं पितृवामपार्श्वे निदध्यात् ।
 एवंस्थितं अर्घपात्रं दक्षिणादानपर्यंतं नोद्धरेन्न चालयेत् । ततो गंध पुष्प धूप दीपादिकं
 दृत्वा । द्विगुणभुक्तशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरसुकशर्मन् एतानि गंध
 पुष्प धूप दीप तांबूल पूर्गीफल यज्ञोपवीत वासांसि तुभ्यं स्वधा । इत्युत्सुजेत् । ततं ओं अ-
 पुष्प, धूप, दीप, नागरपान, छपारी, यज्ञोपवीत, वस्त्र आदि पिताके आसनपे रत्नके मोटक तिल जल दाहने हाथमें लेवे
 और पिताका गोत्र नाम उच्चारणकरके गंध पुष्प आदि पिताके अर्थ संकल्प रीतिसे करदेवे और संकल्पका जल अ-

गाड़ी त्यागनकरै । फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करै और अगाड़ी पडाहुवा पुण्य तिल आदि दूरकरके भोजनपात्रस्था-
 पनकरणके अर्थ जलसे जगह धोवै और पात्रदेके सुपेद चारीक मीठीसे या जलसे आसनके बाहर मंडलकरै । यह मंड-
 ल ब्राह्मणके चतुरस्र, क्षत्रियके त्रिकोण, वैश्यके गोलकरणा चाहिये । यहि दूसरेका मकान या जगें होवेतो भूस्वामिके
 चैनसंपूर्णमस्त्वित्युक्त्वा । भोजनपात्रस्थापनदेशं समाज्यं । पात्रं दत्त्वा । गौरमृत्तिकया
 जलेनवा आसनं वेष्टयित्वा । मंडलं कुर्यात् (अत्र परकीयभूमौ श्राद्धकारणे ओं इदमन्नं भू-
 स्वामिपितृभ्यो नमः । इति घृतादियुक्तमन्नं दभोपरि क्षिपेत् । स्वसत्वेतु न दद्यात्) ततो भो-
 जनपात्रे उष्णमन्नंसघृतं अनेकव्यंजनयुतं सुशितलजलसहितं यथावत् परिविश्य मधु दत्त्वा ।
 ओं मधुवाताऽऋतायते इति मंत्रत्रयेण ओं मधु मधुमध्विति चाभिमंत्रयेत् । ततोऽन्नपात्रं न्यु-
 अर्थ घृतयुक्त अन्नकी (इदमन्नं भूस्वामि०) इसमंत्रसे बलिदेवै । यदि जीवताहोवेतो किराया देदेवै और अपने घरमें
 आह करनेवाला तथा तीर्थ क्षेत्र आदिमें यह बलि नहि देवे । पश्चात् भोजनपात्रकेविषे गरम अन्न घृत, व्यंजन शाग
 सहित परोस देवे और शीतल जलकापात्र पास रखे । फिर अन्नपं सहत लगाके (मधुब्वाता०) (मधु मधु मधु) इण

तीनमंत्रोंकरके अभिमंत्रणकरै । फिर अन्नपात्रको दोनो ऊँधेहाथोंसे (व्यस्त) छुदा २ ऊपरथली रत्नके स्पर्शकरै अर्ध-
 पृथ्वी ते पात्रं०) ओं (इदं विष्णुर्विक्रमे०) यहै २ मंत्रपढ़के अपने ऊँधे कियेहोये दाहणे हायके नत्तरहित अंगुठे-
 जपाणिभ्यां व्यस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा । ओं पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य सुखेऽअमृतेऽअमृतं
 जुहोमि स्वधा इति पठित्वा । ओं इदं विष्णुर्विक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाठं०
 सुरे इत्येतामृचं च जप्त्वा । स्वांगुष्ठमधोमुखमनखं । ओं विष्णो कव्यठं० रक्ष इति यजुषाऽ
 न्नेनिवेश्य । इदमन्नम् । इमां आपः । इदमाज्यं । एतत्सर्वं कव्यमिति पठित्वा । ओं अपहृताऽ
 असुरा रक्षाठं० सि वेदिपदः इति अन्नपात्रपरितस्तिलान् विकीर्ष्यैवामकरणे पात्रमत्यजन्नाद
 क्षिणकरेण द्विगुणशुभ्रकुशत्रयादीन्यादायाओं अद्यासुकगोत्र अस्मत्पितरसुकशर्मन् इदमन्नं
 कव्यं सोपस्करं परिविष्टममृतरूपं तुभ्यं स्वधा इत्युदकं पितृतीर्थेन पित्रासनवामभागे भूमौ
 को अन्नके (ओं विष्णो कव्यठं० रक्ष०) इस मंत्रसे लगावे और (ओं इदमन्नं०) इत्यादि पठके (ओं अपहृता०)
 इसमंत्रसे अन्नपात्रके बाहरकर तिल विकीरणकरै । फिर वामे हाथसे अन्नपात्रको नहि त्यागता हुवा दाहणे हाथमें मो-

एक तिल जल लेके ऊपरके संकल्पसे पिताके अर्थ करे । संकल्पका जल वापभागमें भूमिपे त्याग देवे । फिर (ओं अन्नहीन०) इसमंत्रसे प्रार्थना करके सब्यसे ओंकारव्याहृतिसहित गायत्रीका तीनकेर जपकरे और अंगली करके क्षिपेत् । तत ओं अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्विति प्रार्थ्यास व्येन सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्रीं त्रिः सकृद्वा जपेत् । कृतांजलिर्होभवासीनः । ओं मधुवा ताऽन्नतायते मधु क्षरन्ति सिंघवः । माध्वीर्नः संत्योषधीः । मधु नक्तमुतोपसो मधुमत्पार्थिव ठं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता २ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः । माध्वीर्गोवो भवं छु नः ३ इति ऋचं मधु मधु मध्वीति च जपेत् । तत ओं ऋणुष्वपाजः प्रसितिन पृथ्वीं स्या हि राजेवामवाँऽइमेन । तृष्वीमनुप्रसितिं दूणानेस्तासि विध्य रक्षसस्तापिष्ठेः । तव भ्रमासऽ आशु यापतंत्यनु स्पृश धृपताशोशुचानः । तपूठे०ष्यन्ने छुह्वापतंगान संदितो विसृज व्विष्व गुल्फाः २ प्रतिस्पशो विसृजनूर्णितमो मवापाशुर्विशोऽअस्या अदब्धः । यो नो हरेऽअघश (ओं मधुवाता०) इत्यादि तीनमत्र (ओं ऋणुष्वपाज०)

इत्यादि रक्षोघ्न पांच मंत्र जपे । फिर तिल विकीरण करके (ओउदीरता०) इत्यादि १३ मंत्र (ओसहस्रशीर्षा०)
 इत्यादि १६ मंत्र. (ओंआशुःशिशानो०) इत्यादि अप्रति रथ मंत्र १७ जपे और (ओंसप्तव्याधाः०) इत्यादि
 ठ० सोयोऽअन्त्येमेमा किष्टेव्यथिरादधर्षिन् ३ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यांतनुष्वन्यमित्रा ठे ओषता ति
 र्गमहेते । यो नोऽअरातिठं० समिधानचक्रे नीचांतं धक्ष्यत सन्नशुष्कम् ४ उर्ध्वो भव प्रति
 व्विद्ध्याद्धयस्मदाविष्कृणुष्वदेव्यान्येन्नोअवस्थिरातनुहियातुजूनां जामिमजामिभ्रमृणीहि
 शन्नून् ऽअग्नेष्ववतेजसा सादयामि ॥ ५ ॥ इति रक्षोघ्नीः पंचक्रचः पठित्वाभूमौ तिलान् वि
 कीर्ये । पितरं चितयन् ओ उदीस्तामवर इत्यादि त्रयोदश मंत्रान् ओ सहस्रशीर्षा पुरुष इति
 पुरुषसूक्तं । ओ आशुः शिशानो इत्याद्यप्रतिरथं च जपेत् । तत ओ सप्तव्याधा दशार्णेषुमृगाः
 कालं जरे गिरौ । चक्रवाका शरद्वीपे हंसाः सरसि मानुषे १ तंभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेद
 पारगाः । प्रास्थिता दूरमध्वानं यूयं तेभ्योऽवसीदथ २ इति हविः स्तोत्रं । अन्यानि च सप्तानि चि
 हविस्तोत्र और रुचिस्तोत्रप्रभृति अन्य पवित्र स्तोत्र शक्तिमाफुक

जपे । फिर अपसव्य तरकें भोजन पात्रके समीप जलसें भूमि धोकें दक्षिणाग्र त्रिकुशा रसें और सर्वतरहका अन्न, व्यंजन, तिल, जलसहित लेके (ओं अग्नि दग्धा०) इस मंत्रकरके कुशाके ऊपर विकीरण करे और सव्यसें आचम-

रुचिस्तवप्रभृतीनि यथाशक्ति जपेत् । ततोऽप्यसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ भूमिं प्रोक्ष्यात्तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य्यौ सर्वप्रकारमन्नं सव्यंजनमुद्धृत्य । सतिलमेकीकृत्य । ओं अग्निदग्धा श्र ये जीवा येप्यऽदग्धाः कुलेममाभूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यांतु परां गतिं ? इतिमंत्रेण कुशो परि तदन्नं विकीर्य्य । सव्येन आचम्याहरिं स्मृत्वा । पूर्ववत् गायत्रौ । मधुवाता इति ऋचं मधु मधु मध्वितिच जपेत् । ततोऽप्यसव्येन उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणपुवं स्थानं निर्मायात्तन्मध्ये द भिंपिंडुलीमूलेन ओं अपहताऽअसुरा रक्षाठं० सि वेदिपद इति वामान्वारब्ध्या दक्षिणकरेण प्रा न, हरिस्मरण करे । फिर तीनवरे गायत्रोजपं (ओमधुवाता०) इत्यादि तीनमंत्रोंका जप करे और अपसव्यसें भोजन, नपात्रके समीप चोकोण दक्षिणको नीचा एक स्थान (वेदी) चुनावे । फिर उसके बीचमें दो पत्तेवाली दर्भाकरके

(ओंअप्रहृता०) इममंत्रसे दक्षिणाग्र एक रेखा निकालके दर्भाको उत्तरदिशामें त्यागदेवै । फिर (ओंयेरूपाणि०) इसमंत्रमें अग्निसे जलताद्वारा (उल्मुक) काष्ठकाशकू रेखाकेऊपर भ्रमाके दक्षिणमें स्थापनकरै । पश्चात् मूलकनेसे अछतर छेदन करीहोई त्रिकुशा रेखाकेऊपर धरकें(देवताभ्यः०) इस मंत्रको तीनवेर पढ़ै । फिर तिल जल सहित एक देशमात्रारेखां दक्षिणाग्रां समुच्छिद्य । दर्भापच्छलीमुत्तरस्यां दिशी निक्षिपेत् । तत ओं येरू पाणि प्रतिमुंचमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरंति । परा पुरो ये भरन्त्यग्निष्ठांछोकाल्प्रणु दात्यस्मादिति मंत्रेण ज्वलदुल्मुकं रेखोपरि भ्रामयित्वा । दक्षिणतो निदध्यात् ॥ तत उपमूल सकल्लून कुशत्रयं रेखोपरि स्तीर्त्वा । देवताभ्यरिति त्रिर्जपित्वा । सतिलजलपात्रे गृहीत्वा । ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् अत्रावनेनिक्ष्वते स्वधा इति कुशोपरि अ वनेजनं दद्यात् । ततः सर्वस्माद्भ्रातृकचिदुद्धृत्य । मध्वाज्य तिल सर्वे व्यंजनयुतं पात्रे पात्र लेकं पिताहा गोत्र नाम उच्चारण करै और कुशाकेऊपर अवनजन देवै । फिर सपूर्ण अन्नमेंसे थोडा २ लेकें स- हत, घृत, तिल, व्यंजन जादि

मिलाने और बीलके फलकी माफिक पिंड बनानेके, सहत, घृतकामालम करे । फिर मोंटक तिल जलसहित पिंड लेके पिताके गोत्र नामसे दोनों हाथसे बेदीपे पिंड धरे और (लेपभागमुजस्तृप्यत्०) यहे मंत्र पढके दाहणे हाथके लगाहुवा अन्न पिंडकेपास पुछके डालदेवे । फिर हाथ धोके सब्यसे आचमन, हरिस्मरण करे और अपसव्य होके (ओंअन्न-

कृत्वा । त्रिल्वोपमं पिंडं निर्मायं । मधुघृताभ्यामभिचार्यं । द्विगुणभुन्नकुंशत्रयादि सहितमादा य । ओं अमुकगोत्र अस्मात्पितरमुकशर्मन् वसुरूप एष ते पिंडः स्वधा नम इति सब्योपगृही त दक्षिण हस्तेनावनेजनस्थाने पिंडं दद्यात् । ततो लेपभागमुजस्तृप्यंतु इति दर्भमूले करं प्रोच्छ्य । हस्तौ प्रक्षाल्य । सब्येन आचम्य । हरिं स्मेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा । ओं अन्न पितर्माद यस्व यथाभागमावृषायस्व इति पठित्वा । वामावर्तेनोद्दुमुखीभूय । प्रीतमनाः श्वासं नियम्य

पितर्माद०) इस मंत्रको पढताहुवा व मतरफसे उत्तरको मुख करके प्रसन्नमनके द्वारा श्वास बधकरके ऊसीतिरे पीछा- हटके (ओंअमीमदत्०) इसमंत्रसे पिंडपे स्वास छोडदेवे । फिर अर्वनेजनपात्र लेके पिंडपे प्रत्यवेनजन देवे

(नीवी) कडमं रस्विहोई तिल कृशा पिंडकेपास गरेद्वै । और सर्वसं आचमन करे । फिर अपसव्य हाक
(ओंनमस्तेपित०) इसमंत्रसे अजली कियाहुवा प्रार्थना करे और (ओं एतत्ते पितर्वासः०) यहै मंत्र पढके

तेनैव यथा परावृत्य । ओं अभी मंदत पिनर्यथाभागमावृषायिष्ट इति जपेत् । ततः पूर्वदत्ता
वनेजनपात्रेण । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्वते स्वधा । इति पिंडो
परि प्रत्यवनेजन दत्त्वा । नीवी विस्त्रस्य । सव्येन आचामेत् । ततो ऽपसव्येन । ओं नमस्ते पि
तः रसाय नमस्ते पितः शोपाय नमस्ते पितेजीवाय नमस्तेपितः स्वधायै नमस्ते पितर्वोराय
नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्दत्तसतस्ते पितर्द्वेष्म इति कृतांजलिः
पठेत् । तत ओं एतत्ते पितर्वासः इति पठित्वा । पिंडोपरि सूत्रं ऊर्णदिशां वा पंचाशद्धर्षोपरि
यजमानहृदयलोमानिवा दत्त्वा । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् एतत्ते वासः स्वधा इत्युत्सु

सूतका तीन तार अथवा ऊनका नाका या बुटे यजमानके छातिका सुपेद बाल पिंडयें देके सकल्पद्वारा त्याग

करद्वै । फिर पिताका निमित्त लकें मन्त्ररहित पिंडवें गघ, पुष्प, धूप, दीप, ताबूल, पूगीफल, दक्षिणा अर्पणकरकें पिंडका श्रेय अन्न पिंडके पास विकारण करद्वै । पश्यान् भोजनपात्रमे (ओंशिवाआप०) इस मन्त्रसे जल (ओं सौमन-
 जेत् । ततः पितरमुद्दिश्य । तदीयापिंडे तुष्णीमेव गंवपुष्पधूपदीपतांबूलपूगीफलदक्षिणादी
 नि दत्त्वा । पिंडशेषान्न पिंडसमीपे विकिरेत् । ततो भोजनपात्रे । ओं शिवा आपः संतु इतिज
 ल । ओं सौमनस्यमस्त्विति पुष्णं।ओं अक्षतं चारिष्टमस्तु इति यवतिलांश्च दत्त्वा । ओं अमु
 कगौत्रस्य अस्मत्पितुरमुकशर्मणः वसरूपस्य दत्तदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति ति
 लयुक्तमक्षय्योदक दद्यात् । ततः प्रादुसुखः सव्येन कृतांजलिराशिषो गृह्णीयात् । ओं अ
 वोरः पिताऽस्तु इति । तत ओं गोत्रं नो वर्द्धतां, दातारो नो भिवर्द्धतां, वेदाः संततिरेव च । श्रद्धा
 च नो माव्यगमद्बृहदेयं च नोऽस्तु । अन्न च नो बहुभवेदतिथीश्च लभेमहि । याचिनारश्च नः
 स्य०) इस्से पुष्प, (ओं अक्षत चारिष्ट०) इसमन्त्रसे यव तिल गेरू और मोटक आदिलेके षष्टिविभक्तियुक्त चाक्यसे पिताको
 अक्षयोदकद्वै । फिर सव्यस पूर्वको मुस्त करके अगली कियान्नुवा (ओं अयोर. पितास्तु०) (ओं गोत्र नो वर्द्धता०) इत्यादि

मनो करके आशीपमणे । फिर अपसव्य होके पिंडके ऊपर पवित्रो सहित त्रिकुश रसके (ओ ऊर्जवहति०) इस मंत्रसे
दक्षिणाग्रजलयारा दानकरे । पश्चात् अर्घपान सूया करके शक्तिमाफिक रजत दक्षिणा ओर मोटक तिल जल लेवे और
संतु माचयाचिष्म कंचन । एताः सत्या आशिपः संतु इति वदेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा । पिंडो
परि सपवित्रं कुशत्रयमास्तीर्ये । स्वधां वाचयिष्ये । ओं स्वधोच्यतामिति पठित्वा । ओं ऊर्जे
बहतिरमृतं घृतपयः कीलालंपरिश्रुतं स्वधास्थतपयत मे पितरमिति सपवित्र कुशोपरि दक्षि
णाग्रां जलधारां दद्यात् । ततोऽपात्रमुत्तानीकृत्य । यथाशक्ति रजतदक्षिणां कुशत्रयादीनि
चादाय । ओं अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य कृतैतत्सांवत्सारैकैकोद्दिष्ट
श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजन चंद्रदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमह
सुरसृजे । इति दद्यात् । ततो द्विगुणभुक्त कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्यस्मत्पितुर
मुकशर्मणः वसुरूपस्य कृतैतत्सांवत्सारैकश्राद्धकर्मणः सांगतासिद्धार्थं अमुकसंख्याकान्
अपने पिनाका नाम पष्टिभिर्भक्तिसहित लेके ब्राह्मण को दक्षिणा दानकरे । फिर ब्राह्मण भोजनका सकल्पलेके पिंडको

उठाने और थालीमें रखके सुगे । पिंडके नीचेकी दुर्भा, उल्लुक अग्निमें डालदेवै । फिर (ओं अभिरम्यता०) यह पदके विसर्जनकरे (देवताम्य०) इस मंत्रको तीनवेर पढके दीपक निवाबै और हाथ पग धोके सव्यसे तीनवेर आच-

ब्राह्मणान् तृप्तिपर्यन्तेनान्नेन भोजयिष्ये । इति संकल्प्य । पिंडमुत्थाप्य । स्थाल्यां निधाय । अ
वघ्राणं कृत्वा । पिंडाधस्तृतदर्भं चेल्लुकमग्नौ निक्षिपेत् । तत ओं अभिरम्यतामिति विसृज्य
देवताभ्यरिति त्रिः पठित्वा । रक्षादीपं निर्वाप्य । हस्तौपादौप्रक्षाल्य । सव्येन आचम्य । ओं
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिरिति
पठित्वा । कर्मपूत्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः पिंडं गां अजं वायसान् वा खादयेत् । अ
ग्नौ जले वाक्षिपेत् । ततो वैश्वदेव बलिकर्माणी कृत्वा।श्राद्धीय द्रव्याणि ब्राह्मणाय प्रतिपाद्याय

मन करे. (ओं प्रमादान्०) इस मंत्रको पढके कर्मपूत्तिके अर्थ विष्णुका स्मरण करे । पश्चात् पिंड गोकों या बकरा,
कागलोंको खुलादेवै । अथवा अग्निमें या, भौतसे नदी आदिके जलमें डालदेवै और वैश्वदेव बलिकर्म करके श्राद्धकी

सामग्री ब्राह्मण को देदेवै । फिर शक्तिमाफक वेद पढेहोये ब्राह्मणोंको जिमावे (अथ नैमित्तिक बलिदान) (ओं सोर भेया०) इस मंत्रसे गोकु अर्थ (ओं ऐंद्रवारुण०) इस्से कागलोकों (ओ द्वौश्वानों०) इस्से श्वानके अर्थ (ओं हतते

थाशक्ति श्रोत्रियब्राह्मणान् भोजयेत् । अथ नैमित्तिक बलिदानमंत्राः । ओं सौरमेथ्यः सर्व
हिताः पवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृह्णतु मे त्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः १ इदमन्नं गोभ्यो
नमः । ओं ऐंद्रवारुणवायव्याः सौम्या वै नैऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णतु भूमावन्नं मया
र्पितम् २ इदमन्नं वायसेम्योनमः । ओं द्वौ श्वानौश्यामशवलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्याम
न्नं प्रयच्छामिस्यातामेतावहिंसकौ २ इदमन्नं श्वम्यांनमः । ओं हतते अन्नमिदमनुष्याय इति
हंतकारबलिं दद्यात् ४ एवं बलिकर्मकृत्वा । ओं यस्य स्मृत्याच नामोक्यातपो यज्ञ क्रिया

अन्नमिदमनुष्याय०) इस मंत्रसे हंतकार बलि निकाले । इस तरह बलि देके (ओं यस्यस्मृत्या०)

इस श्लोकों पढ़ें फिर अतिथि, पुत्र, नोकर, बापव, मित्र आदिके सहित सुद यजमान भोजन करें । इसीतरे, माता,

द्विपु । न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तमच्युतमिति पठित्वा । अतिथि सुत भृत्य बांधवा
 दिभिः सह भुंजीत । एवमेव मातु भ्रातृ गितृव्यादि श्राद्धप्रयोगः ॥ मातृश्राद्धे । अमुकगोत्रा
 या अस्मन्मातुरमुकदेव्याः सांवत्सरिकेकोद्विष्टश्राद्धमहं करिष्ये । इति संकल्पं कुर्यात् ।
 ओं अमुकगोत्रे अस्मन्मातरमुकदेवि इदमासनं ते स्वधा इत्याद्युत्सर्गवाक्यं कर्त्तव्यम् ॥ इ
 ति पंडित श्री चतुर्थीलाल गोडविरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धतिखंडे अनुकल्पोक्तश्राद्धेकोद्विष्ट
 श्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥

भाई, चाचे, आदिका सावत्सरिक श्राद्ध करणा चाहिये । इति प० चतु० विर० सावत्सरिकेकोद्विष्टश्राद्ध प्रयोगः ॥

अथ पंचकमरण विधि लिखते हैं । प्रथम दर्भाका पंचपूतला मनुष्यके आकार करके उनके तांगोंसे वेष्टन करे । फिर उनके ऊपर यवोंका चून पानी घोला होया लेप देवे और इमशान भूमिमें जाके शुद्ध जर्गे एक स्थंडिल बाहुरेतका या उनके ऊपर यवोंका चून पानी घोला होया लेप देवे और बीचमें पूतला ५ स्थापन करके संकल्पका उच्चारण मढ़िका बुनावे । उसके ऊपर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, और बीचमें पूतला ५ स्थापन करके संकल्पका उच्चारण

॥ अथ पंचकशांतिप्रयोगः ॥ तावन्मरणकालकृत्यम् । तत्रदर्भणांपंचप्रतिमामनुष्याकृतयः कृत्वा। ऊर्णासूत्रेणावेष्टय। यवपिष्टेनानुलिप्य। शवसमीपेस्थंडिले पूर्वादिदिधुमध्येचस्थापयेत् ॥ ततोदेशकालौसंकीर्त्य०। अपसव्येन। अमुकगोत्रस्यअमुकप्रेतस्ययनिष्ठादिपंचकजनितदुर्मरणसूचितवंशारिष्टविनाशार्थंपंचकविधानंकरिष्यइतिसंकल्प्य । प्रेतवाहायनमः १ प्रेतसखायनमः २ प्रेतपायनमः ३ प्रेतभूमिपायनमः ४ प्रेतहर्त्रेयनमः ५ इतिनाममंत्रेणआवाहनंस्थापय । फिर अपसव्य होके अमुक गोत्र नाम प्रेतकों घनिष्ठा आदि पंचकके भीतर मरणसे होनेवाली दुर्गति और वंशवालोंके अरिष्ट दूर होनेके अर्थमें पंचकोंकेशांतिकी विधि करताहों ऐसे कहके संकल्पका जल त्याग देवें । फिर (प्रेतवाहायनमः प्रेतसखाय, प्रेतपाय, प्रेतभूमि पाय, प्रेतहर्त्रे०)

इन पांचनाम मंत्रोंकरके आवाहन स्थापन करे और गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तान्बूल, -दक्षिणा, आदिसे पूजा करके प्रेतके ऊपर पांचों फूलला रखदेवे । प्रथम तो शिरके ऊपर १ दूसरा दाहणी कूखके० २ तीसरा, बांधी कुसुमे० ३ चौथा नाभिपे० ४ पांचवां दोनों पगोंके ऊपर परखके उनके ऊपर पहले कहे होये नाम मंत्रोंसे घृतकी आहु- नंचकृत्वा। गंधमाल्यादिभिःसंपूज्य। दाहसमये प्रेतस्योपरिन्यसेत् । तत्रप्रथमं शिरसि १ द्वितीयां दक्षिणकुक्षौ २ तृतीयां वामकुक्षौ ३ चतुर्थानाभौ ४ पंचमोपादयोर्मध्ये ५ तदुपरि ताभ्यो नाममंत्रैर्घृताहुतीर्दत्वा। ताभिः सहविधिनाशंवदहेत्। ततः सूतकांतिशान्तिं कुर्यात्। इति पंचकमर णविधानम् ॥ ॥ अथशान्तिपद्धतिः ॥ सूतकांति तीर्थे गत्वा। तत्रस्नात्वा। अहतवस्त्रे पीरथाय स्वासने उपविश्य आचम्याकुशोपग्रहः । कुशत्रयतिलजलान्यादाय। देशकालौसंकीर्त्य० (अति देवे । फिर फूलों करके सहित विधि पूर्वक दाह करदेवे और सूतकके अंतमें शान्ति करे (शान्ति करणेकी विधि लिखतेहै) सूतकके अंतमें ग्यारवे या बारवे दिन नदी, तलाव, तीर्थ, आदिपे जाके स्नान करे । नवीन घीयाहुवा वस्त्र पहरे आसनपे बैठके आचमन, प्राणायाम दर्भा धारण करे। फिर कुशत्रय तिल जललेके संकल्प उच्चारण करे और अप-

गत्यं अमुक गौत्र नाम वाले प्रेतकी पंचकमरण दुर्गति दूर होने के अर्थ तथा हमारे घरमें संपूर्ण बांधवोंके आयु, आरोग्य सुख, श्री प्राप्तिके अर्थ पंचक शांतिकर्म करताहों ऐसे कहके संकल्पका जल छोड़देवै। फिर स्वयंसे (ओं सुमुख पसव्यं) ओं अमुकगौत्रस्य अमुकप्रेतस्य पंचकजनितदुर्मरणदोषोपशान्त्यर्थं (स्वयं) मम गृहे सपरिवारस्य आयुरारोग्यसुखश्रीप्राप्त्यर्थं पंचकशांतिकर्मोहंकारिव्य इतिसंकल्प्य । ओं सु मुन्त्रश्रेकंदतश्चेत्यादिस्मरणपूर्वकगणेशनग्रहान् संपूजयेत् । ततो मंडलोपरि पूर्व० दीक्षण० पश्चिम० उत्तरेषु मध्येच धान्यपुंजोपरि ओं भूरसिभूमिरसीत्यादि पंचकलशान् संस्थाप्या सर्वेषु सर्वापधि० दूर्वा० सप्तमृत्तिका० पंचपल्लव० पुगीफल० पंचरत्न० हिरण्यादीनि निक्षिप्य । वस्त्रेणावेष्टय पूर्वकलशं दुग्धजलेन० १ दक्षिणकलशं दधिजलेन० २ पश्चिमकलशं घृतोदकेन० ३ उत्तरकलशं गोमायोदकेन० ४ मध्यकलशं गोमूत्रोदकेन च ५ परिपूर्य्य प्रत्येकं तंडुलपूर्णपात्रं (इत्यादि पाठ पढके गणेश, सूर्यादि चक्रग्रहोंकी पूजा करै। अनंतर एक मंडल बनाके उसपर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, और बीचमें चाल, मुंग, उडद, गेहूं, चीणे, आदि अन्नका पांच पुंजकरके (कलशस्थापन विधिसे)

पाप कृत्वा आगतं तरे। फिर सपूर्ण १ उग्रशोभे जलसंगोपि, दूर्वा, पत्रपल्लव, सममृत्तिका, पूगीफल, पत्ररत्न, सुवर्ण, गंगोदरु, मादि पानके एकत्रभवे वेष्टनकरे और पूरके कलशमें दुग्ध जल १ दक्षिणकेमें दही जल २ पश्चिममें, पूर तत्र १ उग्रशोभे गोमय जल ४ बीचके कलशमें गोमूत्रजल ५ मरके खुदा २ चावलसे मराहुवा कांसिका पूर्ण पात्र

त्र निधायातदुपरि क्रमेण पंचनक्षत्रदेवतानांप्रतिमाःस्वर्णमयीः अग्न्युत्तारणपूर्वकं स्थापयेत्
अथावाहनं। पुष्पाण्यादाय। पूर्वं। ओं व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्रमसिसहस्रधा
रं देवस्त्वासपितापुनातुव्वसोः पवित्रेणशतधारेणसुष्वाकामधुक्तः १ ओं वसुभ्योनिमः वसून्
आवाहयामि स्थापयामि ॥ ॥ दक्षिणे० । ओं व्वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्यः ऋतसदनमासीद् २ ओं वरु
नीस्योव्वरुणस्यः ऋतसदम्यसि व्वरुणस्यः ऋतसदनमसि व्वरुणः ऋतसदनमासीद् २ ओं वरु

शशोके ऊपर स्थापन करे और पात्रके अंदर क्रमकरके पांचदेवोंने तुर्ण मयी पूर्ण ५ दुग्धसे धोके स्थापन करे और आगतन करे। पुण हागमें सेके पूरे कलशमें (ओं व्वमोः पवित्रमसि०) इस मंत्रमें तमुदेरोंको १ और दक्षिणको

(ओं व्वरुणस्योत्तं०) इस्सें वरुणको० २ पश्चिममें (ओं उतनोहिर्बुध्न्यः०) इस मंत्रसे अजैक पादको० ३ उत्तरम (ओं शिवोनामासि०) इस मंत्रसे अहिर्बुध्न्यको० ४ बीचके कलशपर (ओं पूषन्तवव्रते०) इस मंत्र करके पूषा देवताका आ-
 गायनमः वरुणं आवहयामि स्थापयामि ॥ पश्चिमे० । ओं उतनोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपा
 तृथिवीसमुद्रः । विश्वेदेवाऽऽकृतावृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवंतु ३ ओं अजैकपादा
 यनमः अजैकपादं० स्थाप० ॥ उत्तरे० ॥ ओं शिवोनामासिस्वधितिस्तोपितानमस्तेऽअस्तुमामाहि
 ठंसीः । निवर्तयाम्यायुषेनाधायप्रजननायरायस्योपायसुवीर्याय ४ ओं अहिर्बुध्न्यायनमः
 अहिर्बुध्न्यं० स्थाप० ॥ मध्ये० । ओं पूषन्तवव्रतेव्वयन्नारिष्येमकदाचन । स्तोतारस्त इहस्म
 सि ५ ओं पूषेनमः पूषणमावाहयामि स्थापयामि । इत्यावाहा ॥ ओं मनो जूतिर्जुषतामितिप्र
 तिष्ठाप्य । अक्षतान् विकीर्य । प्रत्येकं नाममंत्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत् । ततस्तत्पार्श्वे अक्षतपुंजो
 वाहन स्थापन करे ५ । फिर (ओं मनोजूतिर्जुषता०) इस्सें पूष्य विकिरण करके छुदे २ नाम मंत्रसे गंध, पुष्प, धूप, दीप,
 जैवय, तांबूल, पूगीफल, नारेल, दक्षिणा, ऋतुफल आदि षोडशोपचारों करके पूजा करे । फिर कलशको उत्तर भाग-

में एक वेदीपे वृक्षके ऊपर चौदह पुंज (देरी) चावलेंका करके सुपारी १४ धरे। फिर उनके ऊपर चोदह (ओं यमा-
यनमः१ ओं धर्मराजाय०२) इत्यादि नाम मंत्रों करके यम आदि देवतोका स्थापन करे और उसी जगें ईशानमें (ओं

परिपुगीफलेषुयमादिचतुर्दशदेवताः स्थापयेत् । तद्यथा । ओं यमायनमः यमंआवाहयामि
स्थापयामि १ ओं धर्मराजं० धर्मराजाय०२ ओं मृत्यवे० मृत्युं०३ ओं अंतकाय० अंतकं० ४
ओं वैवस्वताय० वैवस्वतं०५ ओं कालाय० कालं० ६ ओं सर्वभूतक्षयाय० सर्वभूतक्षयं० ७
ओं औदुंबराय० औदुंबरं० ८ ओं दध्नाय० दध्नं० ९ ओं नीलाय० नीलं० १० ओं परमेष्ठि
ने० परमेष्ठिनं० ११ ओं वृकोदराय० वृकोदरं० १२ ओं चित्रायनमः चित्रं० १३ ओं चित्रगु
प्तायनमः चित्रगुप्तं आवाहयामिस्थापयामि१४ तत्रैव ईशान्यां । ओं अधोरेभ्योथवोरेभ्योघोर
घोरतेरेभ्यः । सर्वभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्ते अस्तुद्रक्षेभ्यः १ ओं अधोरायनमः अधोरं० इत्या
वाह्य । ओं मनोज्ञतिरितिप्रतिष्ठाप्य । ओं चतुर्दशयमेभ्योनमः । ओं मृत्युंजयायनमः । इतिषोड
शोरेभ्योय०) इस मंत्रसे मृत्युंजयको

और अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, सर्प देवता, इन्द्रादि दिक्पालोंको स्थापन करे। फिर नाम मंत्र करके खुदि २
 और पुष्पादिकोंसे पूजा करके अग्निस्थापन करदेवै। (अग्नि स्थापन करणकी विधिलिखतेहैं) होता पंचकलशोंसे
 पश्चिम, या, ईशानमें, चोकोण, चोवीस अगुल लबा, एक स्थंडिल (वेदी) बनाके दर्भासे बहारे और दर्भाको ईशानमें
 शोपचारैः पूजयेत्। ततः तत्रैव अश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्राणि० सर्पान्० इन्द्रादिदिक्पा
 लांश्चावाह्यागंधादिभिः पूजयेत् ॥ अथग्निस्थापनम् ॥ तत्रादौ होताचतुरस्रहस्तमात्रंस्थंडिले
 कृत्वा। कुशैः परिसमुह्य। तान्कुशनैशान्यांपारित्यज्य। गोमयोदकेनोपालिष्य। तन्मध्येसुवमूले
 नम्रागग्रप्रादेशमात्रं उत्तरोत्तरक्रमेणत्रिरुहिल्य। उल्लेखनक्रमेणाऽनामिकाऽनुष्टाभ्यांमृदमुद्धृत्य
 ऐशान्यांक्षिप्त्वा तद्देशंजलेनाभुक्ष्य। तत्रतूष्णींकांस्यपात्रस्थमग्निस्थापयेत्। ततःपंचसूक्तजपार्थं
 स्थापन करे। गोमयका लेपा देवै। फिर वेदके बीचमें सुवके लेके भागसे दश अगुल लबी उत्तरोत्तर दक्षिणसे लेके
 तीनोंरेखा लिखे और अनामिका, अगुठेको मिलके रेखाकी रेत (मट्टी) उठाके ईशानको गेरे। फिर जलका छिटा देके
 मंत्र रहित कासीके दो पात्रोंसे लाई होई अग्नि स्थापन करदेवै। पश्चात् पंच देवोंके सूक्त

जपनेके अर्थ ब्राह्मणों में वरणन करके रक्षोघ्न मंत्र आदि ऊपर लिखाहोया जपवै । फिर अग्निके दक्षिण तरफ ब्रह्मा-
रौ आसन देके (चरु) खीर पकाने पर्यंत कुत्र कठिका विधान वृषोत्सर्गमें लिखे मुजब करके घृतका होम करै (ओं

पचत्राह्यणवरणं० । तेच पंचकलशेषुपंचसूक्तानिजपेयुः । तत्र प्रथमकलशे । ओं कृणुष्वपाजरि
त्यादिपंचरक्षोन्नमंत्राः ॥ १ ॥ द्वितीयकलशे० । ओं विभ्राडि त्यनुवाकः ॥ २ ॥ तृतीये० । ओं
आशुःशिशानो इत्याद्यप्रतिस्थं० ॥ ३ ॥ चतुर्थे० । ओं नमस्तेल्लइत्यादिरुद्राध्यायः ॥ ४ ॥ पं
चमकलशे ओं ऋचंवाचंपपद्ये इत्यादिअध्यायः ॥ ५ ॥ ततो दक्षिणतोब्रह्मासनादि चरुश्रप
णांतं वृषोत्सर्गवत् कुशकंडिकाकर्मकृत्वा । अग्निपर्युक्षणान्ते आज्यहोमः । ओं प्रजापतये स्वा
हा इदं प्रजापतये नमम । ओं इंद्राय स्वाहा इदं इंद्राय नमम । ओं अग्नये स्वाहा इदं अग्नये नमम ।
ओं सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम । इत्याघारावाज्यभागौ हुत्वा । अक्षतान् गृहीत्वा । बलवर्द्धन
प्रजापतये०) (ओं इंद्राय०) (ओं अग्नये०) (ओं सोमाय०) इत्यादि आधार, आज्यभाग, सज्ञक होम करके चदन
अक्षत पुण्यादिसे बलवर्द्धन

नाम मन्त्रिणी पूजा करे। फिर वरु आदि प्रधान देवोंके अर्थ एक एकके निमित्त, समि घ, पायस, तिल, घृत, आदि
द्रव्यो करके १०८। या. २८। या. ८ आहुति देवे (आहुति देनेका मंत्र लिखतेहैं) (ओं व्वसो पवित्र०) इस
नामानं वरुं पूजयेत् । ततो वस्वादि प्रधान देवतानां प्रत्येकं समिच्चरतिलाज्यादि द्रव्यैर
शेत्तरशतमष्टाविंशतिरशेषाऽहृतिं छुंहुयात्। ततो यमादि अवोरान्तं प्रत्येकमेकैकाहृतिं छुंहुयात्
तत्रमन्त्राः। ओं व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् देवस्त्वासवितापुनातु
व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुष्वा कामधुक्षः स्वाहा इदं वसुभ्यः १०८। २८। ८। ओं व्वरु
णस्योत्तमनमसि व्वरणस्यस्कंभसर्जनीस्यो व्वरणस्यऽऽकृतसदन्यसि व्वरणस्यऽऽकृतसदनमसि
व्वरणस्यऽऽकृतसदनमासीदस्वाहा इदम्वरुणाय १०८। २८। ८। ओं उतनोऽहिर्बुध्न्यः
शृणोत्वजऽएकपात्पृथिविसमुद्रः। विधेदेवाऽऽकृता बृधोहुवानास्तुतामन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु
पंत्रसं वसुदेवताके अर्थ १०८। २८। ८ आहुति. (ओं व्वरणस्योत्तं०) इत्सं व्वरणके अर्थ. १०८। २८। ८। (ओं
उतनोहिर्बुध्न्य०) इत्सं

आनेयपादके अर्थ. १०८। २८। ८। (ओं शिवोनामासि०) इत्सो अहिवुञ्च्यके अर्थ. १०८। २८। ८। (ओं पूषतयव्रते०) इस मन्त्र करके पूषा देवताके अर्थ १०८। २८। ८। आहुति देवै । पश्चात् (ओं यमायस्वाहा०) इत्यादि स्वाहा इदमैकपादाय १०८। २८। ८। ओंशिवोनामासि स्वधितिस्तेपितानमस्तेऽ अस्तुमामाहि ठं सीः । निवर्त्तयाम्यायुषे नाधाय प्रजननाय रायस्पोपाय सुप्रयजास्त्वा य सुर्वार्यायस्वाहा । इदमहिवुञ्च्याय । १०८। २८। ८। ओंपूषन्तवव्रते व्वयन्नरिष्येमक दाचन । स्तोतारस्त इहस्मासि स्वाहा । इदं पूष्णे १०८। २८। ८। इतिहुत्वा । ओंयमायस्वाहा इदंयमाय १ ओंयमैराजाय०इदं०२ओंमृत्यवे०इदं०३ओंअंतकाय०इद०४ओंवेवस्वताय०इदं०५ओंकालाय०इदं०६ओंसर्वभूतक्षायाय०इदं०७ओंऔडुंबराय०इदं०८ओंदध्राय०इदं०९ओंनीलाय०इदं०१०ओंपरमेष्ठिने०इदं०११ओंवृकोदराय०इदं०१२ओंचित्राय०इदं०१३ओंचित्रायस्वाहा इदं चित्रायुताय१४इतिचतुर्दशमाहुतीदद्यात् । ततोऽग्रहेभ्यश्चरुहोमंकृत्वा । ओं १४ आहुति ओर (ओं सूर्यायस्वाहा) इत्यादि ९ ग्रहोके अर्थ होम करके

(ओं अग्नयेभ्यो०) इस मंत्रकी १०८ तिलोंकी आहुति देवै । फिर, प्रधान देवोंकी उत्तर पूजन करके पायस (खीर)
 से (ओं अग्नयेस्विष्टकृते०) इस मंत्रसें स्विष्टकृत् होम करै । पश्चत्, वृत् करके (ओं भूःस्वाहा०) (ओं भुवःस्वाहा०)
 अग्नयेभ्योथग्नयेभ्यो० इत्यथोरमंत्रेण अष्टोत्तरशततिलहोमः कार्यः । तत वस्वादि प्रधानदे-
 वतानां उत्तरपूजनं कृत्वा । चरुणा ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्वाहा इदंवायवे० २
 स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् । तत आज्येन ओं भूः स्वाहा इदमग्नये० ओं भुवःस्वाहा इदंवायवे० ३
 ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ३ ओं त्वन्नोऽअग्ने० स्मत् स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां० ४ ओं सत्वन्नो
 ऽअग्ने० एधि स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां० ५ ओं अयाश्चान्ने० भेषज ठं० स्वाहा इदमग्नये० ६
 ओं येतेशतं० स्वर्काः स्वाहा इदंवरुणादिभ्यः० ७ ओं उदुत्तमं० अदितये स्वाहा इदं वरुणाय० ८
 ओं प्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये ९ इति नवाहुतयो हुत्वा । स्थंडिलपरित इंद्रादि दिग्पाले
 (ओं स्व स्वाहा०) यहै व्याहृति होम, और (ओं त्वन्नोऽअग्ने०) (ओं सत्वन्नोऽअग्ने०) (ओं अयाश्चान्ने०) (ओं
 येतेशत०) (ओं उदुत्तम०) इत्यादि वारुणहोम, और (ओं प्रजापतये०) यहै प्रजापति होम करै । फिर इन्द्रादिक

दिग्पालकों अर्थ. माप (उडद) चावल पकाके बाहरकर पूर्वादि दिशोंमें १० बलिदेवै । फिर होता यजमान सहित घृतसे पूगीफलादिक सहित सुवा भरके (ओं स्वाहाप्राणेभ्यः १ ओं दिवे स्वाहा० २) इन २ मंत्रों करके पूर्णाहुति होय करे। फिर सस्रव प्राशन (अर्थात् प्रोक्षणीमें सुबसे गेरा हुवा घृत, यजमानको चटाके) आचमन करा

भ्यो मापभक्त बलीन् दद्यात् । अथपूर्णाहुतिः । ओं स्वाहाप्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाग्रये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवेस्वाहा १ दिवेस्वाहा सूर्याय स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा चंद्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा वृक्षाय स्वाहा नाम्यै स्वाहा पूताय स्वाहाश्रुति हुत्वा॥सस्रवप्राशन० आचमनं च कृत्वा । पवित्राम्यां जलमानीय । तेन ओं सुमित्रियानऽआ पऽओषधयः संत्वितिमंत्रेण शिरः संमृज्य । ओं इधिमित्रियास्तस्मै संतु यो स्मान् द्वेष्टियंचवयं द्वि ष्म इतिप्रणितान्युब्जीकरणांअमौ पवित्रप्रतिपत्तिः । वहिरैशान्यांक्षेपणम्राब्रह्मणे सदक्षिणपूर्णे देवे और पवित्रीसे प्रणीताका जललेके (ओं सुमित्रियान०) इसमंत्रसे यजमानके शिरपरछिटादेवै (ओं इधिमित्रि- या०) इसकोपदके प्रणीतापात्र ऊयाकरे । पवित्री अग्निमेंहालदेवै (बर्हि) अग्निकेबाहरकरविछाई होई कुरा इमान-

कोणमें गौ और ब्रह्माके अर्थ पूर्ण पात्रदानकरै (ब्रह्मग्रांथिलोददेवै) उ ब्राह्मणभोजन करणैकासंकल्पलव । १५१
होता. पंचकलशोंका जललेकें यजमानके (ओंशन्नोमित्र० ओं अहानिशं० ओंशन्न इद्रापूषणा० ओंशन्नोदेवी० ओंदेव-

पात्रदानश्राद्धग्रंथिविमोकः। ततो षट्ब्राह्मणभोजनसंकल्पः। पंचकलशोदकेनयजमानस्यसप
रिवारस्याभिषेकः। तत्रमंत्राः। ओं शन्नोमित्रः० ओं अहानिशं० ओं शन्नइंद्रापूषणा० ओं श
न्नोदेवी० ओं देवस्यत्वा० ओं द्यौः शांतिः० । इति अभिषिच्य । पंचघटदानं । ओं अधासु
क० प्रेतस्य पंचक मरणोत्पन्न दुर्गति निवारणार्थं तज्जनितवंशारिष्टविनाशार्थं च इमानि पंच
घटानि स्वर्णप्रतिमावस्त्रफल्यज्ञोपवीत धान्यसहितानि वस्वादि देवतानि तद्देवताः प्रीतये
नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सुजे इति संकल्प्य ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्। तत आचा
र्यादिभ्यः पयस्विनीगां १ माहिषीं २ सप्त धान्यानि ३ सहिरण्यंतिलान्नं ४ सहिरण्यंधृतपात्रं च
स्यत्वा० ओंशैः शांति०) इन मंत्रोंसे अभिषेककरै और यजमान पंचघटोंकेदानका संकल्पलेकें ब्राह्मणोंकादेदेवै और
आचार्य आदि सबहिकों गौः १ माहिषी १ सप्तधान्य. १ सुवर्ण. १ तिल. १ घृत पात्र १

देवे । अन्यत्रात्मणोऽं भूयसी दक्षिणादेकं देवता अत्रिका विसर्जनकरे और हाथमें जललेकं (इसपंचकशांति कर्मकरेकं अमुक प्रेतको पंचक मरण दुर्गतिनिवृत्तहोवो और हमारे सकल अरिष्टदूरहोवो) ऐसैकहकं पृथिवी परत्यागदेवे । फिर (ओंयस्परमृत्या०) इसको पढके कर्मपूर्तिके अर्थ विष्णुका स्मरणकरे और सामग्री गळणोंकोदेके वृत्तमेंमुखदे-
 ५ दधात् । अन्येभ्योभूयसीदक्षिणादानं । ततो देवताग्निचविसृज्य । हस्तेजलमादाय । अनेन पंचकशांति कृतेन कर्मणा अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य पंचकजनितदुर्मरण दोषनिवृत्तिः ममगृहस कलदुरितोपशांतिरस्तु इति पठित्वा उत्सृजेत् । तत ओं यस्यसृत्या० इति पठित्वा । कर्मपूर्त्तिका मो विष्णुस्मरेत् शांत्युपकरणानि ब्राह्मणेभ्यो दत्वा । घृतेसुखावलोकनंकृत्वा स्नायात् । इति पंच कशांति प्रयोगः समाप्तः । इति श्रीवीकानेर राज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगर निवासिना पंडितगौ डश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धति खंडेप्रेतकल्पे अंत्येष्टिकर्मपद्धतिः समाप्ता । सके स्नानकरे । इति पंचकशांतिप्रकारः ॥ इति श्रीवीकानेरराज्यांतर्गत श्रीरत्नगढनगरनिवासिना गौड पंडित वैद्यवर श्री- चतुर्थीलालशर्मणा विरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धति खंडे प्रेत कल्पे अंत्येष्टि कर्मपद्धति भाषाटीका सहितासमाप्ता ।

अथ अन्त्येष्टि श्राद्धप्रकाशस्थविषयाणां अनुक्रमणिका ।

विषयाः	पृष्ठ.	विषयाः	पृष्ठ	विषयाः	पृष्ठ.
आसन्नमरणेकृत्यं	१	विश्रामे भूतनाम्ना	६	अग्निदानमन्त्राः	८
विष्णुजनपूर्वकप्रायश्चित्तम्	१	मृतद्विजगृध्रानोनयेयुर्नस्पृशेयुश्च	६	अजलिदानप्रकारः	९
दशदानानि	२	द्विजानाअग्निवृतादिगूद्रादिदानाय	६	अजलिदानऋजुकुशाएवर्नद्विगुणाः	१०
वैतरणीधेनुदानविधिः	२	ननिपिहं	६	इतिहासः	११
महाष्टौदानानि	३	स्वगृहमृतेविप्रादीनांनगरद्वार	६	ज्ञातिनियमाः	१२
प्राणोत्क्रमणसमयकृत्य	४	विचारः	७	क्षीरोदकदानं	१२
प्राणोत्क्रमणानंतरकर्म	४	चितास्थाने वायुनाम्नापिंडः	७	प्रथमदिनमारम्यदशाहंतिकर्म	१२
षट्पिंडाः तत्प्रयोगश्च	५	चितायोग्यभूमिशोधनप्रकारः	७	अस्थिसंचयनकालाः	१२
मृत्युम्यानशेवनाम्ना पिंडदानं	५	ऋव्यादाऽग्निस्थापनम्	७	अस्थिसंचयनेनिर्निपद्धतिधिवाराः	१३
द्वारदेशो पांथनिमित्तकं	६	आज्यहोमः	८	अस्थिसंचयनिमित्तकैकोद्दिष्ट	१३
चत्वरं क्षेत्रनिमित्तकं	६	शवहस्तेसाधकनाम्नापिंडदानं	८	इदमेकोद्दिष्टममत्रंकार्य	१४

विषयाः	पृष्ठ	विषयाः	पृष्ठ	विषयाः	पृष्ठ
श्मशानयासिदेवानां वलिदानं	१६	धेनुदानम्	३३	ऊनमासिकसान्नोदकुंभदानम्	७५
अस्त्रिसंनयकरणप्रकारः	१७	एकादशश्राद्धम्	३५	वृद्धिप्राप्तौ एकस्मिन्नेव दिने पंचदशसान्नोदकुंभदान प्रकारः	७६
चिताग्ना नोपिडाग्रयः कुंभाध	१७	आथाद्रिपोडशश्राद्धपद्धतिः	३५	ऊनमासिकादिश्राद्धेवर्ज्यकालाः	७६
मेगायामस्थिक्षेपणप्रकारः	१८	शय्यादानम्	४५	ऊनमासिकादिपंचदशश्राद्धनिमित्तकोदिष्टपद्धतिः	७७
दशगात्रश्राद्धप्रयोगः	१९	पटदानम्	४७	सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धपद्धतिः	८६
द्वितीयादिदिनेषु विशेषता	२१	पष्टुत्तरशतत्रयपिंडदानम्	४७	पंचकमरणविधानम्	९६
आशौचांत्यदिनकर्म	२३	पष्टुत्तरशतत्रयांजलिदानम्	५०	पंचकशांतिपद्धतिः	९६
एकादशश्राद्धदिनकृत्यं	२४	सपिंडनश्राद्धपद्धतिः	५०	ग्रंथ समाप्तिः	
वृषोत्सर्गपद्धतिः	२४	अर्घ्यपात्रमेलनप्रकारः	५७		
कुशकंडिका	२४	पिंडमेलनप्रकारः	६६		
होमः	२५	मातृपिंडमेलने विशेषः	६७		
वृषांकनप्रकारः	३१	गोदानपद्धतिः	७२		

नित्यकर्म प्रयोगमाला तैयारहै किं० ६ आना

निवेदन.

महाशय पाठकचूद इस पुस्तकमें ६२ विषय नीचे लिखे मुजबहै सो आपको लेनेसे नित्यनैमादिक करनेमें अनेक पुस्तक सग्रह न करके यह एकही उपयोगमे आवेगी. आप लोगोंके सुगतार्थही पंडितजी श्रीचतुर्थीलालजीने बनाई है. और इनमहाशयने कुछ लाभकेवास्ते ऐसा ऊबोग न कियाहै इनका यही मनोर्थ है कि ब्रह्मकुलमें धर्मकी वृद्धि होवे.

मंगलाचरणम्, ब्राह्म्यमुहूर्तकथनम्, अत्रस्वापेप्रायश्चित्तं, प्रातःस्मरणम्, धर्मचिंतनम्, पुण्यजनस्मरणम्, प्रातदर्शनाहीःपदार्थाः, विष्णुत्रोत्सर्गविधिः, आचमनम्, दन्तधावनविधिः, कातीयस्नानप्रयोगः, तीर्थप्रार्थना, स्नानांगतर्पणम्, धौतवस्त्रधारणम्, भस्मधारणंच, संध्याप्रयोगः, ब्रह्मयज्ञः, विभ्राह्मसूक्तम्, पुरुषसूक्तम्, शिवसंकल्पाऽध्यायः, मण्डलब्राह्मणसूक्तम्, कातीयतर्पणप्रयोगः, पंचदेवपूजाप्रयोगः, वैश्वदेवप्रयोगः, वैश्वदेवमण्डलम्, नित्यश्राद्धम्, भोजनविधिः, शयनप्रकारः, दारोपगमनम्, एषामकरणेदोषः, पार्थिवपूजनम्, पञ्चायतनआरतिनिरांज. महापुरुषविद्यास्तोत्रम्, रुद्राऽभिषेकविधिः, रुद्रपंचमोऽध्याय, गायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः, ३६ बाकीके २६ विषय स्थाना भावसे लिखे गये नहीं.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-पंडित श्रीधर शिवलाल "ज्ञानसागर" छापखाना-मुंबई.

इति अन्त्येष्टि श्राद्ध प्रकाशः

भाषाटीका सहितः